वर्ष 14, अंक 50-51, अश्विन - फाल्गुन 2079 (अक्टूबर 2021 - मार्च 2022)(संयुक्तांक)

20/- टाका

अर्धशतकीय अंक

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक

बीहनि कथा विशेषांक

गौरवशाली 30 वर्ष

मिथिलाक धिया

प्रिया मल्लिक

साक्षात्कार

अनिल मिश्रा

आवरण कथा

पंजी, पंजीकार आ पंजीक संरक्षण

Price : India Rs. 20.00, Nepal Rs.30.00, Europe € 2.00, UK £ 1.5, US $ 3.00

मिथिलांगन पत्रिकाक प्रकाशित अंक



मिथिलांगनक प्रकाशित स्मारिका

2007, 2008, 2010, 2012, 2014, 2017

वर्ष : 14, अंक : 50-51, अश्विन - फाल्गुन 2079, अक्टुबर 2021 - मार्च 2022 (संयुक्तांक)



मुकेश दत्त
संपादक

अतीतसँ भविष्यक बाट : गौरवशाली तीस वरष

श्रद्धेय पाठकवृन्द
सादर प्रणाम

मिथिलांगन पत्रिकाक पचासम पुष्प अपने लोकनिक आगाँ राखैत अति गौरवान्वित प्रतीत भऽ रहल अछि। अहाँ सभहक सहभागी भेलासँ ई यात्रा सदिखन सुगम बनल रहल। मिथिलांगन परिवार आइ अपन तीसम वर्षक सुखद यात्रा दिस अग्रसर भऽ गेल अछि। अपन नाम, समर्पण आ संकल्पक अनुरूपेँ काज करैत मिथिलांगनक एहि यात्रामे कतेको तरहक उतार-चढ़ाव आओल आ मधुर-तीत संग सफल-सुखद अनुभव रहल। एतय पत्रिका प्रकाशनक यात्राक संग एहि सम्पूर्ण यात्राक एकटा सिंहावलोकन केनाय आवश्यक बुझना जाइत अछि।

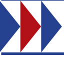
16 फरवरी 1992, रविदिन वसंत ऋतुक सुहावन मौसममे किछु उत्साही मैथिलभाषी युवक अपन अभिज्ञ अग्रजक संग राजधानीक जंतर-मंतर पर मैथिलीभाषी, मिथिलावासी अओर मिथिलाक साहित्यिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक संवर्द्धन-संरक्षण हेतु एकत्र भेलाह। वरिष्ठ मैथिल कवि-साहित्यकार श्री शारदा नन्द दास 'परिमल' जीक अध्यक्षतामे वरिष्ठ मैथिल पत्रकार स्व. सतीश चन्द्र दास एहि मूर्त रूपकेँ नाम देलैन्ह **'मिथिलांगन'**। मिथिलांगन नामक स्वीकृति दैत आदरणीय परिमलजी कहलैन्ह जे 'मिथिलांगन' शब्द नाक आ गलासँ बाजल जाइत अछि अओर नाकसँ स्वर निकलयवला नाम मधुर होइत अछि। शारदा नन्द जीक बाद ग्रुप कैन्टन स्व. राम कुमार मल्लिक जी आ तदुपरांत एखन धरि श्री कमलेश कुमार दास जी एकर ध्वजवाहक बनल छथि। आब एकर काजक चर्चा करीः-

साहित्यिक काज :- साहित्यिक संवर्द्धन हेतु मिथिलांगन पहिले (1995मे) हस्तलिखित रूपमे 'मिथिलांगन गृह पत्रिका' आ फेर 1997मे पहिल बेर प्रेससँ छपि कऽ आयल डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिद्म' पर एकटा अप्रत्याशित विशेषांक। ओकर बाद 2007मे डेढ़ दशक यात्रा पर आयल बहुपयोगी स्मारिका आ ओकर अगिले वर्षसँ मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन शुरू भऽ गेल जे अखन धरि अनवरत चलि रहल अछि। एहि मध्य 2008, 2010, 2012, 2014, 2017मे स्मारिकाक संग कतेको रास पोथी जाहिमे 'मैथिली शुभ संस्कार विधि-विधान व गीत' (तेसर संस्करण), 'मैथिली गीता', 'अहीं जकाँ', 'मोहपाश', 'नागफाँस' आदिक प्रकाशन मिथिलांगनक साहित्यिक काजक साक्षी बनल।

एकर साहित्यिक कर्ममे एकटा आर कड़ी जुड़ल 2011मे आयोजित शुद्ध रूपसँ मैथिली कवि गोष्ठी जे पुनः 2012मे सेहो भेल। होली मिलनक हास्य कवि गोष्ठी, साहित्यिक गोष्ठी, बाबू ब्रह्मदेव लाल दास व्याख्यान माला, साहित्यिक-सामाजिक परिचर्चा आ मैथिली रचनाकार लोकनिसँ भेटक आयोजन एकर साहित्यिक वातावरणकेँ सदति संपुष्ट करैत रहल। अओर आशा करैत अछि जे भविष्योमे रचनाकार लोकनिक सहयोग एकर साहित्यिक कर्मकेँ उत्तरोत्तर श्रीवृद्धि करैत रहत। एहि कोरोना कालमे डिजिटल माध्यमे सेहो साहित्यिक परिचर्चाक आयोजन कएल गेल, जाहिमे मैथिलीक मूर्धन्य साहित्यकार लोकनि अपन विचारसँ युवापीढ़ीकेँ मार्गदर्शन केलैन्ह।

सांस्कृतिक काज :- साहित्यिक संवर्द्धनक संग **मिथिलांगन** मैथिल समाजमे मिथिलाक सांस्कृतिक अलख जगाबय केर काज सेहो करैत रहल अछि। एहि क्रममे अगस्त 1993मे पहिल बेर राजधानी दिल्लीमे **'आर्ट्स ऑफ मिथिला'** नामसँ कला प्रदर्शनीक आयोजन कएल गेल। जाहिमे मिथिलामे प्रचलित अधिकांश कलाक नमूना राखल गेल छल, जकर समीक्षात्मक चर्चा तात्कालीन सब प्रमुख दैनिक अखबार केने छल। पुनः 2012मे सेहो दू दिनक एकटा भव्य प्रदर्शनीक आयोजन कएलक। संगहिं संग समय-समय पर मिथिलांगन नवतुरिया सभ लेल एकर वर्कशॉक आयोजन सेहो करैत आबि रहल अछि, जाहिमे एहि क्षेत्रक जानल-मानल ख्याति प्राप्त कला मर्मज्ञ अपन कला ज्ञानसँ नवतुरियाकेँ अभिसिंचित करैत रहलाह अछि।





संपादकीय

सांस्कृतिक काज होए आ मिथिलांगनक वार्षिकोत्सव सरस्वती पूजाक चर्च नञि करी तऽ छुछ सन लागत। नेना-भूटकाकेँ तऽ एकर इन्तजार साल भरिसँ रहैत अछि, कारण एहि मंच पर ओ अपन मातृभाषामे अपन प्रस्तुति दऽ अपनाकेँ गौरावान्वित महसुस करैत छथि।

तहिना मिथिलांगनक संगीतमय नाट्य प्रस्तुति एकर पहचान बनि चुकल अछि। हमरा कहैत गर्व महसुस भऽ रहल अछि जे दिल्ली महानगरमे पहिल मैथिली नाटक करबाक श्रेय **मिथिलांगन**केँ जाइत अछि, एहि लेल निर्देशक संजय चौधरी जी साधुवादक पात्र छथि। आइ संजय-सुन्दरमक जोड़ि दर्जनो संगीतमय नाट्य प्रस्तुति मिथिलांगनक मंचसँ कऽ चुकल छथि, जकर देखा-देखी आनो संस्था अपन रंगमंचीय प्रस्तुतिकेँ संगीतमय करय लगलाह। एहि कोरोना कालमे आभासी ढ़गसँ सेहो एकर मंचन कएल जा चुकल अछि।

डिजिटल माध्यमे **मिथिलांगन सुर संग्राम**क आयोजन एकर सांस्कृतिक कर्मकेँ अओर ऊँच कऽ देलक, एहिमे देश-विदेशसँ कतेको प्रतिभागी भाग लेने छलीह। एहि कार्यक्रमक धूम विश्वपटल पर भेल आ मिथिलांगनक पसार देश-विदेश धरि भऽ गेल। पूर्वमे मिथिलांगन कवि-गीतकार स्व. ब्रह्मदेव लाल दास जीक जे संस्था गीत **मिथिलांगन गान**क रचियता सेहो छथि केर किछु बिछल मैथिली गीतक सीडी आ कैसेट सेहो निकालि चुकल अछि जे मैथिल समाजमे खुब लोकप्रिय भेल।

सामाजिक काज :- अपन नामक अनुरूपेँ मिथिलांगन साहित्यिक, सांस्कृतिक संग सामाजिक काजमे सेहो पाछाँ नञि रहल। जकर उदाहरण एहि कोरोना कालमे बाँटल गेल एकरा द्वारा जरूरतमंद केर सहायतार्थ सामग्री अछि। एहिसँ पूर्वोमे मिथिलांगन अपन अति सीमित संसाधन द्वारा बाढ़ि, भुकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाक समय पीड़ित बन्धु-बान्धवकेँ सहायतार्थ सदति ठाढ़ रहल, सदिखन हुनक मदति लेल तत्पर रहल। कतेको बेर स्वास्थ्य परीक्षण हेतु चिकित्सा शिविर, तीर्थ यात्रा, गर्मी छुट्टीमे बच्चा-बुच्ची लेल कार्यशाला, खेल प्रतियोगिता, विभिन्न विषयक कार्यशाला आदिक आयोजन एकर सामाजिक काजक साक्षी रहल अछि। ओजस्वी सचिव श्री निर्भय कर्णजीक कुशल नेतृत्वमे कर्मठ आ ऊर्जावान कार्यकर्त्ता लोकनि सदति एहि पुनित काज लेल तत्पर रहैत छथि। काज तऽ बहुतो अछि मुदा अखन एतबे...।

मिथिलांगनक अखन धरिक यात्रामे हमरा याद आबैत छथि मिथिलांगनक पूर्व सचिव ब्रह्मलीन अभय कुमार लाल दासजी आ हुनक कहल शब्द, "डेगा-डेगी चलैत-चलैत मिथिलांगन आब किशोरावस्था पार कऽ रहल अछि। नवतुरियाकेँ कार्यभार देनाय ओहिना आवयश्यक अछि जेना शरीरमे नव शोणित।" एकर प्रत्यक्ष उदाहरण हम अपनाकेँ मानैत छी, जे ओ हमरा सन अल्पज्ञ, नौसिखियाकेँ एहन महत्वपूर्ण दायित्व दऽ सदिखन प्रोत्साहन आ मार्गदर्शन करैत रहलाह।

पाठकवृन्द, मिथिलांगनक ई तीसम वर्ष चलि रहल अछि। कहैत हर्षक अनुभूति भऽ रहल अछि जे मिथिलांगन पत्रिकाकक अगिला अंक **मैथिल व्यक्तित्व** विशेष रहत जाहिमे विभिन्न क्षेत्रक चुनल तीस गोट मैथिल व्यक्तित्वक चाहे ओ कोनो क्षेत्र (साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक)सँ होइथ केर संक्षित्प परिचय प्रकाशित करत। अपने लोकनिकसँ आग्रह जे एहि अंककेँ सृजनीय बनेबा लेल अपन सहभागिता प्रदान करैत अपन मैथिल समाजमे छिड़ियाओल गुणी व्यक्तित्वकेँ बिछि एहि पत्रिकाक माध्यमे हुनका समाजक आगाँ आनि। एहि मंगलकामनाक संग-

अपनेक

मुकेश दत्त



व्यवस्थापन अओर विपणन कार्यालय : आदर्श इंटरप्राइजेज, 4393/4, तुलसीदास स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

फोन : (011) 23246131/32, 41009940, फैक्स : 23246130

ई-मेल : adarshbooks@vsnl.com

संपादक : मुकेश दत्त

(समस्त संपादकीय कार्य पूर्णरूपेण अवैतनिक)

आवरण डिजाइन आ सज्जा : संजीव कुमार 'बिट्टू'

मिथिलांगन मे छपल रचना/लेख इत्यादि मे व्यक्त विचार लेखक लोकनिक निजी विचार छैन्ह आ ई आवश्यक नहि जे ओ मिथिलांगनक नीति वा विचार इत्यादि कैं प्रतिबिम्बित करय।

सब विवादक निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली स्थित सक्षम न्यायालय आ फोरम मे कएल जायत।

मिथिलांगन (पंजी.) संस्थाक दिससँ अओर लेल अभय कुमार लाल दास द्वारा ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078, सँ प्रकाशित अओर आनन्द संस (इण्डिया), सी-87, गणेश नगर (पांडव नगर कॉम्पलेक्स), दिल्ली-92, मे मुद्रित।

सम्पर्कः 9910952191 (संपादकीय)

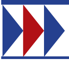
9312301160, 9810450229 (प्रकाशकीय)

ईमेल : **mithilangan@gmail.com**

वेबसाइट : **www.mithilangan.org**

शुल्क : भारत मे एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्रा (डाक खर्च सहित)।





अनुक्रम



मान्यवर,

जाहि पाठक लोकनिक एक वर्षीय सदस्यता समाप्त भऽ रहल छैन्ह वा नव सदस्यता लेबऽ चाहैत छथि, हुनका लोकनिसँ सादर अनुरोध जे अपन सदस्यताक नवीनीकरण वा नव सदस्यता लेबाक हेतु 100 टाका (डाक खर्च सहित) व्यक्तिगत रूपेँ, मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट वा नगद आदिक माध्यमसँ मिथिलांगन कार्यालयक पता पर अविलम्ब पठा दी। मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट आदि MITHILANGAN नामसँ बनाओल आ दिल्लीमे देय हेबाक चाही।

- पत्रिका प्रसार व्यवस्थापक, मिथिलांगन

मिथिलांगन : तीस बरष, तीन पीढ़ी



❑ अरविंद चन्द्र दास

16 फरवरी 1992, रविदिन मिथिला आ मैथिली संस्कृतिक इतिहासमे एकटा विलक्षण स्मृति, जाहि दिन दिल्लीक चर्चित जन्तर-मंतर प्रांगणक हरिआयल सघन घास पर किछु उत्साही आ प्रवासी मैथिल युवक बैसि मैथिली भाषा, साहित्य, मैथिल समाज आ मैथिल संस्कृतिक उत्थान, ओकर सर्वांगिण विकास आ नवजागरण हेतु मैथिली भाषाक दिल्लीमे जमीनी स्तर पर स्थापित करवा हेतु गहन विचार-विमर्शमे लागल छलाह। ओहि विचार मंथनमे 'मिथिला अमृतघट'क रूपमे निकसल जे सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक संस्थाक रूप धारण केलक, नाम पड़ल 'मिथिलांगन'। दिल्लीक आंगनमे मिथिला, जकर कल्पना मात्र करितहिं एकटा विलक्षण आ सुखद अनुभूति होइत अछि, माने मिथिला केर आंगन।

एहि मिथिलांगन मंचसँ कतेको मैथिलकेँ कतेको रास आश जूड़ल छल। एहि मिथिलांगनमे आबि कोनो मैथिल अपन मैथिल संस्कृतिकेँ सम्पूर्ण दर्शन कऽ सकैत एहिक लेल सतत् प्रयत्न प्रारम्भ भेल। एहि तरहेँ मिथिलांगनक विशाल वटवृक्ष तैयार भऽ आइ अपन तीसम बरख पुर्ण कऽ रहल अछि। मिथिलांगन अपन गाम-घरसँ दूर दिल्ली महानगरमे आयल समस्त मिथिलावासी लोककेँ अपन भाषा, संस्कृति, कला आ साहित्यक उन्नयन हेतु एकटा अंगना दैत आबि रहल अछि। जकर अपन प्रतीक चिन्ह, अपन गान, अपन नामक सरकारी पंजीकरण, पत्रिका प्रकाशन, सामाजिक सहायता, आर्थिक सहायता, व्यवहारिक सहायता, दृष्टि आ जीवनदायिनी व्यवस्थामे सहयोग, संकटकालीन सहायता, जाहिमे, उत्तराखण्ड आ उत्तर प्रदेशमे भूकम्प सहायता, बिहारमे बाढ़िक विभिषिकामे सहायता, आश्रयदायिनी व्यवस्था आ करोना कालसंकटमे मिथिलांगन द्वारा अत्यन्त जरूरमंदकेँ घर-घर भोजन व्यवस्था शामिल अछि, मिथिलांगनक यात्रवृत्तांत पृष्ठमे जुड़ैत चलि गेल।

मिथिलांगनक एहि तीस बरखक यात्रामे जे एकर साक्षी अछि ओहिमे मिथिलांगनक पहिल संकल्प एकर पत्रिका प्रकाशन छल, जे एहि अनुपम यात्रामे मिथिलांगनक संगे अछि, प्रसन्नता अछि जे हमर संकल्प आइ पचासम अंकक रूपमे प्रकाशित भऽ रहल अछि। एहि लेल मिथिलांगन परिवार समस्त लेखक मंडल, मिथिलांगन पत्रिकाक संचालन मंडल, एहि पत्रिकाकेँ विश्वव्यापी लोकप्रियता दियौनिहार सुधि पाठकगण आ प्रकाशनमे आर्थिक सहयोग देनिहार समस्त मिथिलांगन प्रेमीजनकेँ हृदयसँ आभार व्यक्त करैत रहत।

अपन वार्षिक कार्यक्रम 'सरस्वती पूजा' जे तीस बरखसँ मिथिलांगनक मुख्य कार्यक्रम अछि, बच्चा-बुतरू, महिला, सांस्कृतिक कलाकार आ मैथिल समाजक लेल लोकप्रियताक साक्षी अछि। एहिठाम एकटा बातक विशेष उल्लेख करब आवश्यक अछि जे एहि महान यात्रामे एकर रंगमंच आ नाटक प्रभाग मिथिला समाजमे मिथिलांगन पहचानकेँ बनेबामे अहम रहल अछि।

युग बदलैत गेल कारवां बढ़ैत गेल आ यात्राक तीसम पड़ावसँ आब नव रूपमे आगाँ बढ़ि रहल अछि, जाहिमे आभाषी संस्कृतिक उदय भेल। कालचक्रक एहि महासंग्राममे मिथिलांगन अपन सुर-ताल, साहित्य, कला-संस्कृति, शुभसंस्कारकेँ अपना तरीकासँ संजोइग आगाँ बढ़ैत रहय, निरन्तर बढ़ैत रहय आ मिथिलांगनक दर्शन मैथिल जन-जन धरि निरंतर पहुँचैत रहय, एहिक अनन्त मंगलकामना।





शारदा नन्द दास 'परिमल'
(संस्थापक अध्यक्ष, मिथिलांगन)

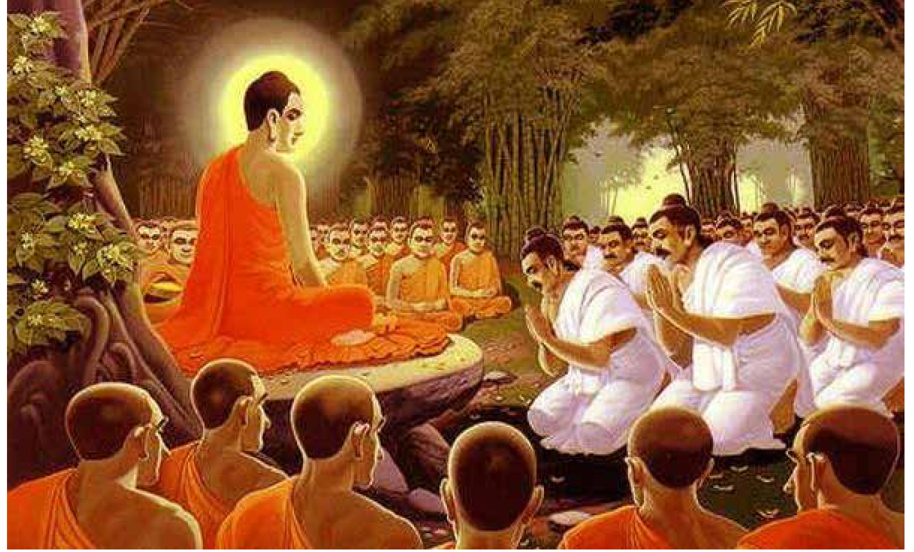
अछि ई कृपा सुधि ईशक भेल,
'मिथिलांगन' वरष तीसक भेल।
'मिथिलालोक' छल जे पटना मे,
दिल्ली पहुँचि 'मिथिलांगन' भेल।
पटना सँ अएलहुँ दिल्ली हम तैं
'मिथिलालोक' भेल 'मिथिलांगन'
परिदर्शित मिथिलाक अस्मिता
करइछ जेना कर मे कंगन।
सहज समेटति अछि परिधि मे,
एकर सुव्यंजित धरा-गगन।
स्वतः परिष्कृत भऽ कऽ बनल अछि
'मिथिलालोक' सँ 'मिथिलांगन'
से स्थापित भऽ दिल्ली मे,
मैथिलीक झंकार भरय।
सांस्कृतिक उदात्त गीति स्वन,
हृद्वीणा केर तार भरय।
सिरजि सुधन्य अतः छथि 'परिमल',
आयु छियासी पर अटकल।
पड़ल प्रतिक्षा मे अवसानक,
गगन निहारि रहल कलबल।
धन्य न तैं कम छथि मुकेशो,
दृढ़ स्कन्ध कए धारने भार,
भारति सरस्वतिक आर्शिवाद,
सँ करता निश्चय बेड़ा पार।

(पटनामे हम 'मिथिलालोक'क स्थापना कएने रहि, परञ्च दिल्लीमे आबि गेला पर 'मिथिलांगन'क शुभारम्भ कएल, जे आब कालक्रमे विशाल वट वृक्ष भऽ गेल अछि। मिथिला-मैथिलक विषयक बहु विधि विस्तार आ प्रसार पाबि गेल अछि।)

आध्यात्मिक चिंतन



❑ डॉ. जितेंद्र लाल दास



सनातन धर्मंमे सत्संग आ नाम केर विशेष महत्व अछि। सत्कर्म, सच्चर्चा सचिंतन अओर सत्संग चारू उत्तरोत्तर श्रेष्ठ साधन मानल जाइत अछि। जीवन्मुक्त, तत्वज्ञ, भगवत्प्रेमी, संतक संग (सानिध्य) वास्तवमे सत्संग कहल जाइत अछि। एकर अतिरिक्त सच्चर्चा सेहो, मुदा ओ सत्संग नहि। वर्तमानमे जनसाधारण सच्चर्चाकेँ सत्संग मानि संतोष करैत छथि। संतक अभिमत छैन्ह जे जनमानस चर्च तऽ सत् केर करैत छथि, परञ्च संग असत् केर करैत छथि। तखन कहैत छथि जे सत्संगसँ कोनो लाभ नञि होइत अछि। जखन की सत्संगसँ कोनो लाभ नञि होए से असंभव।

अनुभव अनुभवी संतजन केर वाणीमे विशेष शक्ति होइत छैन्ह। हुनक बाणी गोली भरल बंदूकक समान होइत अछि जे आवाजक संग-संग मारि सेहो करैत अछि। मुदा रटल- रटाओल वक्ताक वाणी बिनु गोलीक बंदूक जकाँ होइत अछि, जे मात्र आवाज निकालि शांत भऽ जाइत अछि। उदाहरणार्थ गोस्वामी तुलसीदास महाराज जीक रामायण लिखलाक उपरान्त कतेको कविगण कतेको प्रकारसँ रामायणक रचना कैलैन्ह, परञ्च ओ सभ भभक केर बाद शांत भऽ गेलाह। मुदा गोस्वामी तुलसीदास जीक रामायण अखनो उत्तरोत्तर विस्तारित भऽ रहल अछि।



मनुष्यक संबंध ईश्वरक संग हेबाक चाही, संसारक संग नञि। आ जकर संबंध हमरा संग नञि ओकरा त्यागब अनिवार्य। मूल केर त्यागी। हम शरीर छी, शरीर हमर अछि, हमरा लेल अछि, ई काल्पनिक संबंध मात्र अछि, वास्तविक नञि! शरीर निरंतर हमरासँ अलग भऽ रहल अछि। बाल्यकाल मे जे शरीर छल से आब नञि, मुदा हम ओहिना छी! शरीर बदलि गेल, मुदा स्वयं नञि! एकरा आदर करी तऽ जीवन्मुक्त भऽ जाएब। जे अप्पन नञि, ओकरा अप्पन मानब विश्वासघात होएत। शरीर केर निरंतर वियोग भऽ रहल।

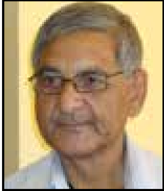
जीव भगवानसँ विमुख भेल अलग नञि। ओ संसारक सम्मुख अछि, संग नञि। संसारसँ मात्र सेवाक लेल संबंध राखी। संसारकेँ अपना अओर अपना लेल नञि मानी। कोनो काज अपन लेल नै दोसराक सेवार्थ करू। भजन, ध्यान, योग आदि सेहो अपना लेल नञि करू। 'मैं'पन जीवनक स्वरूप नहि। 'मैं' (अहम्) अलग आ स्वरूप सेहो अलग होइत अछि। 'मैं' केर कारण 'हूँ' होइत अछि। 'मैं' नञि रहय तऽ 'हूँ' नञि रहत, प्रत्युत 'हैं' रहत। 'मैं' जड़ होइत अछि आ 'हूँ' चेतन। परमात्मा आनंद स्वरूप छथि अओर संसार सुख-दुःख स्वरूप। दुःख केर संग जे सुख होइत अछि ओ दुःखक कारण होइत अछि। सुखभोगीकेँ दुःख भोगैये पड़ैत छैन्ह। भोगी मनुष्य सुख-दुःख दूनू भोगैत छथि, मुदा योगी सुख-दुःखकेँ नञि भोगैत छथि। हमर शरीर सुख-दुःख भोगवाक निमित्त नहि अपितु दूनूसँ बेसी आनंद प्राप्ति हेतु अछि।

सुखदायी परिस्थिति सेवा करबाक हेतु होइत अछि। जे बड़प्पन अछि दोसरक देल अछि। सुख भोगब अर्थात् दुःख के निमंत्रण देब। दुखदायी परिस्थिति सुख केर चाहत मिटेबाक हेतु होइत अछि। दोसराक दुःखसँ दुःखी भेलासँ दुःख मेटा जाइत अछि आ दोसराक सुखसँ सुखी भेलासँ हम सुखी भऽ जाइत छी।

निष्कर्षतः कार्य स्वयं करू आ आराम दोसराकेँ दियौक! भगवानसँ मनुष्यकेँ विशेष अधिकार प्राप्त छैन्ह, एकरा भगवानक पक्षपात बुझू। ओ मनुष्यकेँ दुनिया मात्र केर उद्धारक अधिकार देलैन्ह अछि! तैँ दू बातक ध्यान राखब - परमात्मामे तल्लीनता अओर बुराई केर सर्वथा परित्याग। सबहिक सार परमात्मा छथि। जेना वृक्षक मूलमे जल देलासँ संपूर्ण वृक्षकेँ तृप्ति भेटैत अछि, तहिना परमात्मामे तल्लीन भेलासँ दुनिया मात्र केर जतबा हित होइत अछि, ओतबा करबासँ नहि। ॐ श्री हरि...



कलियुग कें गारि किएक?



❑ सुरेन्द्र 'शैल'

कलियुगक प्रति ई धारणा लोकक मस्तिष्कमे बैसि गेल अछि जे कोनो गलत काम एहि युगेक प्रभावसँ होइछ। कलियुगहा बेटा, कलियुगही बेटीक संग माए, बाप, भाए, बहिन, मित्र वा आन किनको द्वारा प्रतिपादित प्रतिकूल (मान्य परम्परासँ) कार्य पर हुनका पदक संग कलियुगक संबन्ध जोड़ि देल जाइछ? प्रश्न उठैछ जे की सरिपहुँ कलियुग अनर्थक मूल अछि? एहि सन्दर्भमे हमरा जनैत आन कोनो ग्रंथसँ गीताक उदाहरण बेशी प्रामाणिक होयत।

गीताक चारिम अध्यायक सातम श्लोक मे भगवान कहलनि अछि :-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।

अर्थात् जखन-जखन धर्मक हानि आ अधर्मक विकास होइत अछि तखन-तखन अधर्मक विनाश आ धर्मक पुनर्स्थापना हेतु भगवानक अवतरण होइत अछि।

गीताक संबन्धमे कहल गेल अछि जे ई भगवानक मुँहसँ निकसल उपदेश अछि। एहि पर सन्देह, भगवान पर सन्देह होयत। भगवानक वाणी अकाट्य अछि। तैँ एहि सन्दर्भमे एकटा प्रश्न मनकेँ हौंड़ रहल अछि? निराकरणक अपेक्षा राखैत सुधीजनक समक्ष हमर ई प्रश्न अछि जे भगवानक अवतार कोन-कोन युगमे भेल? उत्तर स्पष्ट अछि - द्वापर, त्रेता आ सतयुगमे। कलियुगमे आइ धरि भगवानक अवतार नञि भेल अछि। जौँ कोनो तथाकथित वा स्वयंभू भगवान जन्मो लेलाह तऽ वथाने सोधय लेल। हुनक जन्मसँ पृथ्वी पर अधर्मक विनाश नञि विकासेटा भेल अछि।

हमरा जनैत ओहि तीनू युग (द्वापर, त्रेता, सतयुग)मे आर्य समाज अधोगतिक ओहि बिन्दु (boiling point) पर पहुँच गेल छल जतय भगवानकेँ अवतार लेमय पड़लैन्ह। कलियुगमे हमरा सभ पतनक ओहि बिन्दु पर नञि पहुँचलहुँ अछि तैँ भगवानक अवतार एखन धरि नञि भेल अछि। कलियुगक एखुनका अवधि ओहि तीनू युगक ओ अवधि जाहिमे भगवान अवतार लेलैन्ह ताहिसँ उत्तम अछि। जौँ ओहि तीनू युगक अपेक्षा एहि युगक भूत वा वर्त्तमान बेसि पतित रहैत तऽ एहि पृथ्वीक भार उतारबा लेल भगवानक अवतार भऽ गेल रहैत। कामना करू जे एतेक पतित नञि होए जे भगवान अवतरित होइथ आ पुनः महाभारत वा महाप्रलय होए।

हमरा होइछ जे आजुक लोक भगवान वा हुनक कथ्यक प्रति बिनु कोनो आस्था आ विश्वास रखने निरन्तर गीताक उपदेशकेँ उपेक्षा कऽ रहल छथि। कलियुग पर एकतरफा दोष थोपि अपन कर्तव्यकेँ इतिश्री मानि बैसि जाइत छथि। ई निश्चित रूपेँ पलायनवादिता छी।

तैँ उठू, चेतू आ अपन कर्तव्यक पथ पर निष्ठाभावेँ अग्रसर होऊ। युगकेँ परतारिकेँ अहाँक कल्याण किन्नहुँ नञि होयत।



पंजी, पंजीकार का पंजीक संरक्षण

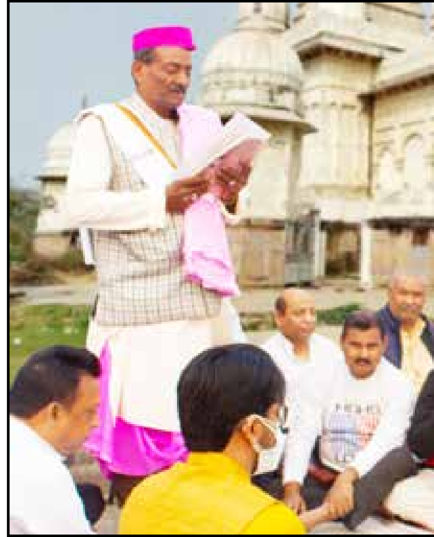


❑ भैरव लाल दास

पंजी आ पंजीकारसँ मिथिलाक कोनो घर अपरिचित नञि अछि। नेनपनेसँ पंजीकारक सेवा करबाक मौका भेटैत रहल। हमर गामसँ सिमरा गाम बेसी दूर नञि छल। ताहि समय मे सिमराक सर्वश्री श्याम सुंदर पंजीकार (पंडितजी), वित्तो पंजीकार, सरयुग पंजीकार आदि गाम पर आबैत रहैत छलाह। जाहि दिन कोनो पंजीकार आबि गेलाह तऽ घरमे उत्सव सन माहौल बनि जाईत छल। पंजीकारकेँ अति विशिष्ट अतिथिक सम्मान देल जाईत रहैन्ह आ जाईत काल हुनका विदाई सेहो भेटैत रहैन्ह। कोनो सिद्धान्तक अवसर पर एकसँ बेसी पंजीकारक उपस्थिति देखबामे आबैत छल। पाग पहिरने आ दोपटा ओढ़ने पंजीकार आन लोकसँ फराक लागैत छलाह। मुदा अपन विदाईक लेल ताहि समयमे सेहो हिज्जो करैत पंजीकार लोकनिकेँ देखैत रही।

बादक समयमे सामान्य कायस्थ परिवार मे पंजीकारक प्रति आदर भावमे आयल कमीकेँ महसूस करैत रहलहुँ। प्रायः कतेको परिवारक विवाह आदि प्रकरणमे पंजीकारक भूमिका पर प्रश्न चिन्ह सेहो लगाओल जाईत रहल। एकटा विचित्र स्थिति देखल, जे भेट भेला पर पंजीकारकेँ विशेष प्रणाम-पाती आ परोछ भेने अश्रद्धा आ गंजन। जखन दरभंगामे कॉलेज मे पढ़ैत रही तऽ कतेको बेर पंजीकारक बासा पर जेबाक अवसर भेटल। आ ओहूठाम पंजीकार आ गृहस्थक संबंध मे आयल तनावकेँ महसूस कएल। पंजीकारक अलग तर्क आ कथ्य रहैन्ह। अपन बाल-बच्चाक नीक विवाह नञि भेलाक सबटा दोष पंजीकारक माथ पर पटकैत गृहस्थकेँ सेहो देखलियैन्ह। एहि दूनू पक्षक बीचमे पंजी दिस कम ध्यान गेल।

राँटी गामक श्री कैलाश चन्द्र झा दिल्लीक अमेरिकी दूतावासमे हाकिम छलाह। 1990 ई. मे हिनकर संपर्कमे सॉल्ट लेक यूनिवर्सिटी, ऊटा (अमेरिका)क अधिकारी एलखिन्ह जिनका 'पंडा डॉक्युमेंट्स' पर अभिरुचि छलैन्ह। कैलाश बाबू जखन हिनका लोकनिकेँ कहलखिन्ह जे मिथिलामे पंजी व्यवस्था पिछला सात सौ वर्षसँ अछि तऽ हुनका विश्वास नञि भेलैन्ह। ओ लोकनि अपन संपूर्ण परियोजनाकेँ बदलि कऽ पंजीक डिजिटाईजेशन पाछाँ लागि गेलाह। ताहि समयमे बिजलीक घोर अभाव छल। राँटी



गाममे जेनरेटर बैसाओल गेल आ आन तरहक मशीन सब लगाओल गेल। गाम-गाममे बसल पंजीकारसँ संपर्क कएल गेल आ पंजीकार लोकनिकेँ कहल गेलैन्ह जे अपन-अपन पंजी डिजिटाईजेशनक लेल देल जाए। एहि लेल पंजीकार लोकनिकेँ प्रति फोलियोक हिसाबसँ पैसा सेहो देल गेलैन्ह। अमेरिकन लोकनि मिथिलाक पंजीकेँ डिजिटाईज कऽ कऽ अमेरिका चलि गेलाह। पहिने शर्त्त राखल गेल रहैक जे डिजिटाईज्ड पंजीक एक प्रति राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्लीमे सेहो राखल जेतैक। मुदा एक बेर हम चि. कुंदन कुमार कर्णक संग एकर ताकाहेरी मे दिल्लीक अभिलेखागार गेल रही। मुदा हमरा नञि भेटल। एहिठाम ई कहब निस्तूकी नञि होयत जे ओहिठाम नञि छैक। संभव छै, ओहिठाम राखल गेल हेतैक। मुदा एहि लेल विशेष मेहनतिक आवश्यकता छैक।

पंजीकार लोकनिकेँ पंजीक डिजिटाईजेशनक पाई भेटलैन्ह तखन हुनका बुझबामे आबि गेलैन्ह जे पंजी बड्ड महत्वपूर्ण चीज अछि आ एकर उपयोग केलासँ एहि तरहक आमदनी सेहो भऽ सकैत छैक। कर्ण कायस्थक कोन-कोन पंजीकारक पंजी (बही) राँटी लऽ जायल गेलै तकर जनतब हमरा नञि अछि। ओम्हर अमेरिकन सूत्रसँ जनतब भेटल जे हुनका सबकेँ अलगे समस्या रहैन्ह। एहि परियोजना मे केओ तिरहुता जननिहार वा पंजीकार नञि रहथिन्ह। एक बेरमे पंजी सेहो नञि एलैक। पंजी अबैत गेलै आ डिजिटाईज होईत गेलै। कोन बही, कोन पंजीकार, कोन मूल, कोन गाम, तकर कोनो ठेकान नञि। एहि क्रममे संभव छैक जे विभिन्न पंजीकारक एक्के तरहक पंजीकेँ बेर-बेर डिजिटाईज कएल गेल होए।

हमरा सम्मुख एकटा यक्ष प्रश्न छल जे पंजी, पंजीकार आ गृहस्थक संबंधकेँ प्रगाढ़ बनाबक दिशामे की कएल जा सकैत छैक? पंजीकारसँ संपर्क केला पर लागल जे ओ लोकनि एहि सब तरहक विषय पर गप्प करबाक लेल सेहो तैयार नञि छथि। पंजीकारकेँ पहिल शंका रहैत छैन्ह जे जौँ एक बेर पंजीकेँ डिजिटाईज करबा लेल जाए तऽ हिनक पेशा पर विपरीत असरि पड़तैन्ह। कारण, हरेक दोसर व्यक्ति इएह चर्चा करैत रहलाह अछि जे पंजी व्यवस्थाकेँ कम्प्यूटर आधारित बनाओल जाए। मुदा गृहस्थ आ समाज एहि पर विमर्श नञि करैत अछि जे कोनो कम्प्यूटराईज्ड व्यवस्था तैयार करी, पंजीकारक विकल्प नञि अछि। पंजीकारकेँ एहि व्यवस्थासँ हटा कऽ कोनो नवीन व्यवस्था तैयार नञि कएल जा सकैत अछि। दोसर दिस, पंजीकार सेहो सदिखन एहि लेल सशंकित रहैत छथि। ओ सब विषय पर विस्तारसँ गप्प करताह, मुदा पंजीक संरक्षण आदि विषय पर गुम्मी



लादि लेताह। हिनका लोकनिकेँ शंका होयब स्वाभाविक अछि जे प्रपंच कऽ कऽ पहिने पंजी लेल जायत, फेर एकर डिजिटाईजेशन कराओल जायत आ अंततः हिनक पेशागत आमदनी पर विराम लगाओल जायत।

मुदा स्थिति गंभीर अछि। ब्राह्मण वर्गक मूल पंजी सुरक्षित रहबाक कारणेँ ओकर प्रिंटिंग संभव भऽ सकलै। मुदा कायस्थक मूल पंजीक मादे ठीक-ठीक कहब कठिन अछि जे सब मूलक मूल पंजी सुरक्षित अछि। अस्वजन तैयार करबाक क्रममे पंजीकार लोकनिकेँ पोथीक अद्यतन स्थितिक सहारा लेमय पड़ैत छैन्ह। हमर कहबाक तात्पर्य ई नञि जे पंजीकार लोकनि पुरना बहीक संरक्षण नञि करैत छथि। मुदा हरिसिंहदेवकालीन मूल पंजीक उपलब्ध अछि वा नञि, एकर जनतब पंजीकारसँ भेटि सकैत अछि। ओना तऽ पंजीक सब पात अत्यंत महत्वपूर्ण अछि मुदा मूल पंजीकेँ प्रिंट करौनाय आब आवश्यक अछि। हरिसिंहदेवक (कर्णाट राजवंश) समयसँ लऽ कऽ ओईनवार राजवंशक अवधि धरि जे पंजी उपलब्ध अछि, तकरा समेकित कऽ कऽ अपन समाजकेँ प्रिंट करबा देबाक चाही आ एकर प्रति प्रत्येक घरमे उपलब्ध रहए, तकर इंतजाम सेहो हेबाक चाही।

दोसर विषय ओईनवार कालक बादसँ लऽ कऽ वर्तमान अवधि धरिक पंजी पर चर्च करय चाहब। आब पंजीकारक संख्या दिनानुदिन कम भेल जा रहल अछि। तहिना पंजीक संरक्षण पर सेहो कुप्रभाव पड़ि रहल अछि। कहियो सिमरामे कएकटा विद्वान पंजीकार सब छलखिन, आब एकर संख्या प्रायः नगण्य अछि। किछु पंजीकार तऽ एहनो भेटि सकैत छथि जे पंजीकारक कर्त्तव्य तऽ करैत छथि मुदा हुनका लग पंजी नञि छैन्ह। जनतब जे कायस्थमे पंजीकारहिं घटक आ पंजीकार दूनू दायित्वक निर्वहन करैत छथि। पंजी अपना समाजक धरोहरि अछि। पंजीक पोथीक संरक्षण अत्यंत आवश्यक अछि। अस्वजन लिखबाक लेल पंजीकार लोकनिकेँ जाहि पोथीक आवश्यकता नञि रहि जाईत छैन्ह ओ पोथी सब सेहो अत्यंत महत्वपूर्ण अछि।

एकटा प्रश्न अछि, जौँ पंजी एतेक महत्वपूर्ण अछि तऽ एकर संरक्षण कोना होए? एहि संरक्षणमे पंजीकारक की योगदान आ समाजक की योगदान अछि?

एकटा संस्था अछि इनटैक। ई संस्था भारत सरकारसँ संबंधित अछि। विभिन्न राज्य सरकार, भारत सरकार, एतय धरि जे कएकटा दोसर देश सेहो एहि संस्थासँ काज कराबैत अछि। हमरा जनतब भेटल जे राष्ट्रपति भवन सन अति विशिष्ट कार्यालयक दस्तावेजक संरक्षण सेहो इनटैक द्वारा कएल गेल अछि। हम एहि संस्थाक बिहार प्रांतक सह संयोजक छी। पिछला चारि सालसँ हमरा लोकनि एहि लेल प्रयत्न कऽ रहल छलौं जे मिथिलाक दुर्लभ पाण्डुलिपिक संरक्षण इनटैक

ले. जन. (से.नि.) एल. के. गुप्ताजीकेँ सेहो एकर महत्वसँ अवगत करौलाह आ अंततः इनटैक एहि काजक लेल 15 लाख टाका खर्च करबाक मंजूरी दऽ देलक। हमरा सभहक लेल अत्यंत हर्ष आ गौरवक विषय छल। एहि लेल जे औपचारिक काज सब करबाक छल, ओ सब केलाक बाद मुख्य बिन्दु पर एलहुँ जे पंजीकारक पोथीक सर्वेक्षण होए। कारण लखनऊसँ आयल संरक्षण विशेषज्ञ लोकनि अपना आँखिए देखय चाहैत छलाह जे पंजी की होईत छैक? एकर आकार, प्रकार, दशा आदि केहेन छैक? जाहिसँ ओ संरक्षणक तकनीकी पक्षसँ संबंधित दस्तावेज आ खर्च आदिक ब्योरा प्रस्तुत कऽ सकता।

हमर इच्छा छल जे एकटा प्रयोगशाला



द्वारा कएल जाए। इनटैक एहि लेल अपन धन सेहो खर्च करय कारण मिथिलामे एहन कोनो दानदाता नञि छथि जे एहि तरहक काजमे अपन निजी धन खर्च करथि। दोसर बात, मिथिलाक दुर्लभ पाण्डुलिपि पूरा विश्वमे अपन विशिष्ट स्थान राखैत अछि। एहि बलेँ मिथिलाक अनेकानेक पाण्डुलिपिकेँ 'विश्व धरोहर' घोषित हेबाक क्षमता सेहो छैक। मुदा एहि लेल जाहि नेतृत्व क्षमताक आवश्यकता छैक, तकर सर्वथा अभाव। हम अपन चीजक महत्व नञि बुझि पबैत छी। हम अपन नीक परंपराकेँ सेहो न्यून कऽ कऽ बुझैत छी।

इनटैकक बिहार प्रांतक संयोजक श्री प्रेम शरण (से.नि. आई.एफ.एस.) एकर महत्वसँ अवगत भेलाह आ ओ इनटैकक अध्यक्ष

दरभंगा मे होए आ दोसर प्रयोगशाला मधुबनी मे होए आ एहि दूनू प्रयोगशालासँ कायस्थक उपलब्ध पंजीक संरक्षण भऽ सकए। सर्वेक्षणक लेल हमरा दिससँ दूटा पंजीकारक नाम पठाओल गेल- श्री संजीव प्रभाकर (दरभंगा) आ श्री नवीनजी (मधुबनी)। एहि तरहेँ ब्राह्मण वर्गसँ सेहो नाम पठाओल गेलैक। हमरा लोकनि दूनू पंजीकारक डेरा पर जाए सर्वेक्षण, फोटोग्राफी आदि सेहो कराओल। श्री संजीवजीक डेरा पर राखल पंजीक अवस्था दयनीय छलैक। देखबासँ लगैत छलैक जे पंजी बड्ड प्राचीन अछि आ एकर उचित रख-रखाव सेहो नञि भेल छैक। श्री नवीनजीक डेरामे राखल पंजी बेसी नीक स्थितिमे भेटल। सब किछु व्यवस्थित। संरक्षणक मादे श्री नवीनजी

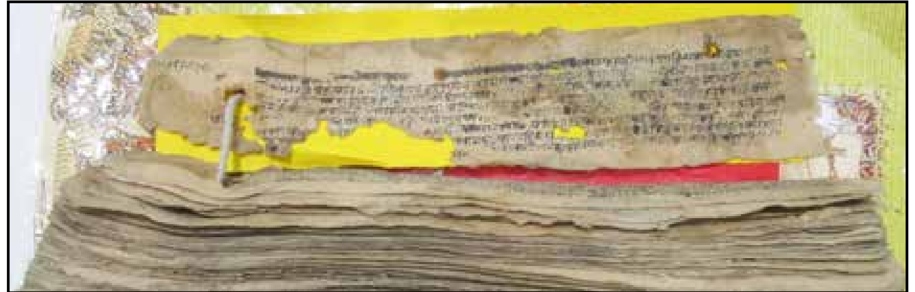
कहलथि जे बहीक पत्ता जखन फाटल सन लागय लगैत अछि तऽ एहि पातक बाद बही मे एकटा नव पात सन्हिया दैत छियैक आ पुरान पात पर लिखल सबटा तथ्यकेँ नव पात पर लिखि दैत छियैक। एकटा आर चीज ओ देखेला। पुरान, बसहा कागज जे प्रायः नेपालक छल, ओकरा अपन दूनू तरहत्तीक मध्य मरोड़ि कऽ गोल बना देलखिन, जेना तूरक फाहा सन होए। आ फेर ओहि पातकेँ सीधा कऽ देलथिन। ओ पात पूर्ववत स्थितिमे आबि गेलै। हमरा संगे जे सर्वे कऽ रहल छलाह, हुनका सभहक लेल सेहो नव अनुभव छल। एहिसँ हम आश्वस्त भेलौंह जे पंजी संरक्षणक जे पारंपरिक विधि अछि सेहो कम वैज्ञानिक नञि अछि।

दरभंगाक महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालयमे पंजीक संरक्षणक लेल पहिल प्रयोगशालाक उद्घाटन 27 नवंबर, 2021 कऽ कएल गेलैक। एहिमे बहुत लोक एलाह। श्री संजीव पंजीकार सेहो एलाह। शुरूमे ननौरक जियानन्द बाबूक पंजीसँ काज शुरू भेलैक आ बाकी पाण्डुलिपिक सेहो संरक्षण आरंभ भेलैक। यद्यपि श्री संजीव प्रभाकरजी आरंभमे एहिमे कम रुचि लेलैन्ह, मुदा बादमे कुल तीनटा बही संरक्षणक लेल देलखिन। श्री नवीन पंजीकार जीकेँ कतेको बेर फोन कएल, पैरवी सेहो लगाओल, मुदा ओ एहिमे अभिरुचि नञि लेलाह। संभव छैक, हुनका एकर बेगरता नञि होनि कारण हुनकर पंजी नीक अवस्थामे छलैन्ह।

मुदा हमरा एकर बहुत बेगरता बुझायल। महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालयक प्रभारी आ एहि कार्यक्रमक कार्यान्वयनक मुख्य व्यक्ति डॉ. शिवकुमार मिश्रक सहायतासँ एतेक व्यवस्था सेहो कराओल जे जौँ मिथिलामे कोनो अव्यवहृत पंजी अछि तऽ संग्रहालय मे एकरा राखबाक लेल एकटा अलग कक्षक व्यवस्था कएल जाए। संग्रहालय मे पुरान पंजी संरक्षित रहत। बिहार सरकारक संग्रहालय रहबाक कारण एकर पूर्ण दायित्व बिहार सरकारक रहतै आ जौँ भविष्यमे कोनो तरहक वैज्ञानिक संरक्षणक खगता हेतैक तऽ सरकार द्वारा कएल जेतैक। हमसब एतेक धरि व्यवस्था कएल जे जौँ कोनो पंजीकारकेँ एहि पंजीकेँ देखबाक वा एकर उपयोग करबाक आवश्यकता हेतैन तऽ एकर सेहो प्रावधान रहत। मूल बिन्दु अछि जे पंजी समाजक धरोहरि अछि। संभव छैक, कोनो कारणेँ, पंजीकारक घरमे ठीकसँ नञि राखल जा सकैत होए तऽ बिहार सरकारक संग्रहालयमे एकरा रखबा देल जाए। जे पंजीकार एकरा व्यवहारमे आनि रहल छथि, हुनका लेल ई विषय नञि छैन्ह। मुदा कतेको पंजीकारक पंजी देख-रेखक अभावमे नष्ट भऽ रहल अछि। ई समाजक लेल अत्यंत चिन्ताक बात हेबाक चाही। कारण, हम पंजीक उपयोग करी वा नञि करी, पंजी हमर समाजक लेल सम्मानक विषय अछि। पंजीकारसँ ईहो जनतब भेटल जे दस-बारह पीढ़ीसँ पुरान पंजीकेँ ओरिया कऽ राखब हुनका सब लेल कम चुनौतीपूर्ण नञि अछि।

अनुमानतः हजारसँ बेसी पात रहैत छैक। जौँ पाईक इंतजाम भईयो जाए तऽ तकनीकी विशेषज्ञकेँ ताकब कठिन काज। पंजीक संरक्षणक लेल एकटा निस्सन डेग उठाओल गेल छल मुदा एकर पूरा-पूरा लाभ हमरा लोकनि नञि लऽ सकलौंह, एकर कचोट हमरा बहुत दिन धरि रहत। परियोजना पूर्ण रूपेण सफल रहल आ पन्द्रह लाख टाकाक उपयोग हमरा लोकनि मिथिलाक पाण्डुलिपिक संरक्षण मे कएल। एकर खूब चर्चा सेहो भेलैक। प्रिंट आ इलेक्ट्रॉनिक मीडियामे सेहो एकर चर्चा भेलैक।

एकटा सपनाक संग अपन बात समाप्त करैत छी जे कर्ण कायस्थक मूल पंजीक प्रिंटिंगक व्यवस्था सेहो हेबाक चाही। पंजीमे केओ छोट नञि, केओ पैघ नञि छैक। छोट आ पैघ हमरा लोकनिक मोनक भ्रम मात्र अछि। छोट आ पैघक अनघोल मचा कऽ कतेको लोक अपन दोकानदारी खूब नीक जकाँ कऽ रहल छथि।



एहि क्रममे हमरा पता लागल जे मधुबनीमे सेहो पंजी अछि, मुदा एकर व्यवहार केओ नञि कऽ रहल छथिन। जौँ कोनो पंजीकारकेँ एकटा बही छैन्ह तऽ ओ डुप्लिकेट बही नञि लेताह वा हुनका एकर कोनो काज नञि हेतैन्ह। आ जौँ पंजी बड्ड दिन धरि अव्यवहृत रहत तऽ एकरा नष्ट हेबाक संभावना बेसी भऽ जेतैक। जौँ समय पर तकतान कऽ हमरा लोकनि पंजी नञि बचाएब तऽ भारी वेदनाक विषय बनत।

संतोष अछि जे एहि प्रक्रिया मे श्री संजीव प्रभाकरजीक तीनटा बहीकेँ संरक्षित करयबामे सफलता भेटल। एतबहिसँ संतोष। पंजीक एकटा पातक संरक्षणमे सामान्यतः एक सए रूपया खर्च होईत छैक। एकटा बहीमे

पंजीक लोकप्रियताक अभावमे कर्ण कायस्थक लगभग सत्तर प्रतिशत (एकटा अनुमान मात्र) परिवार पंजीसँ आब जुड़ल नञि छथि। अपन पंजीक इतिहास, तैयार करबाक विधि, एकर उपयोगिता आ महत्वक मादे प्रत्येक परिवारमे नीकसँ जनतब देल जाए तऽ हमरा विश्वास अछि जे कर्ण कायस्थक परिवारकेँ विवाह आ संबंधक एकटा विशाल परिक्षेत्र भेटत। पंजी हमर धरोहरि अछि आ एकर संरक्षण केनाय, एहि प्रथाकेँ बचा कऽ राखनाय हमरा लोकनिक कर्त्तव्य अछि। संगहि पंजीकारकेँ अपन समाजक अभिन्न बांधव मानब, हुनका प्रति आदरभाव राखब, हुनकर परिवारक नीक भरण-पोषणक ओरिआओन करब सेहो हमरा लोकनिक दायित्व सेहो हेबाक चाही। अस्तु।

जौं व्यस्त रहब



❑ बिनीता मल्लिक

स्वस्थ रहब अहाँ
सदिखन मस्त रहब,
जौं कतहु व्यस्त रहब।

नै झुकू एकाकीपन सँ,
नै रूकू अन्हार घन सँ,
मिला कदम-कदम सँ,
आगाँ बढ़यमे अभ्यस्त रहब,
जौं सुकार्यमे अहाँ व्यस्त रहब।
स्वस्थ रहब अहाँ, सदिखन मस्त रहब।

पाथर भरल रास्ता होए,
कठिनाईक वास्ता होए,
हालत चाहे जास्ता होए,
दुष्कालकेँ निरस्त करब,
जौं कर्तव्यमे अहाँ व्यस्त रहब।
स्वस्थ रहब अहाँ, सदिखन मस्त रहब।

लहरि सँ उठैछ स्वेद,
कतरा-कतरा गढ़ैछ मेघ,
गर्जन कऽ भरैछ आवेग,
दृढ़ पर्वत सन तटस्थ रहब,
जौं प्रतिज्ञ बनि ओजस्व रहब।
स्वस्थ रहब अहाँ, सदिखन मस्त रहब।

नहि जरूरत कानब केँ,
मेटा दी भऽ खसब केँ,
युक्ति अंतस धोयब केँ,
आ ख़ुशी सँ आश्वस्त रहब,
जौं स्वाध्याय मे व्यस्त रहब।
स्वस्थ रहब अहाँ, सदिखन मस्त रहब।

केँ अहाँक मोन बहलाओत,
किएक फूसि आस दियाओत,
भटकाव सँ बचू अहाँ,
स्वनिपुन बनि शाक्त रहब,
जौं कला कौशल मे अहाँ व्यस्त रहब।
स्वस्थ रहब अहाँ, सदिखन मस्त रहब।

अरजि-अरजि धन की करब?
जहन खालिए हाथ अछि जायब,
की मृषा संचय करि हृद भरब,
नैसर्गिक प्राप्ति सँ संतुष्ट रहब,
जौं व्याप्त मे हि व्यस्त रहब।
स्वस्थ रहब अहाँ सदिखन मस्त रहब।
जौं काज मे अहाँ व्यस्त रहब।

कहुतिया सँ द्विरागमन धरि



❑ डा. कल्पना झा

आँखिक पुतरियाकेँ अएलन्हि कहुतिया,
बेकल माए केर प्राण।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

आई माई सखी हे सहेलिया,
गावथि गीत समदाओन।
रहि रहि माए केर छतिया फटै छैन्हि,
नोरक धार उफान।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

ई कोन नियम बनाओल विधाता,
बनि कऽ बज्र पखान।
दुलरी बेटी कोना पर घर पठायब,
जिनका मे सबै अछि जान।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

खन खन विरही मोन सताबय,
किछु नहि लागय सोहाओन।
फूल सनक सुकुमारि धिया मोर,
काँच हुनक छैन्हि ज्ञान।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

आब केँ बाबाक टहल बजाओत,
ठुमकत अंगना दलान?
केँ बोलाओत बाबा बाबा,
केँ लगाओत पान?
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

पोखरि झांखरि गछिया बिरिछिया,
गुम सुम खेत खढ़ियान।
सखिया सहेलिया करुणा करै छथि,
आब कोना होयत मिलान।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

कनिया काकी अओर लाल भौजी,
खेक बनावथि धिया केर नाम।
नोर आँखि धिया कौर उठाबथि,
राखथि रीतक मान।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

भऽ रहलैक पेटारक तैयारी,
हाला डाला विधक समान।
दनौरी तिलौरी चरौरी बनै छै,
उड़िदक धाइठ फेनान।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

कोन बाटे बीत गेलै गिनल दिनवा,
लागि गेलै महफा दलान।
गरदनि धय धय धिया करुणा करै छथि,
सब कियो लागै छैन्हि आन।
धिया मोर जेती पिया केर गाम।।

शुभ शुभ धिया अहाँ जाउ ससुर घर,
राखब कुल केर मान।
बाबा केर माथक पाग बचायब,
लक्ष्मी बनब ओहिठाम।
धिया अहाँ जाउ पिया केर गाम।।

अचल रहय अहिबात अहाँ केर,
खोइछ भरल दुभि धान।
फरय फुलाय अहाँ केर बगिया,
होए कुशल संतान।
धिया अहाँ जाउ पिया केर गाम।।

हमर मिथिला राज



❑ डॉ राजीव कुमार वर्मा

शतपथ ब्राह्मण सँ विदेह माथव आ
विदेहक शुरुआत रामायण आ पुराण मे
चर्चित इक्ष्वाकुक पुत्र आ मनुकें पौत्र
राजा निमि कऽ पुत्र मिथीसँ जुड़ल
अछि हमर मिथिला।

मिथी रहैथ विदेह (देह-रहित)
आ मंथनसँ भेलैथ मिथी
विदेहक चर्च सेहो अछि महाभारत मे
बृहदविष्णु पुराण मे, मिथिला अछि तीरभुक्ति।

गंगा-हिमालयक मध्य, पन्द्रह गोट नदीक तीर
अवस्थित अछि हमर मिथिला राज तीरभुक्ति।

राजा विदेह आ सीताक भूमि अछि मिथिला
रामसँ जुड़ल अछि मिथिला आ हमर तीरभुक्ति
कण-कण मे अछि, सीता-रामक भक्ति
चारूकात विराजमान अछि महाशक्ति।

विद्यापति गोसाउनि तऽ देलैथ मिथिलवासी कें
सहज आ सुन्नर मन, बुद्धि आ चित्त
मुदा की भेल?
भगवान राम कहने छलाह- मैथिल सदैव
रहता परस्पर-विरोधी आ मिथ्याकुलाभिमानी।

की मिथिला राजक अवनतिक कारण
हम स्वयं छी?
की कुरीति आ कुप्रथा लेल जिम्मेवार
हम सब छी?
की हम सब आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक
विकास सँ कोसों दूर छी?

जोड़ु, जुड़ु सामाजिक, विषमता दूर करू
वैचारिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक
पिछड़ापन दूर करू
आ करू एकटा नव मिथिला राज्यक निर्माण।

आउ चली हम गाम बचाबी



❑ देवानन्द मिश्र

आउ चली हम गाम बचाबी
मैथिल मिथिला धाम बचाबी।

बिसरैत अपन घर दुआरि आ
बिलटैत खर-खरिहान बचाबी।

बिसरैत भाषा लिपि आ संस्कृति
उपटैत पान मखान बचाबी।

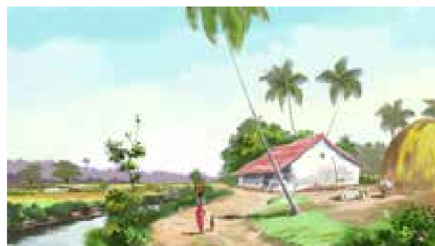
गार्गी सीता भामती सन
बेटी हमर गुमान बचाबी।

विश्व विदित जे मिथिला महिमा
फेर सँ ओकर मान बचाबी।

रोटी खातिर शहर बसल छी
सुन भेल गाम-दलान बचाबी।

दबि गेल हिन्दी रिमीक्स तऽर मे
विद्यापति केर गान बचाबी।

करी निहोरा आउ मैथिल जन
फेर सँ अप्पन गाम बसाबी।



अपन मिथिला महान



❑ डॉ. पूजा कुमारी

अपन मिथिला महान, जतय जनक सन राजा,
मिथिलावासी सबकें मानैत अपन संतान।
जिनक धिया मैथिली पावन भेल मिथिलाधाम।।

अपन मिथिला महान, जतय मंडन आयाचीक गाम।
जतय सुगा भोरे उठी बाजय मुखसँ सीताराम।।

अपन मिथिला महान, जतय शिव उगना बनि।
विद्यापतिक चाकरी केलाह, धन धन भेल मिथिलाधाम।

अपन मिथिला महान, जतय पान मखानक खान।
जतय माछ-भात प्रधान, तिलकोरक तरूआक सचार।

अपन मिथिला महान, जतय माथक शोभा ललका पाग।
मुख पान मधुर मुस्कान, पोखरि पसरल माछ मखान।

अपन मिथिला महान, जतय कोईली बाजय मीठगर बोल।
कि सभ करू गुनगान, मिथिलाक थिक ई पाचोटा पहचान।

ओहि मैथिलीक हम सभ छी संतान।
धन पावन मिथिलाधाम, अपन मिथिला महान।



काज अपन करैत रही



❑ इरा मल्लिक

अपन काज करैत रही!
जीवन पथ पर अनवरत,
चलैत रही बढ़ैत रही।
कर्म कें असीम रूपमे,
एक पथ पकैड़ ली
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

काज कोनो छोट नहि,
काज कोनो पैघ नहि
काजक स्वभाव सक्रियता अछि
सकारात्मक भाव भरैत रही!
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

मोन मे विश्वास भरैत रही!
आशक ज्योत जरेने रही!
थाकि नहि, रुकि नहि!
कर्मपथ पर अनवरत चलैत रही।
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

लोककें कि बात छै? बाते मे बेबात छै!
लोकक देल उपमान सँ,
लोकक कएल अपमान सँ
स्वयंकें बचबैत विचलित जुनि करि।
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

काज हमर श्रेष्ठ होए,
कर्मसँ हम निष्ठ होए
नीक काज करब अहाँकें,
सामर्थ्यमे भरल अछि
नीक काज करैत रही,
बिना कर्मफलक आसमे।
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

श्रेष्ठताक अपन भाव छै, अपन सुर आ तान छै
अपन शौर्य दिव्य छै, करब कर्म नीक जौं
एक दिन नहि एक दिन
सुयशक डंका बजबे करत।
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

दुनियाँ हृदयसँ सम्मान करत
दुनियाँक नजर पारखी छै
सर्वश्रेष्ठ काज करब
प्रतिष्ठा स्वयं जग देत, सम्मान भरल नेह देत।
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

नीक बेजायक भेद छोड़ि
एकनिष्ठ तन्मयता सँ, आस हम धएने रही
अपन संपूर्ण ऊर्जा सँ, सतत कर्मशील रही!
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

बड़ाई कि! बुराई कि!
ई ते बात क्षणिक अछि!
स्वभाव मे गंभीरता, विचार मे गहनता
गरिमामय व्यक्तित्व संग
जन-जनक मान करी।
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

हमर इएह सामर्थ्य अछि!
सबकें सम्मान करी।
भऽ एकनिष्ठ भाव सँ अपन काज करैत रही
अपन काज करैत रही।
अपन काज करैत रही।।

शाश्वत अछि कर्मयोग
ध्यान धारणा समाधि धरि
अष्टांगिक मार्गकें, जीवन मे शिष्टाचारकें
सहजहिं अपनाबैत रही
साधना करैत रही
अराधना करैत रही।
निरंतर काज करैत रही।
अपन काज करैत रही!

भावनाक लहरि



❑ पारस नाथ मिश्र 'अनिल'

आँखि कखनो कोना ई नोरा जाइत अछि।
आबि कें ठोर आखर पड़ा जाइत अछि।।
भावना केर लहरि भेल बड्ड असहज।
ठाढ़ काते कोना पग मोड़ा जाइत अछि।।

हम सदिखन सहज भाव पूजन केलौंह।
नेह भरि-भरिकें आँजुरसँ अर्पण कलौंह।।
डेग पर डेग सदिखन मिलौने चली।
हाथ पकड़ल कोना ई छोड़ा जाइत अछि।।

आँच मध्यम रहल ओ नै बेसी नै कम,
हाथ छोलनीक संगहि चलल हर-दम।।
नून-तेल अपना भरि हम हिसाबे देलहुँ।
पानि पड़लै कोना की झोरा जाइत अछि।।

फेर मधुमास आएल अपन गाम सँ।
शब्द दुइएटा लिखल हमर नाम सँ।।
भेल व्याकुल सजह मन पढ़ल पाँति जौं।
ई सहटि हाथ रंगमे बोरो जाइत अछि।।

नाम राखल सिनेहक सुमन पात सन।
संग मे संगजोड़ी टुटल गात सन।।
बात सभटा 'अनिल' राज जानी नै हम।
नामसँ नाम कौखन जोड़ा जाइत अछि।।

हम नारी मैथिलानी छी



❑ अल्पना कुमारी

नञि हम अबला नय हम सबला
नञि कोनो हम कहानी छी
हम नारी मैथिलानी छी।
हम नारी हिन्दुस्तानी छी।

ऊ दिन गेल बदलल समय आब युगक
पहिया घुमल यौ,
घोघ तर जे चान छुपल छल
आब घोघक बदली छँटल यौ,
हम माता शारदाक वाणी छी।
हम नारी मैथिलानी छी।
हम नारी हिन्दुस्तानी छी।

चूल्हा-चौका, कुटनी-पिसनी
एतबे धरि नहि नारिक काज,
ट्रेन प्लेन नभ फाइटर उड़ाबय
मान-मर्यादाक बचार्के लाज,
हम माता शक्ति जग कल्याणी छी।
हम नारी मैथिलानी छी।
हम नारी हिन्दुस्तानी छी।

कोयलीक तान पपीहाक गान
सभ घर आंगन दलान सजल,
सीता, सावित्री, मैत्रयी, गार्गी
निर्मल भावक मुस्कान बनल,
हम माँ काली रूप संहारिणी छी।
हम नारी मैथिलानी छी।
हम नारी हिन्दुस्तानी छी।

दुष्ट समाज करय अत्याचार
अँचरामे नेना करय किलोल,
दान-दहेजसँ मोन नञि मानय
व्यभिचारी लेल जानक की मोल,
हम जगपति जग पापहारिणी छी।
हम नारी मैथिलानी छी।
हम नारी हिन्दुस्तानी छी।

हम लड़य छी मुदा अपनहिंसँ,
हम जीबय छी मुदा लाचारीमे,
खुशी-खुशी जीबय चाहय छी,
प्रेम, सिनेह स्नेहिल संसारीमे,
हम संकटमे खड्ग धारिणी छी।
हम नारी मैथिलानी छी।
हम नारी हिन्दुस्तानी छी।

हमर मिथिला-मैथिली



❑ श्रद्धा

हमर मिथिला हमर मैथिली,
कतेक प्यारी कतेक न्यारी।
संस्कृति सभ्यतासँ भरल एहिठामक नारी,
जेठ-ससुरसँ करय छथि पर्दा एहिठामक नारी।
छठि पूजा अछि एहिठामक अभिमान,
ठकुआ-भूसबा-खजूर अछि एकर पहचान।
हमर मैथिलीमे भरल अछि प्यारक भाषा,
बड्ड प्राचीन अछि हमर मैथिली भाषा।
पान मखान सकरौरी गामक भोजक शान,
अहुँ सब करू प्रण करब मैथिलीक सम्मान।
पूरा विश्वकेँ देखा देब मिथिलाक शान,
चमकत विश्वमे मिथिलावासीक अभिमान।
बड्ड सुदृढ़ संस्कृति अछि हमर मिथिलाक,
विश्वमे लहराओत परचम अपन मिथिलाक।
हम मिथिलाक बेटी 'श्रद्धा' लए छि प्रण,
मैथिलीक प्रति राखब दिलमे सम्मान।

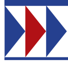
उच्च शिक्षित स्त्री



❑ खुशबू मिश्रा 'खुशी'

उच्च शिक्षित स्त्री
कखनो नञि छोड़ैत छथि मर्यादा
मर्यादासँ हटल अस्तित्व मे
पोसाएत अछि केवल फूहड़ता
ओना उच्च शिक्षित डिग्रीधारी
दुहू अलग-अलग आखर आ
अर्थ राखैत अछि
सुंदर स्त्रीक पहिचान थिक
वाणी, व्यवहार, चरित्र मे
शिक्षाक लबलेस...
प्रमाणपत्रेटा पर नञि!!





सीता : आधुनिक परिपेक्ष्य मे



❑ मनोरमा झा

सीता एकटा मात्र पौराणिक चरित्र वा कथा कहानीक चरित्र मात्र नञि छलीह, ओ एहि भेदभाव मूलक समाजमे नारीक अस्मिता,कर्तव्य, धैर्य, सहनशीलता आ आत्मसम्मानक प्रतीक सहो छलीह आ हरदम रहतीह। आइयो नारी अपन सुख-दुःखसँ पहिने परिवारक सुख-दुखकेँ बेशी महत्व दैत छैथ (एतय कियो अपवाद गिना सकै छैथ, मुदा देखबै तऽ ओहु कालमे तऽ केकैय आ मंथरा छलीहे)। हुनक जीवनमे जे नायक वा खलनायक छलाह हुनक नाम भले आइ किछु अओर होए आइयो नारीक जीवनमे ओ सब दूनू रूपे विद्यमान छथि।

आजुक नारी जौं अपन अस्मिता, स्वतंत्र पहिचान, आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मानक लेल आन्दोलन वा कोनो पहल करयकेँ सोचै छैथ तऽ हुनका लेल हजारों साल पहिने मिथिलामे जनमल धिया जानकीसँ बढ़िया मार्गदर्शक अओर केओ नञि भऽ सकैत छथि। सीता अपन अस्मिताक रक्षा रावण सन महाप्रतापी-बलशाली दानवराजक कैदमे रहितो केलीह, ओ अपन चरित्र पर कोनो दाग नञि लागय देलीह, ई हुनक साहससँ संभव भेल छल। जखन एकटा तुच्छ व्यक्तिक बातमे आबि मिथ्या लांछनक आधार पर राम द्वारा हुनका वनमे निष्कासन कऽ देल गेलैन्ह तऽ हजारो कष्ट सहितो असगरे ओ अपन संतानकेँ उच्च संस्कार आ शिक्षा दऽ अपन कर्तव्य निभौलैन्ह। एहिसँ स्पष्ट अछि जे स्त्रीमे ओ क्षमता अछि जे ओ केहनो विकट सँ विकट परिस्थितिकेँ अपन सहनशीलता, साहस, धैर्य आ बुद्धि-विवेकसँ अनुकूल बना सकैत छथि। रामकेँ अपन गलतीक आभास भेला पर जखन ओ सीतासँ क्षमा मांगि हुनका अपन राजमहल लऽ जाए चाहलैन्ह तऽ सीता हुनका क्षमा तऽ केलैन्ह मुदा हुनका लग वापस नञि गेलीह। कारण मिथ्या दोषक आधारे हुनका पर कएल संदेहसँ हुनक आत्मसम्मान पर आघात भेल छलैन्ह आ आत्मसम्मानसँ बढ़िकऽ किछु नञि होइत अछि।

आजुक नारीक ई कहब पूर्णतः सत्य छैन्ह जे आत्मसम्मान पर किनको द्वारा चोट पहुँचलापरांत डेग पाछाँ घींचि माटी फाटबाक गोहारि नञि करब वरन् ठाढ़ होएब... आ ई सर्वथा होमएक चाही। मुदा ई तऽ मानैये परत जे ओहियो जुगमे जे नारी अपन आत्मसम्मान आ अस्मिताक संग समझौता नञि केलैथ (भले एहि प्रतिरोध देखाबय लेल जे तरीका अपनेलैथ ओ आजुक युगमे उचित होए वा



नञि होए) हुनकेटा मात्र इतिहास यादि करैत छैन्ह आ आगूओ वएह सम्मान पोतीह। तैँ कहल जाए अछि, "जौं व्यक्ति अपन सम्मान नञि करैत छथि, अपनासँ प्रेम नञि करैत छथि, तऽ ओ दोसर ककरो उचित सम्मान नञि दऽ सकैत छथि आ नञि ओ अनका सँ सम्मानक आशा कऽ सकैत छैथ।"

एक दिस जौं हमरा सबकेँ समक्ष सीताक कर्तव्य, सहनशीलता, धैर्य, आदर्श अपनेबाक लक्ष्य हेबाक चाही तऽ संगहिं अपन स्वाभिमानक रक्षाक मंत्र सेहो सीतासँ बेहतर अओर कियो नञि प्रस्तुत कऽ सकै छथि।

सुकुन



❑ *नूतन चौधरी*

"एतेक जाड़मे भोरे-भोरे चलि एलैंह सुभद्री, बड़का दिनक छुट्टी छलै, चैनसँ सुत्तऽ दैतैंह, तूहों आरामेसँ अबितै।" दुलारसँ दुत्कारैत सबिता कहलैथ कम्नाहरि सुभद्रीसँ।

"मलकाइन आईंख कहाँ लगैत छै नीक नाहित। तीन-चारिटा चदैरके साइट कऽ गदेली बनौने छी, ओहिसँ देहो नै गरमाई छै नीक नाहित, उल्टे भरि राति सिकुड़ि कऽ सुतै सँ पोर-पोर अलगे दुखाइत रहै छै। ताहि द्वारे जल्दीये उठि जाइ छी आ सोचै छी जे काम पर जल्दी चलि जाए जाहिसँ कामक धुनमे जाड़ कम लागत।" अपन धुनमे बाजैत चलल जा रहल छल सुभद्री। सबिता ई सब सुनि स्तब्ध रहि गेलीह आ करूणाक लहर उठय लागलैन्ह मोनमे। तखने किछु सोचि सुभद्रीसँ ओकर घरक पता लऽ लेलीह।

सुभद्रीकेँ सबिता ओतय पहिल जाड़ छल। सबिता जल्दी-जल्दी घरक काम निपटा मार्केट गेलीह आ सामने बैस कऽ रजाई बनबा चलि देलीह सुभद्रीक घर। रजाई देखि सुभद्री किछ बाजय ओहिसँ पहिने सबिता बाजि उठलीह, "देख नया साल आबयवाला छै, आ तोरा कहने रहियो जे नया साल पर किछ देबौ से डबल बेडक रजाई छौ, बच्चा संग सब आरामसँ सुति सकै छें।"

दोसर दिन दस बजे घंटी बाजल तऽ देखलैन्ह जे सुभद्री मुस्कराइत भीतर आबिते कहय लागल, "आइ तऽ देर धरि सुतले रहि गेली, देह एतेक गर्मा गेल जे बुझबे नै केलि कखन भोर भऽ गेलै। रजाई सँ निकलै के मोने नञि करै छल।

सुभद्रीक आँखिमे ख़ुशीक झलक देखि आइ सबिताक मोन सुकुनसँ भरि गेल, खिड़कीसँ गुनगुना धूपकेँ आबैत देखि आइ एना लागि रहल छल जे नया साल सुकुन भरल नजरिसँ हुनका निहारि रहल होए।

अपन मातृभाषाकेँ पकड़ि मेहनतिक बल पर आगाँ बढ़ैथ युवापीढ़ी

हालहिं मे आयल मैथिली सिनेमा 'बबितिया'मे दर्शकगणकेँ अपन दमदार अभिनयसँ आनंदित करयवाला बहुमुखी प्रतिभाक धनी; माईफा, श्रीकांत मंडल, जीतेन्द्र स्मृति कला आदि सम्मानसँ सम्मानित; मूलतः रंगमंचक कलाकार, सौम्य हृदय, मृदुभाषी, हँसमुख अभिनेता अनिल मिश्रा जी पूर्वमे सेहो केतेको रास हिन्दी-मैथिली सिनेमा, धारावाहिक, लघु फिल्म, नाटक आदिमे अभिनय कऽ चुकल छथि।

प्रस्तुत अछि 'अग्निपथक सामा'सँ अपन रंगमंचीय जिनगी आरम्भ कऽ दर्जनो प्रस्तुतिसँ प्रेक्षकगणकेँ रोमांचित कऽ चुकल मिश्रजीक व्यस्ततम समयसँ आभासी माध्यमे लेल साक्षात्कारक सारगर्भित अंश :-



❑ *मुकेश दत्त*

सबसँ पहिने अहाँकेँ बबितिया फिल्मक अपार सफलताक लेल हार्दिक शुभकामना।

हार्दिक धन्यवाद!

गाम, गाम सँ दरभंगा-पटना-दिल्ली-मुम्बई होइत फेर मिथिलामे वापसी, एहि यात्रक संक्षिप्त दर्शन पाठकवृन्दकेँ सेहो काराबियौन्ह?

घरसँ बाहर डेग बढ़ाबिते संघर्ष शुरु भऽ जाए अछि, कोनो यात्रामे रहिकऽ जे चीज सीखल जा सकैये से कतहु रुकि कऽ नहि। मुदा यात्रा करब आसान नहि, कतेको रास संघर्षक सामना करय पड़ैछ। से हमरो करय पड़ल, ई बात आर अछि जे सीखहो लेल बड्ड चीज भेटल। मुंबई आ दिल्ली बेसी सबक देलक। हम ओ सभ अनुभव मधुबनीमे अपन एन.जी.ओ. केर माध्यमसँ युवा सबसँ शेयर कऽ हुनका सबकेँ समृद्ध करबा मे लगा रहल छी।

रंगमंचसँ टेलीवीजन आ फेर सिनेमा धरिक सफल केहन रहल?

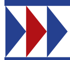


रंगमंच पूर्णतः अभिनेताक मीडियम छै, ओहिठाम अभिनेताकेँ पूर्ण स्वतंत्रता छै खेलेबाक, खुलिकऽ अभिनय करय लेल। परञ्च टेलीफिल्म आ कि फिल्म करैत काल बहुतरास टेक्नीकल मामिलाकेँ ध्यान राखय पड़ैत छै। कखनो केओ टोकि दैत छै, तऽ कखनो लाइटमैन वा कैमरामैन आ डायरेक्टर तऽ सहजहिं। एहिमे अभिनेताक flow टूटैत रहैत छै।

अहाँ पूर्वोमे धारावाहिक, लघुफिल्म, टेलीफिल्म, सिनेमा आदिमे अभिनय कऽ चुकल छी, ओकर अनुभव केहन रहल अछि?

इएह जे कलाकारकेँ खुब अनुशासित, मेहनती आ आर्मी जकाँ अलर्ट रहबाक चाही आ हर तरहक रोल करयमे सक्षम हेबाक चाही।

अहाँ मातृभाषा मैथिलीक अलावे हिन्दीमे सेहो अभिनय केने छी। मातृभाषा (लोकभाषा) आ



राष्ट्रभाषा दूनूमे अभिनय करैत काल अपनाकेँ कि अन्तर बुझाइत अछि?

हिन्दीमे काज करैत काल टोन आ उच्चारणक बड्ड ध्यान राखय पड़ैत छैक, जखनकि अपन मातृभाषा मैथिलीमे एहि सभ बातक कोनो डर नञि। निधोख भऽ काज करै छी आ आनंदित होए छी। मुदा सीखबा लेल हिन्दीमे बेसी भैटेत अछि।

अहाँ अपनाकेँ कोन क्षेत्रमे सहज मानैत छी रंगमंचमे, छोटका परदामे वा बड़का परदामे?

सहज तऽ कोनो माध्यम नहि। दूनूक अलग तरहक चुनौति अछि, तैयो हमरा रंगमंच बेसी कठिन बुझाइत अछि, किएक तऽ ओहिठाम भूलचूक लेल माफी नै छै। No retakes in plays.

विभिन्न निर्देशकक संग काज करबाक अनुभव केहन रहल? कोन निर्देशक अहाँकेँ बेसी प्रभ. ावित केलैन्ह?

काज करबा लेल तऽ हिन्दी रंगमंचक क्षेत्रमे देश-विदेश मे चर्चित रंग-निर्देशक देवेन्द्रराज अंकुर, भानू भारती, प्रेम मतियानी, बापी बोस, सुरेन्द्र शर्मा, आसिफ अली... हिनका सभहक संग काज करबाक सौभाग्य प्राप्त अछि। अओर हिन्दी सीरियल-सिनेमाक क्षेत्रमे संजय खान, केतन मेहता, रंजन सिंह, प्रतीक शर्मा सन नामचीन निर्देशकक संग काजक अनुभाव अछि। अपन मैथिली रंगमंचमे कुमार शैलेन्द्र, किशोर केशव, कुणाल जी, प्रकाश झा, मुकेश झा आ संजय चौधरी बेसी प्रभावित केलैन्ह। तहिना मैथिली सीरियल आ सिनेमाक क्षेत्रमे अनूप कुमार, भवेश नंदन आ बालकृष्ण झा आ प्रतीक शर्माजीक जवाब नहि।



अहाँ रंगमंच आ सिनेमामे अभिनयक वर्कशॉप सेहो कराबैत छी, ओकर अनुभव केहन रहल अछि?

हमरा बूझैत हमर काज खाली एक्टिंग केनाए नहि अछि, कला-संस्कृतिक प्रति संवेदना शून्य समाज आ लोक सबकेँ जगेनाय आ बदलनाय सेहो अछि, तैं अपन एन.जी.ओ. केर माध्यमसँ नवतूरकेँ समृद्ध करबाक प्रयास रहैत अछि।

अभिनेताकेँ अपन कएल सभ काज/अभिनय नीक लगैत अछि, तैयो अहाँकेँ अपन कएल कोन अभिनय सर्वश्रेष्ठ लागैत अछि?

रंगमंच पर संजय चौधरीजीक निर्देशनमे मंचीत दू नाटक 'नहि लागय दुज्जन हासा'मे राजा शिवसिंह आ 'राजा सलहेस'मे सलहेसक भूमिका अओर 'मुक्ति पर्व', 'ओरिजनल काम'क सफीक, 'बड़ा नटकिया।



संक्षिप्त परिचय

जन्मदिवस - 07/01/1981

पैतृक निवास - यदुपट्टी (चौरोत) सीतामढ़ी

माताक नाम - रामदुलारी देवी

पिताक नाम - गंगा मिश्रा

बहिन - रश्मि रानी



पत्नी - रिंकी मिश्रा

बेटा - लकी राजन

बेटी - सिल्की रानी

शिक्षा - स्नातक (Dramatics)

सम्मान - माईफा दरभंगा (2013), श्रीकांत मंडल (2016), जीतेन्द्र स्मृति कला सम्मान (2020) सुपौल

रूचि - पढ़नाय, गीत-संगीत सुननाय, घूमनाय, फिल्म देखनाय

प्रथम रंगकर्म - अग्निपथक सामा (1999) चेतना समिति, पटना

प्रथम सिनेमा - गरीबक बेटी (2004)

पसंदीदा कलाकार - दिलीप कुमार, संजीव कुमार अमिताभ बच्चन

अभिनीत रंगमंच - मैथिली मे : अग्निपथक सामा, मुक्ति पर्व, जल डमरु बाजे, ओरिजिनल काम, बड़ा नटकिया कौन, गाम नै सतुइये, नहि लागै दुज्जन हासा, राजा सहलेस, मैथिल नारी चारि रंग, अमली, जमुनिया आदि।

हिन्दी मे : सबसे उदास कविता, मुआवजे, ताजमहल का टेण्डर, रंग कोलाज, हीरक जयंती, कभी लक कभी चांस, अंतर्नाद, सदाचार या भ्रष्टाचार, अंधा युग, रोमियो जूलियत, , सौक्रेटिस, गुण्डा, गदल, रामलीला प्रसाद आदि ।

लघुफिल्म - दिल तो है दिल, पोंगा पंडित, D.S.P पुरवैया

टेलीफिल्म - सशक्त, बीस हाथ, नक्सली

सिनेमा - गरीबक बेटी, एक चुटकी सिंदूर, सिंदूरादान, शादी ब्याह, चट मंगनी पट भेल ब्याह, छुटत नहि प्रेमक रंग, डमरु उस्ताद, बबितिया, लोटस ब्लूम्स (भाषा हिन्दी/मैथिली द्वय)

आबयबला फिल्म - लोटस ब्लूम्स (भाषा द्वय-हिंदी आ मैथिली दूनू मे)



कौन', 'अमली' आ 'रामलीला'मे परशुराम केर भूमिकामे बेसी प्रशंसा भेटल। तहिना सीरियल आ सिनेमामे 'स्वर्ग नै बिनु मुइने', 'एस.एन. झा के गजबे दुनिया', 'सशक्त', 'एक चुटकी सिन्दुर', 'डमरु उस्ताद', 'बिंदेसरा बी.ए. पास' एहि सभहक काजकेँ बेसी नोटिस भेल।

'मंच कोनो होए, कलाकारक अभिनय हुनका आन कलाकारसँ फराक करैत अछि।' अहाँकेँ एहि विषयमे की कहब अछि?

निश्चिते नीक अभिनेता मंच पर अलगे देखाय छथि, जेना तरेगनसँ भरल आसमानमे धुव्रतारा अलग देखाय छैक।

मैथिली रंगमंचसँ फिल्म दिश मुखर भेल युवा अक्सर अपन मातृभाषासँ दूर भऽ जाइत छथि। अहाँ एकरा कोना देखैत छी?

हमरा बूझैत ओ सभ हीनभावनासँ ग्रस्त भऽ एना करय छथि हुनका सबकेँ अपन मातृभाषाक पावर नञि बूझल छैन्ह।

रजनीकांत, कमल हासन, श्रीदेवी, चिरंजीवी आर बहुत रास कलाकार पहिले अपन क्षेत्रीय भाषामे काज करैत जगजिआर भैलैथ तखन हिंदी मे।









अहाँक भविष्यक की योजना अछि?

आजीवन अभिनेताक तौर पर माए मैथिलीक सेवा करब आ अपन एन.जी.ओ. गंगतरंग फाउंडेशन (जकर हम सचिव आ फाउंडेर सेहो छी) केर माध्यमसँ समाजमे युवा सबकेँ प्रशिक्षित कऽ कला आ संस्कृतिक प्रति अलख जगौने रहब।

अहाँ मैथिलीक फिल्मक भविष्य केहन देखैत छी?

नीक भविष्य अछि किएक तऽ मिथिला मखानकेँ नेशनल अवार्ड भेट चुकल अछि। एकटा आर फिल्म 'गामक घर'केँ सर्वत्र प्रशंसा भेटल आ खूब चर्चित रहल। आबय बाला एकटा आर फिल्म जे कि हर तरहेँ मंजगूत फिल्म अछि आ अंइखगर निर्देशक प्रतीक शर्मा द्वारा निर्देशित अछि, हमहुँ छी ओहि फिल्ममे, फिल्मक नाम अछि 'लोटस ब्लूम्स'। ... तैं हम आश्वस्त छी जे भविष्य नीक अछि मैथिली फिल्मक।

अहाँ हिसाबे मैथिली फिल्म वा रंगमंच केर व्यवसायीकरणमे की बाधक अछि?

कहबी छै 'किछु लोहक देख आ किछु लोहारक सेहो'। परप्रांतवासीक वनिस्पत मैथिल दर्शकमे अपन सिनेमा आ नाटकक प्रति टिकट कीनबामे जागरूकताक अभाव अछि। ओ ई बात पता नै किएक नहि बूझय छथिन्ह जे नाटक आ सेनमा रूपेँ कलाकार सभहक रोजी-रोटी जुड़ल छैक, परञ्च अपन मजबूत प्रस्तुतिसँ दर्शक सबकेँ टिकट कीनबा लेल हमसभ विवश अवश्य कऽ सकैत छी।

'मिथिलांगन' रंगमंचसँ सेहो अहाँ जुड़ल रहलौंह ओ अनुभव केहन रहल अछि? एहि पत्रिकाक माध्यमे नव रंगकर्मी लेल किछ संदेश।

मिथिलांगन रंगमंचसँ जुड़बाक अनुभव अद्भुत आ अविस्मरणीय रहल। एहि संस्थांक सदस्य सभहक आपसी प्रेम आ सामंजस्य देखि हमर आत्मा जुड़ा गेल, मिथिलांगन संस्था नञि परिवार थिक।



हमरा एतय रंगमंच पर एखन धरि सर्वश्रेष्ठ पात्र 'राजा शिवसिंह' आ 'राजा सलहेस' केर भूमिका प्रदान कएल गेल, एहि लेल हम मिथिलांगन आ संजयजीक प्रति हृदयसँ आभार प्रकट करैत छी।

संयजजी बड्ड पारखी आ अंइखगर निर्देशक छथि। हुनका स्क्रिप्ट, गीत, संगीतक खुब नीक समझ छैन्ह। काश कि संजय जी मैथिली फिल्मक निर्देशक रहितैथ, एखन धरि कतेको म्यूजिकल हिट फिल्म दऽ चुकल रहितैथ। मिथिलांगनमे सुंदरम जीक गीत-संगीत आ गायनक हम बड्ड पैघ प्रशंसक छी।

2019मे वर्कशॉप करबाक रहै, मैथिली-भोजपुरी अकादमी दिससँ बच्चा सभहक वर्कशॉपमे मिथिलांगन परिवारसँ हमरा बड्ड मदति भेटल रहल। राजेश भाए, निर्भय सर आ संजय सर अपन लिखल स्क्रिप्ट देलैन्ह तखन ई वर्कशॉप पूरा भेल। अभय सरसँ बेसी प्रेम भेटै छल, ओ बड्ड मन पड़ैत छथि। अहाँ स्वयं मित्रवत छी, अहुँ सँ बड्ड जुड़ल महसूस करैत छी। खुब स्नेह-प्रेम अछि अहाँ सब संग।

रहल संदेशक बात तऽ, रंगकर्मी सबकेँ इएह संदेश अछि जे ओ सभ संभावनाशील छथि, मेहनतिक बल पर आगाँ बढ़ि सकैत छथि परञ्च आगाँ बढ़ि अपन मातृभााकेँ नञि बिसरथि, किएक तऽ गाछ अपन जड़िकेँ कहियो नै बिसरैछ आ जौं बिसरत तऽ की गाछ ठाढ़ रहि सकत?

बीहनि कथा : एकटा क्रांतिकारी साहित्यिक विधा



❑ डॉ. प्रमोद कुमार

आवश्यकता आविष्कारक जननी होइछ, ई हमरा सबकेँ पढ़ाओल गेल अछि। जे कि सत्यो छैक। तहिना साहित्य समाजक दर्पण होइछ सेहो सत्य छैक। संगहि समयक परिवर्तनशील भेलाक कारणेँ समय आ सामाजिक क्रियाकलाप केर बीच सामंजस्य बना कऽ रखनाय अति आवश्यक। कारण, समयक संग सामाजिक व्यवहार ओ संस्कार बदलैत रहैत छै। जौँ बदलैत सामाजिक संस्कारक परावर्तन साहित्यमे नञि हेतैक तऽ साहित्य अप्रासंगिक भऽ मरि जेतैक।

आइ साहित्यक स्थिति लगभग सएह भऽ गेल अछि। जीवन आब ग्रामीण नञि रहि शहरी भऽ गेलैक। पहिने क्यो-क्यो पढ़ल लिखल होइत छलाह मुदा आब अधिकांश लोक पढ़ल-लिखल छथि। पढ़वा-लिखवाक साधनो विविध उपलब्ध अछि। टीवी, समाचारपत्र, इंटरनेट आ मोबाईल फोन आदि सर्वसुलभ आ सस्ता होइएक संगे तत्क्षण उपलब्ध अछि। जीवन अति क्रियाशील आ गतिशील भऽ गेल अछि। एहन स्थितिमे मोटका पोथी वा पत्रिका पढ़नाय नै संभव अछि आ नै ओकर इच्छा। लोक एक-आध पन्नाक कथा सहो पढ़य नञि चाहैत छथि। एहनमे साहित्य की करय? प्रश्न तऽ बड़ कठिन अछि। तैँ ओकर समाधानो ओहने प्रभावी होएबाक चाही।

एहि दिशामे आइसँ लगभग बीस साल पहिने किछु जागरूक युवा साहित्यकार लोकनि क्रांतिकारी कदम उठौलैन्ह। परिणामस्वरूप 'बीहनि कथा'क जन्म भेल। ई एकटा एहन सशक्त विधाक रूपमे सामने आएल जे एकटा सुगठित शिल्पवला आ एकटा नीक कथाक सब गुण अपनामे समाहित केने छल। एकरामे शिल्प, कथ्य, वातावरण, संदेश तऽ रहिते अछि, मुदा सबसँ महत्वपूर्ण गुण होइछ एकर उपसंहार। एकरा तेहन रूपेँ समाप्त कएल जाइत अछि जे पाठकक जिज्ञासा बनले रहैत छैन्ह जे आगाँ की भेलै, इएह एकर सफलता थीक। चूंकि ई एकटा बीहनि कथा छियै, अबोध कनकिरबा छियै, ई आगाँ बढ़तै, तैँ जानि बूझि कऽ आगाँ बढ़बाक संभावनाकेँ बनल रहय देल जाइत अछि। एहि विधाक किछु निश्चित नियम छैक। सबसँ महत्वपूर्ण जे एकरा एक निश्चित शब्द सीमाक भीतर लिखबाक बाध्यता रहैछ। ओना कथाक खगते, किछु छूट लेल जाइत अछि। तैँ एकरा लिखबामे अत्यधिक दक्षताक खगता होइत अछि जे ओहन लोककेँ स्वतः रोकि दैत छैक जे ओनाहियेँ किछु लिखि ओकरा लघु कथा वा आर किछु नाम दऽ छलबैत छथि। विधा कोनो होए जौँ ओ साहित्यक विकासमे सहायक अछि तऽ ओकर स्वागत होएबाक चाही। मुदा नञि, किछु गोटेक पेट हुरहुराय लगलैन्ह, जेना कहानीकार, कवि, आलोचक, समालोचक, नाटककार आदि सब साहित्यक विकासमे अपन-अपन योगदान दऽ साहित्यकेँ समृद्ध करैत छैथ, तहीना बीहनि कथा लेखक सहो करैत छथि। हुनक स्वागत होएबाक चाही, मुदा नञि, किछु विद्वान लोकनिकेँ ई मंजूर नञि छैन्ह। जेना गैलिलिओकेँ एहि सत्यक उद्घाटनक लेल जे पृथ्वी गोल छै, फाँसी पर लटका देल गेलैन्ह। बीहनि कथा लेखकक संग प्रारंभमे ओहने स्थिति छल। मुदा किछु नीक आ समर्पित कथाकारक प्रयाससँ आब स्थिति सुधरल अछि। एतय किछु नामक उल्लेख भेनाय हम उचित आ उपयुक्त बुझै छी। जेना श्री घनश्याम घनेरो, श्री मनोज कर्ण, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. रमानंद झा 'रमण', सच्चिदानंद सच्चु, आशीष अंचिन्हार, डॉ. आभा झाक नाम विशेष रूपसँ लेल जा सकैत अछि। हालहिं मे प्रकाशित बीहनि कथा संग्रह 'कनकिरबा' केर महान साहित्यकार आ साहित्य आकदमी पुरस्कारसँ सम्मानित द्वय श्री उदयचंद्र झा 'विनोद' आ डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा एकर भूरि-भूरि प्रसंशा केलैन्ह आ स्पष्ट शब्दमे कहलैन्ह जे एहि विधा पर आब हिनकर सभहक विश्वास बढ़लैन्ह अछि आ एकर भविष्य अति उज्ज्वल देखाइत छैन्ह। तैँ 5 मार्च 1995 कऽ ई विधा जन्म लऽ आइ एहन मोकाम पर पहुँचि गेल अछि जतय एकरा विषयमे सब चर्च करैत छथि आ जे सब एकर विरोध करैत छलाह ओहो सब एहि विधामे लिखि अपन लोकप्रियता बढ़ा रहल छथि। तखन इहो देखयमे आबैत अछि जे किछु गोटे एकरा चुटकुला बुझि लिखैत छथि तऽ केओ लघुकथा तऽ केओ-केओ तऽ कोनों प्रसंग मात्र। ई एहि विधाक लेल घातक हैत। एहि प्रवृतिकेँ रोकनाय आवश्यक, नञि तऽ ई विशिष्ट विधा अपन बाट बिसरि कतहु कैँ नञि रहत।

अबिहें बौआ

चितामे आगि धुधुआइत रहय। सभहक एक्के मत 'बुच्ची काकी बड़ भाग्यवान छलखिन। मुखाग्नि देबा लऽ बेटा आबि गेलखिन्ह।' एमहर रतनकेँ रहि-रहि कोंढ़ फटैन्ह, आँखि मुना जाइन्ह। सोचय लगलाह दसे दिन पहिने फोन पर माएसँ बात भेले छल।

"बौआ रौ अहि बेर छैठ मे आ ने! कतेक वर्ष भऽ गेलौ! सभहक बेटा अबै छै एकटा हमरे नञि!"

"नञि-नञि एहि बेर अएबे करबौ।"

"हँ बौआ! अबिहें अवश्ये! कोन ठेकान! आब जीयब कि...!"

"माए! एना किएक सोचौ छैं! हमसभ अएबे करबहु!"

"हँ बाबू, आउ!"

"गोर लगै छियौ।"

"जुग-जुग जीबू!"

फ्लाइट छुटि गेलैन्ह, माएकेँ फोन केलाह।

"बुच्ची काकी एतबे बजलीह, 'सब बेर एहने बहन्ना...' आ गरदनि टेढ़ भऽ गेलैन्ह।" पनिभरनी कहलक।

बीहनि कथाक विकासमे रचनाकारक योगदान



❑ मनोज कर्ण 'मुन्ना जी'

खगता सृजनक आधार होइछ। तकरे पूर्ति लेल गद्यक विकास क्रममे जुड़ल बीहनि कथा। सब पीढ़ीक नवका पीढ़ी, नव खगता पूर्ति लेल नव विचार लऽ सोझां अबैए। कथा विकासक क्रममे उपन्यास (Novel) आ लघु कथा (कथा/गल्प, Short stories)क पछाति अपन भाषा साहित्यमे कथाक परिष्कृत आ आधुनिक रूपमे एकटा स्वतंत्र विधाक खगता भेल, जकर खोराक थिक बीहनि कथा।

बीसम सदीक अन्तिम दशकमे तत्कालीन नवका पीढ़ी कान्ह उठेलैन्ह, संग एलाह साहित्यक अग्रज पीढ़ीक किछु अभिभावकीय दायित्वबला रचनाकार। एहि तरहक अवधारणााक परिकल्पना जुलाई 1991मे पैटघाटमे भेल कथा गोष्ठीसँ प्रेरित भऽ सोझाँ आयल। एकरा मौखिक सहमति आ बल देलैन्ह - डॉ. धीरेन्द्र आ जीवकान्तजी। करीब तीन-चारि बरिख धरि एहि पर विमर्श/घमर्थन चलैत रहल। पछाति 05 मार्च 1995कें सहयात्री मंच लोहना (मधुबनी)क सामुहिक बैसारमे सर्वसम्मतिसँ स्वतंत्र विधाक मूर्त रूपमे सोझां आयल- 'बीहनि कथा' आ ओहि चारि वर्षक बीच भेल घोंघाउजसँ निष्कर्षतः जे नाम निश्तुकी भेल ओ नामकरण कर्ता भेलाह श्रीराज। एहि बैसारमे उपस्थित छलाह- श्रीराज, शैलेन्द्र आनन्द, डॉ. बी. के. लाल, ललन प्रसाद, अमल झा, कुमार राहुल, विजयानन्द हीरा, सच्चिदानन्द सच्चू, करणजी, अखिलेश्वर झा, अतुलेश्वर झा आ हम स्वयं।

एहि निर्णयक पछाति एहि दिशामे पहिल काज भेल 12 मार्च 1995कें बीहनि कथाक पाठ आ विमर्श संगहि एहि विधाक भावी प्रारूप पर चर्चा। एकरा एक डेग अओर आगाँ बढ़बैत 20 मार्च 1995कें हटाढ़ रूपौली, झंझारपुर (मधुबनी)मे पहिल 'बीहनि कथा गोष्ठी' मलयनाथ मिश्र 'मण्डन' जीकें संयोजनमे भेल।

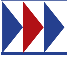
आब अग्रजसँ अनुज धरि उत्साहित भऽ बीहनि कथा लिखय लगलाह। प्रारम्भमे हिन्दीक चिलका लघुकथा आ बीहनि कथामे नामहिक अन्तर छल। ओहि तथाकथित लघुकथासँ बीहनि कथाकें फुटेबा वा स्वतंत्र अस्तित्वमे एबामे करीब डेढ़ दशक संघर्षरत रहय पड़ल।

1995सँ किछु रचनाकार बीहनि कथाक लेखन आ कथा गोष्ठीमे निरन्तर पाठ करब शुरू केलैन्ह, जाहिमे प्रमुख छलाह- विजयानन्द हीरा, कुमार राहुल, मलयनाथ मिश्र, सचिदानंद सच्चू आदि आ हम स्वंय। ई स्थिति करीब सन् 2000 धरि यथावत रहल। तकर पछाति भहरव/भसड़ब शुरू भेल, किएक तऽ गोटा-गोटी ई रचनाकार सब जतय-ततय छिड़िया गेलाह। कियो अग्रिम शिक्षा लेल तऽ कियो रोजगारक खगता पूर करबा लेल। 2000इ. सं 2009 धरिक सांच कहब तऽ हँसी लागत जे श्रीराजक अतिरिक्त एकरा उघि आगाँ लऽ जाएबलामे हम एकसरूआ बाँचल छलौंह। एहि एक दशकक खालीपनमे 2003मे श्रीराजक पहिल बीहनि कथा, बीहनि कथा नामे छपल जनकपुर, नेपालसँ प्रकाशित मैथिली साप्ताहिक 'गाम-घर'मे। एहि बीच किछु अओर रचना आ आलेख छपल तऽ मुदा संपादकक अज्ञानता, पुर्वाग्रह वा हठधर्मिताक कारणें उधारक, तथाकथित विधा लघुकथा नामे यथा- नवतुरिया, कानपुर; मिथिलांचल संपर्क, दरभंगा; पल्लव, नेपाल.. आदिमे।

जुलाई 2010मे कबिलपुर (दरभंगा)मे भेल कथा गोष्ठीमे मैथिली नवजागरणक अग्रदूत श्री गजेन्द्र ठाकुर हमर बीहनि कथा पाठ पर प्रतिक्रिया दैत कहलैन्ह, "बीहनि कथा, मैथिली कथा साहित्यक परिमार्जित, निश्शन आ समयानुकूल अवधारणा अछि।" जे एकरा सबलता देलक। तकर पछाति हुनक संपादनमे प्रकाशित मैथिली ई पाक्षिक विदेहक माध्यमे बीहनि कथा लेखकक एकटा हुजुम ठाढ़ भेल। जाहिमे वर्तमान मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक योगदान अविस्मरणीय अछि। हुनका अलावे शेफालिका वर्मा,रविभूषण पाठक, उमेश मण्डल, बेचन ठाकुर, विनित उत्पल, रामविलास साहु, जगदानन्द झा मनु, कपलेश्वर राउत, अमित मिश्रा, संदीप साफी, आशीष अनचिन्हार, डॉ. भवनाथ झा,जवाहर लाल कश्यप, मुन्नी कामत, चन्दन झा, बिन्देश्वर ठाकुर, ओम प्रकाश झा, मनोज कुमार मण्डल...आदि रचनाकार बीहनि कथा विधामे अपन उपस्थिति बनौने रहलाह। जाहिसँ ई सबल होइत रहल।

बीहनि कथामे सक्रिय सब रचनाकारक निरन्तर लेखनीक परिणामे संग्रह सब आबय लागल। एहि विधाक पहिल संग्रह देनिहार लेखक छथि श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, हिनकर 'तरेगण' नामे अक्तुबर 2010मे बहरएल पहिल बीहनि कथा संग्रह, जकर तीन संशोधित संस्करण बहरा चुकल अछि। हिनक दोसर बीहनि कथा संग्रह अछि 'बजन्ता - बुझन्ता'(2013) तकर पछाति हमर, कपिलेश्वर राउत, संदीप साफी, राम विलास साहु आदिक कतेको एकल संग्रह बहरएल।

बीहनि कथाक दूटा महत्त्वपूर्ण कथाकारक पदार्पण 2014मे भेल। पहिल, आठम दशकक चर्चित आ वरिष्ठ कथाकार आदरणीय घनश्याम घनेरो अओर दोसर, नवतुरिया रचनाकार श्री विद्याचन्द्र झा 'बम-बम' जीक। घनश्यामजी अपन चोखगर कलम आ फरिछएल विचारें जन-जनमे बीहनि कथाक प्रति जिज्ञासा जगौलैन्ह आ लोकक ठोढ़ पर बीहनि कथा शब्द साटि सन देलैन्ह, हिनक पहिल बीहनि कथा संग्रह 'उपरान्त'(2016)मे आयल।



बम-बमजी अपन समतुरियाक अनेको अवरोध/बाधा सहि आत्मविश्वासक संग आगाँ बढ़ैत एहि सात बरखमे करीब चारि सएसँ बेशी रचना एहि विधामे केलैन्ह। जाहिमे करीब 200सँ बेसी प्रेम परक रचना छैन्ह। तीन गोट पोथी प्रकाशनक बाट जोहै छैन्ह।

2015ई. मे मिसिदा आ कल्पना झा दूनू प्रबुद्ध रचनाकारक प्रवेश एहि विधामे भेल। मिसिदाक प्रत्येक रचना गहींर आ गम्भीर नजरिये पड़ताल करैत निछरल/निश्शन बनौलैन्ह। कल्पनाजी, अपन फरिछएल आ निश्शन उपस्थिति दैत कतेको लेखिकाकेँ निर्देशित करैत सोझां आनलैन्ह, हिनक बीहनि कथाक एकल सङोर सेहो अबैया छैन्ह।

वर्ष 2015 बीहनि कथा लेल ग्रहसँ ग्रसित सन छल। किछ स्वघोषित विद्वान कहेबाक भ्रमसँ ग्रसित अग्रज कथाकार अपन विक्षिप्तावस्थासँ प्रभावित भऽ कतेको रचनाकार बीहनि कथासँ स्वयंकेँ विलगा लेलैन्ह। ई स्वघोषित विद्वान बीहनि कथाकेँ रोकबा लेल अगिया बेताल भऽ गेलाह। मुदा ओ कर्म (जाहिमे कु उपसर्ग लागल छल)केँ फल धुँआ-धुँआ भऽ उड़ि गेल। आब ई विधा अपन रंगत पकड़ि लेने छल। चारू भऽर सबतुरिया लेखक एहि विधामे तल्लीन भऽ गेलाह, जे निःस्वार्थ लेखन करथि से अटल आ डटल छथि। 2016मे नव प्रवेशी भेलाह- राजीव कर्ण, महाकान्त कामत, नीरज कर्ण, इन्द्र कान्त लाल, अरूण कुमार लाल हिनका सबहक प्रयाससँ ई विधा अओर आगाँ बढ़ल।

2019मे मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय बीहनि कथा सम्मेलन' रचनाकारक दृष्टि फरीछ आ नव बाट पर चलबाक श्रेष्ठ साधनक रूपेँ सहयोगी भेल। एहि आयोजनक पछाति एहि विधाक रचना सृजनक उत्सुकतावश रचनाकारक एकटा हुजुम ठाढ़ भेल। एकर सब पक्षकेँ अकानैत डॉ. आभा झा, सोनी नीलू झा, धर्मवीर कुमार, सबिता झा सोनी, अमरेश चौधरी, सान्त्वना मिश्रा, डॉ. प्रमोद कुमार, मिन्नी मिश्र, डॉ. रॉबिन खान, पूनम झा, डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, मोहन झा गगन, राम कुमार मिश्र, अमरकांत लाल, प्रभाष अकिंचन, विनीता ठाकुर, ज्ञानवर्द्धन कंठ, वीरेन्द्र झा आदि रचनाकार जुड़िकेँ/जुटिकेँ एकर तत्कालीन स्थिति आ अस्तित्वकेँ अओर निश्शन, फरीछ आ सुरेबगर बना आगूक बाट प्रशस्त केलैन्ह। आब विश्व भरिमे पसरल मैथिल रचनाकार जन द्वारा सृजित आ चर्चित भऽ रहल अछि।

2020 वैश्विक संकटसँ दबल लोक घरेमे बन्न रहि समय कटबा पर बाध्य छल। ओहि समयक उपयोग करैत एहि विधाक रचना आ सृजनकर्ता दूनूक श्रीवृद्धि एकरा अओर भरल-पुरल बनेलक।

आनो विधाक सृजन आसान नै, मुदा विनाशक कोनो बन्हन नै रहलासँ लिखबा मे तरऽदुत नै। बीहनि कथामे शब्द सीमा निर्धारित रहलासँ एकर सृजन कने बेसी दुरूह। एक्कोटा अतिरिक्त शब्द भातमे आंकड़ सन। तेँ एहि विधामे उएह ठठै, बढ़ै छथि जे अपनाकेँ परिश्रम बलेँ एकर विधानक योग्य स्वयंकेँ सधबामे सक्षम होए छथि। जाहि कारणेँ ई विधा एखन निश्शन भऽ उच्च मानकताक संग आगाँ बढ़ि रहल। ओना आगाँ दसगरदा भेने इहो ओहोन रोगसँ ग्रसित भऽ जएत से असंभव नै।

2020 'घरेमे रहू'केँ आह्वान बीहनि कथा विधा लेल सकारात्मक रहल। एहि बीच नव आँखि-पाँखिबला रचनाकारक प्रवेश भेल जेना- अभिलाषा मिश्र 'आकांक्षा', रूचि स्मृति, सुभाष कामत, गुफरान जिलानी, कंचन कंठ, कुंदन कर्ण, चन्दना दत्त, प्रियंवदा तारा झा, अनिता मिश्र, इरा मल्लिक, कल्पना झा (पटना), कल्पना झा (बोकारो) आदि।

कुल मिला कऽ कुशल/साधल रचनाकारो संग नव सिखुआ रचनाकारक उपस्थिति आ रचनात्मक सक्रियता सुखद भविष्यक संकेत अछि। एहि बीच मोकामक बाटकेँ अओर सघन-सबल बनेबा दिस जिनकर उल्लेखनीय योगदान रहलैन्ह ओ दूटा प्रमुख नाम अछि- डॉ. आभा झा, दिल्ली आ डॉ. प्रमोद कुमार, पांडिचेरी। हिनकर बानगी अछि 2020ईक अन्तमे आयल डॉ. आभा झाजीक बीहनि कथा संग्रह 'सिनेहक दाम' आ डॉ. प्रमोदजीक 'कनकिरबा'।

बीहनि कथाक बढ़ैत डेग आ विकास वा पसारक क्रमकेँ किछु निश्शन संपादक, लेखक,आलोचकक उपस्थिति सुखद अछि। आदरणीय डा. रमानन्द झा 'रमण' आ उदयचन्द्र झा 'विनोदजी'क समीक्षकीय विचार आ आदरणीय सतीरमण झा, रेवती रमण झा अओर डॉ. नारायणजीक प्रायोगिक रूपेँ एहि विधामे उपस्थिति एहि विधा, रचना आ रचनाकार सबकेँ सबलता देबामे अग्रसर भेल। बीहनि कथा विधाकेँ स्थापनामे प्रत्यक्ष/परोक्ष रूपेँ सहयोगी सब रचनाकारककेँ शुभकामना!

विआहक चिट्ठी

"सबटा फोटो आ विडियो हिलसगर, हमरा सबकेँ वर पसिन्न छथि।" - कञियागत कहलैन्ह।

"कञियाक विडियो देखि हुनक मॉडर्न एक्सप्रेशनकेँ हमसभ एप्रिसिएट करैत वैवाहिक स्वीकृति देलहुँ, मुदा...!" वरागतक स्वीकृतिक स्वर!

-मुदा की, कहू ने?

-कञिया-वरक विडियो कन्फ्रेन्सिंग भऽ जाइत तऽ... लॉन्ग कनेक्टिविटी बुझू!

- ओ ततेक बिजी रहैछ जे कॉल स्वीकारे नञि करैछ, गप मेल चैटिंगसँ मात्र होइछ!

- ओ... तऽ मेल चेक करू नऽ!

- आईं..!

- लूसीक डैडी, की भेल यौ!

- बाजू, बाजू ने! की लिखने अछि? पढ़ियौ ने!

"डैडी, 14 फरवरीकेँ चर्चमे क्रिस संग हमर रिंग सेरेमनी अछि। तकर पछाति हम सब हनीमून पर सिंगापुर चलि जएब। समय निकालिकेँ अहाँ सब आशीर्वाद दऽ जैतौंह!" -अहींक लूसी।

बीहनि कथाक आजुक परिप्रेक्ष्यमे उपादेयता



❑ डॉ. आभा झा

परिवर्तन संसारक नियम अछि। बदलैत समयक संग लोकक आवश्यकताक स्वरूप बदलैत अछि आ तदनुसार ओकर प्राप्तिक साधन सेहो। ई आवश्यकता मात्र भौतिकेटा नञि मानसिक, बौद्धिक आ भावनात्मक सेहो होइत अछि आ ओकर पूर्तिक साधन मनुष्य साहित्यक मध्य ताकैत अछि। ई साहित्य मूलतः गद्य, पद्य वा दृश्य तीन रूपमे पाओल जाइत अछि। साहित्यकारक सूक्ष्म दृष्टि, गहन अनुभूति आ विचारक आलोड़न जखन कल्पनाक संग झंकृत होइत अछि। कोनो बंधनक बिना सहज रूपेँ अभिव्यक्त होइत अछि तखन गद्य साहित्यक सृजन होइत अछि।

गद्य साहित्यक अनेक भेदमे कथाक विशिष्ट स्थान अछि। परञ्च आइ हमर विवेच्य विषय अछि- 'बीहनि कथाक आजुक परिप्रेक्ष्यमे उपादेयता'।

छोट सनक कथाक आवश्यकता किएक? खेतमे लहलहाइत धानक फसलि छाड़ि ओकर बीहनिक अन्वेषण किएक? भरल बखारी छोड़ि छोट सनक स्टीलक डिब्बा चुनब कोनो बुद्धिमानी तऽ नञि?

एहि सभ तरहक प्रश्नक उत्तर मे हम एतबहि कहय चाहब जे सभ विधाक, साहित्यक सभ उपादानक अपन-अपन महत्त्व अछि। आवश्यकतानुसार आ रुचिक अनुरूप ओकर चयन कएल जा सकैत अछि।

जौँ लोकक समक्ष साहित्य पढ़बाक अवसर नञि होए, पेटक आगि मिझयबा लेल कोल्हुक बड़द बला स्थिति होए वा उच्च महत्वाकांक्षाक प्राप्ति लेल यन्त्रवत् जीबाक स्थिति होए, गहूमक उपजाक लिलसा मे गुलाबक कलीक बिनु फुटने मुरझयबाक स्थिति होए। एहन स्थितिमे जिम्मेदार लोकक कर्त्तव्य होइत अछि जे व्यस्त-सँ-व्यस्त लोकक सोझाँ ओकर साहित्यिक पिपासा शान्त करबा लेल एक घोंट ठंढा पानि राखि देल जाए? ओकर तृषित-बुभुक्षित मन पूर्णतः आश्वस्त होए वा नञि, मुदा किछु सीमा धरि प्रफुल्लित अवश्य हेतै। एहन स्थितिमे बीहनि कथा अपन अत्यल्प संक्षिप्त कलेवरक कारण लोकक लेल उपयोगी आ ग्राह्य अछि।

युग परिवर्तनक संग पाठकक मनोदशामे परिवर्तन भेलै अछि। आब यथार्थाधारित कथा पसिन्न कएल जाइत अछि। बीहनि कथा अहू मानदंड पर अपनाकेँ स्थापित करबाक कारण लोकक मोन छुबैत अछि, किछु चिंतन करबा लेल प्रेरित करैत अछि। चिंतनक संग किछु प्रतिकारक लेल सन्नद्ध करैत अछि। हँ, ई गप अवश्य जे बीहनि कथा लेखक कथावस्तुक चयन, अपन अभिव्यक्तिक बोधकता आ विषयोपस्थापनक अभिनव शैलीसँ पाठकवर्गक अपेक्षा पूरा करबाक सामर्थ्य निरन्तर विकसित करैत रहथु।

साहित्यमे संक्षेपणक अपन चमत्कारिक महत्त्व अछि। कम-सँ-कम शब्दमे बहुत किछु कहि सकबाक क्षमताक पाठक समुदायमे अत्यधिक आदर होइत अछि। प्राचीन कालक कविगण एकमात्रक लाघवमे पुत्रजन्मक आनन्दोल्लाससँ भरि उठैत छलाह।

बीहनि कथा लेखक पाठकवर्गकेँ एकटा प्लाट उपलब्ध करयबाक उद्देश्यसँ सेहो उपादेय। अहाँक सोझां विविध भावभूमि पर आधारित प्लाट अछि, रूच्यनुसार चयन करू आ ओहि पर बनाउ दीर्घ कथा वा उपन्यासक भवन!

हमर कहब एतबहिं जे कोनो विधामे साहित्यक रस प्रवाहित होमय, सहृदय पाठककेँ मानस-तोष देबामे सफल होए तऽ ओकरा उदार भऽ स्वीकार करबाक चाही। अन्हार भगाबयमे कखनो काल भगजोगनीक इजोत सेहो कारण बनैत अछि। बरगदक अत्यन्त लघु बीआ शाखा-प्रशाखासँ युक्त वटवृक्षक कारण होइत अछि। माए मैथिलीक उपासककेँ हुनक सभ सन्तानकेँ समुचित समादर देबाक चाही। प्राचीन ऋषि-मनीषी अहम्सँ मुक्त मनःस्थितिमे एहि तथ्यक साक्षात्कार केलैन्ह अछि-

'नाल्पे सुखमस्ति, भूमा वै सुखम।'

सतमाय

"माँ, ई हमर दोस्त मीना अछि, कनीकाल एतय रहतै।"

"देरी सँ पहुँचतै तऽ माएकेँ चिन्ता नञि हेतै?"

"हुँ, चिन्ता! हमर अपन माए थोड़ेक अछि, सतमाय अछि न!"

"अच्छा, अपन धिया-पुताकेँ नीकनिकुत खुअबै हेथुन आ तोरा खाय-पीबयमे कष्ट दैत हेथुन?"

"नञि!"

"फेर अपनाकेँ नीक आ तोरा खराप स्कूलमे पढ़ाबै हेथुन?"

"नञि, एक्कहि ठाम।"

"फेर तोरासँ सबटा काज करबैत हेथुन,नञि केने मारि-पीट करैत हेथुन?"

"नञि, पर टोका-टाकी बड़ करै छै।"

"अपनाकेँ नञि टोकै छथिन?"

"हँ, से तऽ ओकरो सबकेँ..."

"फेर...?"

"आंटी, हम जाए छी, मम्मी परेशान हेतै" कहैत मीना बैग उठौलक आ पड़ायल।

नारायणी



❑ उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'

"नारायणी कतय छथि?" चम्पा चमेलीसँ पुछलथिन्ह, "नारायण लग" ई चमेलीक उत्तर रहैन्ह।

"नारायणी गंडक नदी बनि एतय बहैए से नञि सुझल।" चम्पाक कहब।

"कोन बेजाय कहल। प्रेम दीवानी आन्हर होइ छथि। अहुँ कनखी-मटकी मारै छी।" चमेली लपकलन्हि।

"हे चुप्प।" चम्पाक झटका।

"देखै छी नारायणी गोरयारी बैसल छथि। अहाँ लटपटाइत चलै छी। ओढ़नी उड़िआइत रहैए।" चमेली बजलीह।

"पछिया हवा बहैए, कनकनी बढ़ैए, बेसम्हार रहैए। हम की करी?" चम्पा बजलीह।

"घर घुरि जाउ।" चमेलीक समाधान। चढ़ल परवान।

नकधुन्नी



❑ *भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'*

घरबलाक आबतहिं चुनचुनिया नाक-कान धुनय लागल, "मोन तऽ करैयऽ एहि घरक राबा-रत्ती देखकऽ या तऽ जहर-माहुर खाय लेति रऽ या नहि तऽ कोनो नदी-पोखैरमे डुबिक अप्पन जान दऽ देति रऽ।"

घरबला बाजलक, "कि भेल किये अहाँ सौंसे घर माथ पर उठैयने छी?"

चुनचुनिया - ई टिरा-टीरी लाइगकऽ एत ठंडमे तीन बेर बर्तन धुअ पड़ल।

घरबला - तीन बेर कोना धोलिये अहाँ, सभ बर्तन तऽ एखन अचौन तऽर पड़ले अछि?

चुनचुनिया - बेसि बाजू नञि, जाउ चुपचाप बर्तन धोइ दियौ।

घरबला बर्तन धोइ रहल छल कि चुनचुनियाक बौआ आबिक बाजलक - पप्पा यौ, एक बात बाजौं? "हँ, बाज नै कि?"

बौआ - आइ मम्मी नऽ दू बेर हाथसँ आ एक बेर नाकसँ बर्तन धोलक, हम देखैत रहि।

ह्वाट्सएप चलबैत चुनचुनिया ई बात सुनलक तऽ बड्ड खींस बढ़ल, "बजड़खसौनाक जन्मल, छै केहन! लुतरी लाइर रहल अछि। जो ने रौ केनहुं खेस मरे।"

जरुरति भरि



❑ अरुण लाल दास

बड्ड निहोरा करैत मनधनकें आंगनबाली कहलकै, "खा लौक ने। आब तऽ कत्ती बेर भेलै। गोटी कखनी खेतै। बूढ़ भऽ गेलै आ बच्चा नाहित करैत हय। हम किछ कहलिऐ अखनी। कनी चाह बनबैत घरी बतिआय लगलिऐ।"

खौंझाइत मनधन आरो जोरसँ बाजय लागल, "हँ, हँ, तोरा की छौ आब। हमर जरुरते की रहलौ। बेटा पाइ पठाइये दैत छौ। जहाँ जेबा तहां जो। तोरा कोनो दोस्त यार, की भतार के कमी छौ। लबरी नहितन।"

तेतरी, मनधनक घरवाली खुम जोरसँ घाना पसारि कानय लगलै।

बगल केर अंगनासँ ओकर भतिजपुतौह सांत्वना दैत कहलकै, "नै कानथु काकी। सएह देखू! कक्का ठीके सठिया गेलखिन। केहेन बात बजैत छथिन्ह। की करथिन, पुरुख-पातर जनिजातिकें कहियो मान देलकै? खाली अपन जरुरति रहतै तखने।"

टेलीग्राम



❑ विनीता ठाकुर

"हेलो राम बाबू छी?"

"हँ, कहू कि हाल समाचार?"

धुरन जी - आइ पटनामे हमर केशक बहस छल कोर्टमे, कनी अहाँ सम्हारि लेबै।

रामबाबू (वकील) - से किएक वकील साहेब, कि भऽ गेल अहाँकें?

धुरन जी(वकील) - यौ हमर कनियाक हालत बड्ड खराब छै, डॉक्टर ऑपरेशन करतै।

कनिया - एँ! इ कि करै छी, अहाँ नञि जेबै कोर्ट तऽ बेकसुर फाँसी पर चढ़ि जेतै आ हम भरि जीनगी अपना आपकें कोसैत रहब। अहाँ जाऊ हमर ऑपरेशन डॉक्टर करतै ने, हमरा किछु नञि हेतै।

कनियाक जीद्द पर वकील साहेब बहस करय लेल गेलाह। बहस करिते छलाह कि दरबान एकटा कागजक पुड़िया वकील साहेबकें देलक, ओ पुड़ियाकें जेबीमे राखि लेलाह।

बहस खत्म भेलै, वकील साहेब केश जीत गेलाह। "यौ वकील साहेब बधाइ हुये, परञ्च ई कहू जे ओहि कागजक पुड़ियामे कि छलै?"

वकील साहेब नोरैल भेल बजलाह, "तार छल, हमर कनिया नञि रहलीह।"

बाहरक छौंड़ी



❑ पूनम झा

"यै कनियाँ! जनै छियै बेहटावाली अपन बेटीक लेल वर तकै छथि। आब बियाहक उमरि भेलै न।" छोटकी काकी ओसारा पर बैसैत बजलीह।

"एँ यै काकी! ओ सब तऽ सब दिन बाहरे रहलखिन तैयो अपने वर तकै पड़ै छैन्ह? बेटी नञि ताकि लेलकैन्ह? हमर बेटी तऽ कहै छै जे बाहर रहयवाली छौंड़ी सब अपने वर ताकि लै छै।"

"नै, बड्ड संस्कारी छैन्ह हुनकर बेटी। अहाँ कहिया करब बेटीक बियाह? हुनकर बेटी आ अहाँक बेटी तऽ एक्कै उमरिकें अछि।"

किछु नै बजलीह कनियाँ। ताबैत कनियाँक 13 बर्षक बेटा अपन मोबाइल खोलि काकीकें फोटो देखाबैत बाजल, "ई देखियौ दाई, हमर बहीन आ ओकर ब्वायफ्रेंड संगे-संगे पढ़ै छै।"

काकी फोटोकें आँखि फाड़ि कऽ देखय लगलीह। कनियाँक बेटीकें एकटा छौंड़ा बाँहिमे धेने, गालमे गाल सटौने छल।

काकीक मुँहसँ अस्पष्ट निकललैन्ह, "छिया... छिया..." आ उठि अंगनासँ विदा भऽ गेलीह।

प्रेम दिवस



❑ चंदना दत्त

"आयं यै प्रेमसुन्नरि! आइ कथीकें हुलिमालि छैक, धियापुता संग हमर पुतोहुओ बेहाल छथि घरवला संगं फोटो-पर-फोटो मबाईल पर लगबय लै?"

"नञि बुझलखिन्ह बहीन, आब तऽ नवका जुग-जमानाक नवका-नवका गप्प। ओ कीदुन कहय छै, आइ प्रेमदिवस छै। से जे जतेक प्रेम करय ककरो संगे, तकर फोटो लगबय छै। नीक-नीक समान दै छै।"

"यै बहीन हमहुँ तऽ हिनके जमानाकें छी, तखन कनि धिया-पुता संगे टीवी-मोबाईलसँ सीखि लैत छी।" रामनगरवाली बजलीह।

"धौर जाऊ, ई फोटो खिंचौने आ डार घुमा मोटरसाइकिल पर बैसि घुमने बेसी प्रेम भऽ जेतै? बड्ड प्रेम तैं एकटासँ दूटा बाल-बच्चा होए छैन्ह? प्रेम तऽ हमरा सबकें करैत छलाह, भरि घर धिया-पुतासँ भरल छल।"

अगरजानी विद्या



❑ *डॉ. प्रमोद झा 'गोकुल'*

"सैत आइ बौआ अबैये यै दुलहिन!" "मर! हिनका से कें कहलकैन्ह?"



"धौर! एतबो नै बुझबै की!!"

"से कोना?"

"आइ अहाँक पाजेबसँ मिसरी घोरल आवाज जेना कहि रहल अछि जे गै माए! तोरा ले वस्तुनमा आ तोहर पुतौह लेल प्रेमक पोटड़ी लेने आबि रहल छियौ! आ दोसर संकेत जे आइ अहाँक अंग-अंगसँ अनंगक सौरभ छिड़िया रहल अछि। नै बिसबास होइये तऽ कने एनामे अपन आँखिक भाषा आ दूनू गालक टुहटुहीक परिभाषा पढ़ि लिय!"

"गै मायऽऽऽ! ई अगरजानी विद्या कहिया आ कतऽ पढ़लखिन?"

"उमेर आ अनुभवक इसकूल मे, आर कत?"

"एहि बात पर पुतौह अवाक भऽ गेलीह।"

नौत



❑ सबिता झा 'सोनी'

माए गै, माए!

की कहै छैं!

मुखियाजी ओहिठामसँ पुरुषक दफा नौत एलैये।

ठीक छै साँझमे दूनू 'माए-धी' लेल किछु बना लेब।

माए एकटा बात पुछियौ?

हँ, पूछै ने!

जहन सबजाना नौत अबैत छैक तैयो तऽ स्त्रीगण केर पारस पुरुष सभहक भोजन केला उतर अबैत छैक... से किएक?

गै बाऊ, ई तऽ सदतिसँ होइत एलैक अछि!

मुदा हम पुछै छियौ जे, स्त्रीगण सबकें भूख पुरुष सबकें खेबाक पछाति लगैत छैक... ओहिसँ पहिने नै???

दूनू बेटा



❑ अमर कान्त लाल

जीवना अपन दूनू बेटा इजोरवा आ अन्हरवाकेँ ज्योतिष लग लऽ गेल, दूनूकेँ हाथ, माथ आ टिप्पैण पर ज्योतिषीक राय पुछलकै।

ज्योतिषी सभटा देखि दूटा बात कहलखिन्ह-

“हौ जीवन! पहिल बात जे, दूनू एक-दोसरसँ उल्टा आ समान गुणवला छह। एकटा ज्ञान छह, दोसर प्रमाण छह। दोसर बात जे, एकटा ठोकर छह दोसर इलाज छह।”

जीवना तमसैत बाजल - यौ हम एकर भाग आ भविष नञि, ई हमरा कोना राखत से पूछे अयलहुँ हँ।”

ज्योतिषीजी कहलखिन्ह - दूनू तोरे बेटा छह, तोहर मरजी जेकरा संगे रह। एकर फरिछौंहेट कोन ज्योतिषीक बाप करतह।

ब्रह्मा आवाक! सरस्वती ठहाका मारलैन्ह!

सेटल



❑ विद्या चन्द्र झा ‘बमबम’

की बात छियै गै प्रीती आइ-काल्हि तू कने बेसिये स्टालिस भऽ गेंलह?

नञि बात की रहतै? बस ओहिना...

नञि! बात तऽ अबस्से किछु छौ! हम तोरा चिन्है नै छियौ की? ककरहुं नजरि दू-चारि...?

भक्क! तोरा किछु नञि फुराए छौ की? सदिखन अर-दर...

तोहर तऽ आँखिये कहि रहल छौ जे ककरहुँ सँ...! नाम तऽ कह।

बुझि गेलहि तऽ कहिये देनाय ठीक, रितेश बाबु।

ऍँ! ओ करिलुठबा केना पसिन भेलहु गै? की खास देख लेलही तोँ ओकरा मे?

गै लोक रूपे-रंग देखि कऽ सिनेह करैत छै की?

हँ, सेहो ठीके कहैत छँ तोँ। प्रेमक आगाँ रूप-रंग किछु नञि! प्रेम तऽ ईश्वरक...

हाऽऽऽ हाऽऽऽ एखन धरि तोँ नेनपनेबला बात करैत छँ, प्रेम आ ईश्वरक नञि... ओकर धन-सम्पति देख कऽ सेटल भऽ गेलहुँ!

आँय...?

तिल-चाउर



❑ मिसिदा

हमर टोलमे एगो रूदल काका छलैथ, जेहने नाम, तेहने कद-काठी।

रूदल काका, तिलासंक्रांतिमे एगो बाटीमे गुड़-तील-चाउर लऽ, सौंसे टोलमे घुमि-घुमि, सभहक हाथमे तील-गुड़-चाउर दैत पुछथिन्ह, “हमर तिल-चाउर बहबहक की ने...?”

आब, रूदल काका नञि छथि। ओ गामक कातमे एगो कुटी बना कऽ रहैत छलाह। घर-घरारी मिला कऽ दस-बारह कट्ठा जमीन छलैन्ह, ओहिमे साग-सब्जी उपजाबैत अपन जीवनयापन करैत छलाह। गामक लोक सभ हुनक स्मृतिमे हुनकेँ कुटीकेँ आश्रम रूपमे विकसित कऽ देने छथि।

आइ, तिलासंक्रांति छै। रौदमे गरमी सेहो छै। हम रूदल काकाक कुटिक चबूतरा पर पड़ल रौदक आनंद लैत काकाकेँ मोन पाड़ैत कखन सुति रहलहुँ पते नञि चलल। अचानक, हमर नीन फुजि गेल। सपनामे माँ-बाबूजी, दीनहीन अवस्थामे हमरासँ पुछि रहल छलाह, “बौआ, हमर तिल-चाउर कहियो तऽ नञि बहलहक... आइ, पातो पर तऽ तिल-गुड़-चाउर राखि, पानि ढ़ारि दितहक ने...?”

बेटा - पुतोहु



❑ हिमाद्रि मिश्र

रचना - अरे! अन्हारमे किएक बैसल छी सब गोटे?

पतिदेव - बल्ब फ्यूज भऽ गेल शायद!

रचना - रैक पर तऽ दोसर राखल अछि लगा दियौ न!

पतिदेव कुर्सी पर ठाढ़ भऽ बल्ब लगाबय लेल चढ़ला कि साउस, “बौआ, हौ बौआ! करेंट मारि देतौ!” कहि विलाप करय लगलीह।

रचना कुर्सी पर चढ़ि बल्ब लगा देलखिन परञ्च ताहि लेल सासुक कोनो प्रतिक्रिया नञि भेलैन्ह।

रचना - माँ, आइ हमरो माए एहिठाम रहितै तऽ हमरा बल्ब नञि लागाबय दैतै। जेना ई अपन बेटाकेँ बिजली छूबऽ नञि देलखिन आ हम बल्ब लगाबय चढ़लौ तऽ किछ नञि बजलीह!

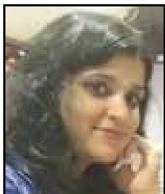
साउस - हम अपन बेटाकेँ बड़ु दुःखसँ पोसने छी, किछ भऽ जइते तऽ?

रचना - करेंट तऽ हमरो लागि सकैत छल न? ओकर चिंता नञि भेलैन्ह?

साउस - अहाँकेँ करेंट किएक लागत? अहाँक बाबू तऽ बिजली विभागमे काज करैत छथि। हम तऽ दाँत लगाकऽ बेटाकेँ पोसने छी

रचना अवाक भऽ साउसक मुँह ताकैत मनमे बजलीह, “माए आ साउसमे अंतर छै!”

हमर कि दोख?



❑ भावना मिश्रा

रामू दू दिनसँ भूखल छल, ओकर माए बीमार छल, घर मऽ किछो खाय लेल नहि छल। रामू ढाबा मे बर्तन माजेत छल, माएक बीमारी कारणेँ काज छोड़ि देलक।

ओ कतेको ढाबा जा काज माँगलक, सभ ओकर गप्पकेँ अनसुना कऽ देलक।

ओ थारि मे राखल तरकारी-रोटी लऽ कऽ भागय लागल, सभ ओकरा पकड़ि कऽ खुब मारलक, खून बहय लागल नाक, कान आ माथ सँ...

दोकान कऽ मालिक आबि बाजल - रामू, तू ऐना किएक करलेँ... कि भेलौ? तू चोरी किएक करलैँ?

रामू बाजल - हमर माएक मोन बड्ड खराब अछि, हम सबसँ काज माँगलो मुदा कियो हमरा काज तऽ दूर हमर गप्प धरि नै सुनलक। हम कि केरतौंह? हमर माए दवाई कतऽ सँ खायत दू दिनसँ किछ नहि खेलक...!

सभ सुनि अवाक रहि गेल।

आघात



❑ *अनीता मिश्रा*

जखन औटो गामसँ निकलय लागल सुरेशकेँ लगलैन्ह जेना दिल बाहर निकलिए जेतैन्ह। की सोचि कऽ गाम आयल रहथि आ कि भऽ गेलैन्ह!!! सोचलैन्ह कोरोनाक मारा-मारीमे नुनो-रोटी खा परिवारक संग रहब।

अयलाक तीने दिन बाद दिल्ली वापस जाए पड़ि रहल छैन्ह। दूनू बच्चाकेँ देखि आर दुःख भऽ रहल छलैन्ह जे बच्चा खुशीसँ चहकि रहल छल गाम अयबाक काल, ओ मुरझायल फूल बनि घुरि रहल छल। तखने फोनक घंटी टुन-टुनेलैन्ह। बात केलाक बाद सुरेशक कपार पर चिन्ताक लकीर देखि विमला (पत्नी) पुछलखीन्ह, "ककर फोन छल?"

"मकान मालिकक, किराया लेल।" मुँह लटकौने सुरेश जबाब देलैन्ह, "बेकारे गाम गेलौंह। ई कोरोना सभहक असली रंग देखाय देलक। जखन नौकरी छल तऽ अहाँक भौजी मुँह कऽ खुआबय अबैत छलीह, एहि बेर एक सांझ नञि खुआ सकलीह!"

पाँच जनवरी



❑ मुख्तार आलम

पिछला पाँच वर्षसँ पाँच जनवरीक अहल भोरे घनघना उठैत अछि हमर मोबाइलक घंटी। ओ सभ साल कने बिहुँसति शिकायत करैत अछि, "एहु बेर बिसरि गलिए नऽ हमर जन्मदिन। अहाँ बड्ड भुलक्कर छी।" "ओह पल्लवी! एहन बात नञि अछि। काजक दबावमे सोहसँ उतरि गेला अहाँक जन्मदिनक बात। एखन हम बधाई दऽ रहल छी ने। अहाँ स्वस्थ रहू। दीर्घायु होऊ। फूलसन फुलायल रहू। अपन सुगंधि पसारैत रहू।" "छोड़ु ने, आब ई बधाई केर कोनो मानि नञि रहि जाइत अछि।" ओ बाजल। हमरो एहि बातक कचोट भेल जे नञि बिसरबाक चाही पल्लवीक जन्मदिन। मोनमे लागल जेना कोनो तंतु टूटि रहल अछि। हम मोनेमोन संकल्प लेलहुं जे एहि बेर चाहे जे भऽ जाए मुदा पल्लवीक जन्मदिन नञि बिसरब।

आइ हुनक जन्मदिन हमरा मोन अछि। मुदा आब अपन सासुरमे ओ नञि अछि मोहताज हमर बधाई केर।

मुँहबज्जी



❑ सुनिता झा

रातिक दस बाजि गेल छल, खसैत-पड़ैत अन्हारमे लालकाकी सुन्नरि दाइक आंगन अएलीह, "ऐं यै अहाँक आंगनमे देखलहुं चहल-पहल, हमरा नञि नोत नञि हकार, कोन कर्तेवता अछि?"

सन्नरि बजलीह - कहाँ काकी! जमाय आयल छथि, सविताक मुँहबज्जी नञि भेल छैन्ह। चतुर्थीक दिन नीक नञि रहैक, जीवन भरि संग रहबाक छैन्ह, अधलाह दिनमे कोना बजितथि। आजुक दिन भेल छैन्ह सएह।

लालकाकी - हँ, गाममे रहै छी तैं! देखियौ जा कऽ शहरमे पहिने मुँहबज्जी तखन होटलबाजी आ सभ भेलाक पश्चात विवाह।

सुन्नरि बजलीह, "काकी गाम आ शहर की करतै अपन जे कौलिक परम्परा तकर ध्यान कोना नञि रखबै।"

लालकाकी - हँ, यै! आब की श्रोति, योग आ जयबार। स्वजातिक विवाहक ठेकाने नञि आ धयने छी परम्परा। जाउ गबैत रहु गीत करबैत रहु मुँहबज्जी। हम चललहुं सुतय लेल।



बाल श्रम



❑ कुमारी आरती

“सुनय छीयै, हम आबय छी कनि बगलवाली ओतयसँ पूजा छियै” कनियाँ वरकेँ आवाज दैत चलि गेलीह। कनि काल बाद एलीह आ अबिते देरी वरकेँ खिस्सा कहय लगलखिन्ह, “आइ-काल्हि कोनो मानवता नञि रहि गेल। बालश्रम कोना कराओल होए छय। छोटकी बच्चा दस सालक छौंड़ीकेँ राखि लेने छथिन, कि तऽ पढ़ा सेहो देबय। ओ काज करतय कि पढ़तय।” ताबैत वर कहलखिन्ह, “अच्छा सुनु, अहाँकेँ एकटा टहल-टिपोरा करय लेल चाही आ कि नञि?”

कनियाँ - हँ-हँ, बड्ड खगता होइत अछि।

वर - ठीक अछि गाममे एकटा छौड़ा अछि, मुदा ओ छोट अछि दस सालक मात्र। अहाँ तऽ नञि राखब नऽ बच्चाकेँ।

कनियाँ पट दऽ बजलैन्ह - किएक नञि राखबय? हम अपन बच्चा जकाँ राखब ओकरा आ खूब नीकसँ पढ़ाओ देबय।

वर कनियाँ दिस ताकिते रहि गेलाह, कनियाँ दांत निपोड़ि हँसय लगलीह।

घूघल (गूगल)



❑ नन्दनी झा

“माए तौँ जे हिनका सदिखन लबकी माए कहैत छहुन से नञि कहुन हिनका नीक नै लगैत छैन्ह।”

आकि पाछुसँ पुतहु सेहो टांस अवाजमे बजलीह, “माँ, माए नव की आ पुरान की? माए तऽ माए होइत छैक आ जे नञि बुझबै से आइ-काल्हि गूगल छै ओ सभटा बुझैत छैक।”

सासु “बेस” कहि चुप भऽ गेलीह।

किछु दिन बाद घरमे बच्चो फकसियारि काटि रहल छल आ दूनू परानी ओकरा चुप कराबयमे लागल रहथि परञ्च बच्चा चुप्पे नै होइत छल। बेटा माए लग आबि बजलाह, “बौआ तऽ चुप हेबाक नामे नञि लऽ रहल अछि, कने तौँ देखहिं ने जा कऽ।”

माएकेँ तऽ मोन कखैनसँ औना रहल छलैन्ह, मुदा गूगल तऽ सभ बुझिते छैक से बुझि चुप रहथि।

बौआकेँ उन्टा-पुन्टा देखलैन्ह, तुरन्त बुझि गेलीह बौआकेँ डराडोरि अंगमे फँसल रहैक। ओ ठीक होइते बौआ चैन भऽ गेल।

साउस उठि ठाड़ होइत मुस्कि मारैत बजलीह, “कनियाँ अहाँक घूघलकेँ ई नै बुझल रहैक जे बौआ डराडोरि सेहो पहिरैत छैक।”

फेसबुकिया क्रांति



❑ अभिषेक रंजन

फेसबुक पर ओऽ ‘महिला सशक्तिकरण’ विषय पर एकटा नीक दहकैत सन पोस्ट लिख रहल छलाह... पियासल पाइन पीबय लेल उठले छलाह कि ऊपरका फ्लैटसँ मिसेज तिवारीक चीख सुनि मोन जड़ि गेलैन्ह... तिवारी आइ फेर पी कऽ डेरा आयल आ फेरसँ पीट देलक अपन मिसेज के...।

ओ तामसे माहुर भऽ गेलाह आ जोरसँ केबार लगाबैत बजलाह, “केहन लोक सब अछि... अपातक सब नञि जानि... एकटा पोस्ट धरि नञि लिखय देत चैनसँ...। एहि तिवारियाक तऽ आब रोजक नाटक भऽ गेल अछि ई... आ ई मौगी सेहो कनिकबौ कम नञि अछि...।

पोस्ट पर ध्यान गेलैन्ह। पैघ भऽ गेलैक, नञि पढ़ैत अछि बेसि पैघ कियौ... ‘महिला सबकेँ हुनक बाजिब अधिकार दियेबाक लेल आ हुनका सब पर भऽ रहल अत्याचार केर रोकबाक लेल हमरा सबकेँ आगाँ आबि कऽ कोशिश तऽ करहे परत ने...’ अंतिम लाइन लिखि पोस्टकेँ पब्लिश कऽ देलैन्ह। कनकबे कालमे लाइकक पथार लागि गेल, अबैत लाइकक नोटिफिकेशन देखि ओ खुब खुश भेलाह।

अछोप



❑ कल्पना झा

“बौआ रे, कतो जाए छैं?”

“जजबिरबा घर”

“किया रे?”

“पोथी आनय लऽ।”

“रे, ओ तऽ अछोप छै। कनी दूरेसँ ली हैं।”

“बाबु! काल्हि जे डॉक्टर लग गेल रही ओहो अछोप रहै।”

“हम तऽ बेमार रही, नञि जैतौँ तऽ नञि बैचितौँ।”

“हमरो भविष्य आगु बचै तैँ पोथी लाबय जाए छी।”



राक्षसी भोजन



❑ सांत्वना मिश्रा

माछ किन कऽ बच्चा कुदकैत जा रहल छल। बगलवाली पूछलैन्ह, “की लऽ जाए छी बौआ?”

बच्चा मुस्की मारैत बाजल - माछ छैक।

बगलवाली - एतबे माछमे सभ गोटा खा लेब बौआ? हमरा घरमे तऽ अतेबे माछमे किछ नञि होएत। जाबे अहगरसँ नञि खाएब तऽ मन छूछूआल रहि जाएत।

बच्चा कहलक, “हमर घरमे सभ कहैत छैक ई राक्षसी भोजन छैक, बेसी नञि खाय।”

बगलवाली मुँह बिचकाबैत बाजलीह, “आजुक बच्चो सभ कम नञि छैक, एकटा ज्ञान दऽ कऽ चलि गेल!”

सासुर



❑ निशा किरण

सासुरमे साउस, बेटा, पुतोहु (नवकनियाँ) छलीह। छोट परिवार। नवकनियाँकेँ द्विरागमनक एक सप्ताह भेल छलैन्ह। नवकनियाँ नव वातावरण, नव भाषासँ अनभिज्ञ।

एक दिन सासु माँ कहलथिन्ह, “आइ अपने दूनू साउस-पुतोहु छी, आइ खेनायमे भात, दालि आ आलु-कुम्हरौरीक तीमन बना लिय। मुदा तेल, मसाला, नून, मिरचाई कम्मे देबै, हमरा मुँह आबि गेल अछि।

पुतोहु सएह खेनाय बनेलैथ। ओहिना नून, मिरचाई कम। सासु माँकेँ खाए लऽ देलैथ, ओ दू कौर खेलैथ कि पुतोहुसँ पुछलैथ, “आंय यै, अहाँ घरमे किनको पिलिया (जॉण्डिस) भेल अछि?

पुतोहु कहलैथ, “नै माँ जी!” नवकनियाँ अर्थ नञि बुझि सकलैथ। पति आंगन एला तऽ ओ कहलैन्ह जे हमर माएकेँ खेनाय नीक नञि लगलै, अहाँ केहन खेनाय बनेलहुँ? नवकनियाँ चुप्पे रहलीह।

सासु माँकेँ ओ खेनाय खेल नञि भेलैन्ह, मुँहमे लागि रहल छलैन्ह नुन मिरचाई। तखन पुतोहु दूध, भात आ आम आनिकेँ सासु माँकेँ खुयेलैथ। खेनाय खा कऽ आब सासु माँ प्रसन्न छथि।

भाए-भैयारी



❑ सुभाष कुमार कामत

“गोर लागै छी काकी। कका कऽ नै देखि रहल छी।”

“खूब आनंदित रहू। हे यौ! केम्हर छीयै जल्दी एनै आउ। देखियौ मुन्ना बउआ आएल।”

“मुन्ना कहिया एलह गाम?”

“गौर लागै छी कका। काल्हि एलौंह।”

“खुश रहू, आओर अपन हाल समाचार सुनाऊ।”

“अहाँ सभहक आशीर्वादसँ ठीक छी।”

“बाबू तऽ एमहरै-ओमहरमे समय निकालि दैय छह... अओर आबि तऽ बेसी जमीन-जथा नै रहलय। भैयारी पर कतैक हिस्से हेत्तह...। पाई-कौड़ी सब बचा रखै छह... कि नै?”

“कि कहब कका प्रदेशमे रहियो कऽ एक्को पाय नै बाचियऽ।”

“आंए हौ! अखन असगरे छह... एल.आई. सी./एफ.डी. सभ कैर लैह... बादमे मौका नै भेटतह। हौ! भाए-भैयारी कतैक दिन धरि?”

“यौ कक्का! जौं अखन हम एकरा सबकेँ पढ़ाई-लिखाई पर खर्च नै करब तऽ जेहो किछु बाँचल-खुचल यै सेहो बिक जाएत।”

उपकारी हिया



❑ राजीव कर्ण

मोहन कक्काकेँ कोरोना कालमे नौकरी छुटि गेलैन्ह। कमाईवाला परिवारमे एकसरे। किछु संपन्न मित्रसँ मदतिक आशा लऽ हुनका ओहिठाम गेलाह मुदा असफल भऽ गेलाह। मोने-मोन ई सोचैथ जे लॉकडाउन तऽ अमीर लोकसब लेल भेलै गरीब लेल तऽ ई लकडाउन छै।

घर पहुँचला तऽ देखलैन्ह जे हुनक घरमे राशन-पानी पूरा उपलब्ध रहैन्ह। पत्नीसँ पुछला, “ई सब कतय सँ आयल?”

पत्नी जबाव देलीह जे हुनक एकटा मित्र ई राशन-पानी उपलब्ध करौलैन्ह जे अपने स्वयं लॉकडाउनक शिकार रहैथ।

मोहन कक्का तुरंत अपन मित्रक ओहिठाम जा पुछि बैसला जे अहाँकेँ तऽ अपने दिक्कत होइत अछि अखन आ हमरा अतेक...।

मित्र - हमरा-अहाँकेँ कियो नै चिन्हता अखन। किएक तऽ पैंच दयवाला दयसँ पहिले आमदनी देखै छैथ। अहाँ चिंता नै करू, सब दिन एहने नै रहतै।

मोहन कक्का हुनका धन्यवाद दैत अनुभव केलाह जे उपकार करय लेल धनसँ बेसी हृदयकेँ उपकारी हेबाक जरूरी छै।

परदेस



❑ तनुजा दत्ता

“हेलौऽऽ... हैलौऽऽ कें बजय छी!”

“हम छी! बाबुजी, भूषण! गाम आबि रहल छी।”

बेटाक आवाज सुनिते कामेश्वरक बाक् बन्न भऽ गेलैन्ह।

आँखिसँ नोर झहरऽ लगलैन्ह। पन्द्रह साल पहिले गाम छोड़ि कऽ भूषण कमाय लेल दिल्ली गेल रहैन्ह। तहियासँ घूरि कऽ गाम दिस नञि तकलकै। साल छह महिना पर मुखियाजी ओत फोन कऽ दय छलैन्ह।

“सब ठीक छह नै?”

भूषण कानिते बाजल, “नौकरी छुटि गेल बाबु जी।”

“भन्नेऽऽऽ...!” कामेश्वरक मुख पर मुस्कान एना खेलय लगलैन्ह, जेना छोट बच्चा माएक कोरामे।

सुग्गा सन बोल



❑ मुकेश दत्त

दाईसुन्नरिकेँ द्विरांगमन रहैन्ह। माए शिक्षा देलैन्ह, “बेटी सासुरमे माए-बाबूक पाग ऊँच राखब, नैहरक मान राखब, ओतय सुग्गे सन बोल बाजब।”

दाईसुन्नरि कानैते हामि देलैन्ह आ बाट भरि सुग्गा सन बोलीक अभ्यासमे लागि गेलीह। सासुर पहुँचलीह, मुँहबजाओन भेल। ननदि, दियर, साउस, दियादिनी, ससुर कियो किछ पुछैन्ह ओ एक्के स्वर बाजैथ - ‘टैंह’। अनघोल भऽ गेल कनियाँ बताहि अछि। वरागत माथा पकड़ि लेलैन्ह।

नैहर समाद गेल। बाप-पित्ति-भाए सभ दौड़ले एलैथ। दाईसुन्नरिसँ गप्प केलैथ। हिनका सबसँ नीकसँ गप्प केलखीन्ह। बाप पुछलैन्ह, “सासुरक लोक शिकायत करैत छथि, ई कि टैंह... टैंह... करै छी? हमर सभहक इज्जत डुबा रहल छी।”

दाईसुन्नरि डराइत बजलीह, “माए, आबय काल कहने छलीह सासुरमे सुग्गे सन बाजब। तैं सुग्गे सन टैंह... टैंह... बाजै छलौंह।”

बाप-पित्ति-भाए आ सासुरक लोक ठहक्का मारलक।

स्वभाव



❑ सतेन्द्र कर्ण

तीरथ घर-गृहस्थीसँ फिरेशान छलाह, कारण घर-गृहस्थीमे ककरो सँ नै पटरी बसै छैन्ह। सदिखन कनियाँ आ धीया-पुतासँ झगड़ा होइत छैन्ह।

एक दिन एकटा बाबाजीसँ भेट कऽ कहलैन्ह, “हम घर-गृहस्थीसँ तंग आबि गेल छी। नित रोज हमरा घरमे सबसँ झगड़ा होइत अछि। से नञि तऽ अहाँ अपन एकटा गेरूआ वस्त्र हमारा दिय, हमहुँ बाबाजी बनि जाए।”

“ठीक छै हम देब, परञ्च पहिले हमर एकटा सवालक जवाब दियऽ - कि को कोनो पुरुष जनानीक वस्त्र पहिर जनानी आ कोनो जनानी पुरुषक वस्त्र पहिर पुरुष बनि सकैत अछि?

“नञि ई कोना होएत।”

“तऽ अहुँ मात्र वस्त्र पहिर संन्यासी कोना बनि सकैत छि? अहाँ अपन स्वभाव बदलू, देख्यिौ अहाँक घर-गृहस्थी सब बदलि जाएत।”

लगन तिहार



❑ मुन्नी मधु

मोहना अपन बौहकें अखबारक एकटा खबरि देखबैत बाजल, “ओहो हो... सत्ते कहे छैक पाइसँ जिनगी नञि भेटि सकैत अछि।”

दरभंगावाली अखबार दिस नञि मोहना दिस तकैत - “हयो से कोना कहे छी? अहुँ तऽ हमरा पाइयेसँ भेटल छी, तऽ की अहाँ हमर जिनगी नञि छी...?”

गांधीकें उपराग



❑ कुन्दन कर्ण

अपराधबोध आ हर्ष मिश्रित भावसँ गाम पहुँचलहुँ, बाप-पुरखाक धरती छोड़ि बंगलुरू बसि गेल छलहुँ। गांधीजी कहने छलखिन जे देशक आत्मा गाममे बसैत छै! सब उपराग दैत छल जे गाम किएक बिसरल छी।

‘वर्क फ्रॉम होम भेट गेल अछि, आब बेसी गाममे रहब’ सबकें कहलियैक! बटाईदारक ठोर सुखाय लगलैक जे गिरहत हिसाब लेताह, बुढ़ाकक्काक दलान परसँ बथान हटबय कहलियैन तऽ अनसोहाँत लगलैन्ह। मानिजन कक्काक मन जे बहरिया गाममे रहय तऽ जी हजूरी करय। करिया कक्का जे हमरे घरकें अपन घर बुझय लागल छलाह हुनका उच्छन्नर भऽ गेलैन्ह, पुछि बैसलाह, ‘कहिया धरि रहबह?’

मोन भेल जे गाँधीजीकें उपराग दी!!

सुरभित फूल



❑ विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

हमरा अंगनाक बगिया मे,
छोटे-छोट गमला मे।
लागल छै नीक नीक फूल,
अलि तितली जे हिलरा झूल।। हमरा...

माटियेक गमला छै,
गमलो मे माटिये छै।
खाद गोबरक पड़ल समतूल,
ताहिसँ फौदल गाछ समूल।। हमरा...

कोरकार माटिक हो,
फूल जाहि जातिक हो।
सेवा तेहने भेटल भरपूर,
पटवनेसँ बढ़ै छै मूल।। हमरा...

रौद आ बसात लेल,
शीतक समाद लेल।
जगहक बड़-बड़ तूल,
रुचौ, एकरा ने बानि प्रतिकूल।। हमरा...

महमह भरि अंगना मे,
गहगह भरि नयना मे।
लगै जे छवि अनुकूल,
हिया, हरखै छै सभकर अतूल।। हमरा...

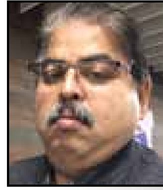
करिझुंगरा कुरंगी ओ,
करै हुरदंगी ओ।
तैं पहरा मे हो नहि भूल,
रस परागे छै जीवनक मूल।। हमरा...

कुसुमित कानन सँ,
पल्लिवत संसाधन सँ।
रहै आँगन सभहक संकूल,
कियो सोचय ने ऊलजलूल।। हमरा...

घरनीये ई संभव सभ,
कुल वंशक उद्भव सभ।
जौं विचारक मजगूत चूल,
कहियो हीलब करै ने कबूल।। हमरा...

मात्र शब्देक विन्यास नहि,
सोचेक अखियास नहि।
आने कर्मे बनी ढुल भूल,
सुधापति तखन हो सुरभित फूल।। हमरा...

श्री हरिमोहन झा



❑ मणि 'आमारूपी'

मस्त मलंग मतंग छवि सोहन
मोहल मोन रमल हरिमोहन
सौम्य शुभ सम्मोहन रसगर
हास हुलास बसथि मनमोहन।।1।।

विद्यापति सन प्रिय स्थान
निश्छल हँसी मोहक मुस्कान
'वाजितपुर'क गुमान छलाहओ
कुशाग्र बुद्धि 'जनसीदन' संतान।।2।।

मैथिल समाजक प्रबुद्ध आधार
हास्य व्यंग्यक ओ कर्णधार
प्रहार केलाह पाखण्ड अंधविश्वास पर
नीक आलोचक उन्मुक्त बेबहार।।3।।

सन् आठ दिन अठारह सितम्बर
जनम लेलाह तर्कक नीलाम्बर
हुनक रचना मेघाम्बर मैथिलीकें
'कवि' 'लेखक' ज्ञानक ओ अम्बर।।4।।

साहित्य क्षितिजक अनमोल तरेगन
छोड़ल अमिट छाप हुनकर सभ लेखन
मिथिला मैथिल हर्षित जनजन
गदगद मोन पावि ओ सज्जन।।5।।

बी ए अंग्रेजी एम ए संग दर्शन
संस्कृत मैथिलीकें ओ दिव्य सुदर्शन
बिहार ओड़िसा मे गमकल सुमन
स्वर्ण पदक संग प्रथम हरिमोहन।।6।।

अमैथिल सीखल मैथिलक भाषा
हुनकर रचना बनल जिज्ञासा
तर्क कुतर्कके आस नवल ओ
रचल हरिमोहन नव परिभाषा।।7।।

वेद पुराण सांख्य ओ दर्शन
रूढ़ि सिद्धांतक प्रतिकूल आकर्षण
तीक्ष्ण व्यंग्य बाण सन घर्षण
बेबहारिक भाषा हुनक उत्कर्षण।।8।।

मूल रूपसँ दर्शन केर विद्वान
बँटलाह नित्य नीक नीक ज्ञान
स्वभाव बिनोदी माहिर वाक् पटुतामे
पहिल प्रकाशित हुनकर 'कन्यादान'।।9।।

द्विरागमन प्रणम्य देवता रंगशालाक रंग
चर्चरी एकादशी खट्टर ककाक तरंग
पोथी विशेष बनल मर्यादाक भंग
बाबाक संस्कार मैथिलक अंग।।10।।

कालजयी केर हास्यवाण सँ
समाज मे नव चेतना भेल साकार
एकांकी प्रहसन निबंध कविता
ओहि विधा मे सेहो एकाधिकार।।11।।

पत्नी सुभद्राक भाव छल निश्छल
सरल छवि नाचि उठल दूर्वादल
आभा मंडल भरल सिनेह सँ
कवि हरिमोहन हुनकें सँ सबल।।12।।

की बदलत मैथिल समाजक रीति
माछ ढ़ला झा बुचकुन बाबा
पंडित ओ मेम क धिपल ताबा
मोन मे फूटत हँसीकें लाबा।।13।।

गुणी पुरुख घर-घर ओ पूजल
साहित्य अकादमी देलक सम्मान
पुरस्कार सम्मान कतेको भेटल
धरा छोड़ि गेलाह मिथिलाक भान।।14।।

सन् चौरासी ओ तेइस फरवरी
जीवन यात्रक छल अंतिम घड़ी
बिधना लेलक हुनकर प्राण
स्वीकार करू हे हमर कोटि प्रणाम।।15।।

(जन्म तिथि-18.09.1908-पुण्य तिथि-23.02.1984)



सीता-मैया



❑ सविता दास (माहा)

जनक नगरी अछि मिथिला धाम,
नाम अछि सुंदर जनकपुर धाम।
मिथिला मे पड़ि गेल अकाल,
राजा जनक भऽ गेलाह बेहाल।
गुरु-मुनि संग कएल बिचार,
गुरु आज्ञा सँ हर बनल उपचार।
सीतामढ़ी, जनकपुर, धनुषा विशाल,
मिथिला नगरी अछि बहुत कमाल।
राजा जनक जीक हरक फाड़,
धरती सँ वैदेही केलैन्ह पुकार।
रोकि हर केर देखल जखन,
भेलीह बालिका प्रकट तखन।
नहि छल जनक जी कें संतान,
देखि बालिका भेलैन्ह गुमान।
जनक-नन्दिनी 'जानकी' नाम,
भेलाह प्रसन्न गुरु, मुनि, सुरधाम।
सीतामढ़ी मे पुनौरा धाम,
प्रकट भेलीह जानकी ओहिठाम।
ओतए सँ एलीह जनकपुर धाम,
मातु सुनयना लेलथिन्ह थाम्हि।
मिथिला नगरी भेल खुश-हाल,
जानकीक अबितहिं मिटल अकाल।
जानकी दाईक अछि कतेको नाम,
जानकी, सीता, वैदेही नाम।
छलीह लक्ष्मी सीता माता,
गाबथि सब सीताक गाथा।
शिव-भक्तिमे भेटल वरदान,
भोला देलखिन्ह धनुष महान।
सीता धनुष देल ओंठगाई,
देखि जनक प्रण कलैन्ह अगुताई।
जे कियो तोड़त ई धनुष-विशाल,
तिनके सीता देतीह जयमाल।
राजा जनक जीक सुंदर बगिया,
ओहिमे जानकी पूजथि गौरी मैया।
बगियामे अयलाह दुइ राज कुमार,
जानकी-रामकें भेल नैना चार।
दौड़लीह जानकी गौरी मन्दिर,
माँ सँ कहलैन्ह भऽ अधीर।
देलैन्ह वरदान तखन गौरी माँ,
पूर्ण होयत आब मनोकामना।
राजा जनक जी स्वयंवर रचाओल,
देश-विदेशक भूप सभ हारल।
एलाह विश्वामित्र संग राम-लखन,
राम तोड़लैन्ह शिव-धनुष तखन।
सीता केलैन्ह तखन जयमाल,
सभहक मनक हटल मलाल।
जयकारा मचि गेल जखन,
सीता-रामक वियाह भेल सम्पन्न।
सीता एलीह अयोध्या नगरी,
हर्षित भेल सकल नर-नारी।
विधनाक कतेको छल खेल,
सीता-रामकें वन मे देल।
सीताकें रावण हरि लेल,
वियोगमे रामजी बेकल भेल।
बानर सेनाक संग लेल,
हनुमान जीकें लंका भेजि देल।
सोनाक लंका सेहो जरि गेल,
रावणक घमण्ड टूटि गेल।
रावण-राममे भेल भीषण युद्ध,
रामक हाथे रावण भेल शुद्ध।
ई सब छल विधनाक खेल,
चललाह राम अयोध्याक लेल।
आगू किछु छल अओर लिखल,
सीताकें फेर वनमे भेजल।
सीता माता गर्भवती छलीह,
धोबीक वचन पर वन गेलीह।
वनमे वाल्मीकिक छल आश्रम,
रहलीह आश्रममे सभहक संग।
जन्म लेलैन्ह लव-कुश दूइ भाए,
वाल्मीकि लेलैन्ह शिष्य बनाय।
भेलाह धनुष धुरन्धर दूनू भाए,
लव-कुश पुत्र पिता रघुराई।
अश्वमेध यज्ञ आयोजित भेल,
घोड़ाकें चहुँदिश भेजल गेल।
लव-कुश लेलैन्ह घोड़ाकें बान्हि,
सभहक भऽ गेल मानक हानि।
तखन ऐलाह पुरूषोत्तम राम,
सीता सुनि कऽ भेलीह हैरान।
राम-सीता केर भेल मिलान,
धरतीमे सीता भेलीह अंतर्ध्यान।
अयोध्या अयलाह लव-कुश दूनू भाए,
राज्याभिषेक सँ सब हर्षाय।
सीता माएसँ भेटल उपदेश,
त्यागक मूर्ति नारी भेष।
नारी सन किछु जगमे नाहि,
नारी सभहक प्राणक प्यारी।
रचना केलैन्ह 'सविता दास',
ई अछी हमर स्वरचित प्रयास।

पुन अभिसारे



❑ सोगरथ सोम

ठोर अहाँक लाल तिलकोर सन,
उरोज अहाँक अनंग बेजोर सन।
मोरनी सन मस्त अहाँक गमन,
मुखरा जैसन मोहनी चाँद गगन।।

नयन मदन मकरंद पंच सर,
बोली कोइलि सन मधु झर-झर।
केस ओझराएल जनु भमर हजार,
शशि भूल जनु गमनक चाल।।

मदनक धनु खण्ड भौंह तोहे साजे,
ताहि निचे द्रय भमर संग फिर विराजे।
सुन सजनि तोहि सोगारथ परबोधे,
पुन अभिसारे कवन विधि तोरे।।

बिनु खुट्टाक गाए



❑ *जगदीश प्रसाद मण्डल*

छठम-सातम दशकमे आने गाम जकाँ इमानपुर सेहो मिथिलाक गाम छल। ओइ समय वातावरणमे एहेन राजनीतिक चेतना जीवित छल जे जयप्रकाश बाबू, सूरज बाबू, कर्पूरीजी, धनिकलालजी इत्यादिक संग मधुबनी जिलाक मध्यसँ पच्छिम, अखुनका दरभंगा जिला धरि, भोगेन्दजी, राजकुमार पूर्वे आ तेजनारायणजीक संग अनेको कार्यकर्त्ता, ओहन जुझारू छलाहे जे दिन-राति देशक समस्या आ समाधानक उपाय बुझेबो आ करैयोक पाछाँ बेहाल छलाह। तइ समय इमानपुरक सुमनकान्त हाई स्कूलक विद्यार्थी छलाह।

समाज तिरहुतिया झोंकमे पड़ले छल, अखनो अछि जे जइ गाममे बेटीक बिआह केने छी ओइ गामक अकची-दोकची नहि बाजि सकै छी।

दिवानाथ आ निशाकान्तक बीच भैंसा-भैंसीक कनारि साहित्य क्षेत्रमे छेलैहे। जे नञि खून तऽ देह-हाथ सिंगसँ चीर-फारि देबे करता। दूनू बीच वैचारिक दूरी एतेक जे भाँगक शर्बतमे जौँ पचि जाइत तऽ एक-दोसरकेँ उठाकऽ पीब लइतैथ। दूनूक जीवन आन सम्बन्धमे जे रहल होइन मुदा साहित्यिक मंचपर एक्केठाम बैइसै छैथ। दूनू पीतमरू साहित्यकार छथिए तैँए गोष्ठीकेँ अपन अनिवार्य काज बुझितो एकठाम होइते छैथ।

साहित्यकारक बीच जे भोजनक सम्बन्ध रहल, माने जैठाम जेहेन स्वागत भेल तैठामक तेहेन चर्चा भेल आ जैठाम से नहि भेल तैठामक हँसारथ भेल। किछु इलाका एहेन अछि जे भोज-काजमे अगुआएल अछिए। भोजनक बीच जे अगुआएल-पछुआएलक विचार साहित्यकारक बीच अछि ओ तऽ एकरूपता एनहि कमत। एकरूपताक तऽ विराटपन वएह ने भेल जे जीवनक सभ दिशामे एकरूपता हुअए। ओ एकरूपता अनैले पछुआएलकेँ सेहो अगुआए पड़तैन्ह आ अगुआएलकेँ सेहो शान्त-चित्तसँ अपन जगह ग्रहण करए पड़तैन्ह।

वैचारिक मतभेदकेँ पाटैले सुमनकान्त साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन केलैन्ह। जाहिमे खासकऽ खेबा-पीबामे जेहेन बेवस्था आनठामक कार्यक्रममे नञि भेल छल, तेहेन बेवस्था केलैन्ह। कार्यक्रमक पछाइत बेवहारमे एकरूपता एबे कएल। खैर जे भेल से भेल, संयोगसँ दिवाकान्तो आ निशाकान्तो कार्यक्रममे पहुँच गेलाह। निशाकान्तक सोभाव एहेन जे सदिकाल विरोधे निरमबैक प्रक्रिया मनमे चलैत रहै छैन्ह, जइसँ भारपर जे बदाम अबै छल तेकर अंकुराकेँ टेढ़ कहैक आदत छैन्ह। कार्यक्रमक रूप देख निशाकान्त भीतरे-भीतर तऽ खूब जरला मुदा अपन भगिनीक सासुर इमानपुर रहने तिरहुतिया भौकमे पड़ि गेलाह। तैँ गामक इतिहास, माने भगिनीक सासुरक परिवारसँ चिन्हा-परिचय करैमे बेसी समय लागिये गेल छेलैन्ह।

दुःखद पहलू बुझू आकि संयोग, बेटी पक्ष रहने इमानपुरक सम्बन्धी सभ ठेलने-ठेलने सीमाकात टपा देलकैन्ह मुदा निशाकान्तो बाबू तऽ निशाकरजी छथिए, महादेव जकाँ कार्यक्रमक प्रशंसा ओहन कइये रहला अछि जे अपन परिवारसँ सामूहिक रूपमे तय भेल। तय भेल जे 'सगर राति दीप जरय'क कार्यक्रममे एते तरहक भोज्य विन्यास केतौ नहि छल आ समाजक रूझानो एहेन जे दोसर कार्यक्रममे नहि भेल छल। निशाकरजी इमानपुरक साहित्यिक कार्यक्रम केलाक पछाइत अपन गाम गेलाह। संयोग बनलैन्ह जे जइ भगिनीक सासुर इमानपुर, ओ गाड़ीसँ उतरला पछाइत डेरापर पहुँचते सोझामे पड़ि गेलैन्ह। कौशल्या शिक्षिकाक संग शिक्षक नेता, तैँ बजैमे फड़कोर छथिए। निशाकान्त बाबू बजलाह- कौशल, तोहर सासुर देखलियौ।

सासुरक नाओं सुनि कौशल्या मुस्कुराइत कहलकैन्ह- बाटक थकान अछि। पहिने पानि-चाह पीबू, पछाइत स्नान कऽ लेब। ताबे हमहुँ खाइ-पीबैक ओरियान करै छी।

जहिना भूखल राजा हुअ कि रंक, अपन

शुभकामना

वरिष्ठ मैथिल साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकेँ हुनक 2018मे प्रकाशित मैथिली उपन्यास 'पंगु' (1942 सँ 1975 धरि किसानक परिवेश पर आधारित) लेल मैथिली भाषामे वर्ष 2021 केर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत करबाक निर्णय भेल अछि। उपन्यास पर साहित्य अकादमीक मूल पुरस्कार पाबयबला ओ पहिल बीहनि कथाकार छथि। एहिसँ पूर्व 2011मे प्रकाशित हुनक पहिल रचना 'गामक जिनगी' (कथा संग्रह)क लेल चौबीस भाषाक टर्ममे मैथिली लेल 'टैगोर लिटरेचर एवार्ड', साहित्य अकादेमीसँ अनुशंसित, कोरिया सरकार द्वारा प्रदत्त पुरस्कार, कतेको साहित्यिक मंचसँ 'यात्री सम्मान', 'बाबू सहाएब चौधरी सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'वैदेह सम्मान', 'कौशिकी सम्मान', पूर्वांचल सम्मान, आसाम सम्मान आदिसँ ओ सम्मानित भऽ चुकल छथि।



बेरमा ग्रामबासी, हिन्दी आ राजनीति शास्त्रसँ परास्नात्क, मैथिली साहित्यक स्वर्ण हस्ताक्षरक पर्याय बनि चुकल मंडलजी अपन लेखनीसँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ कथा, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, शोध आलेख अओर दर्जनो प्रकाशित पोथीसँ भरि चुकल छथि।

गौरतलब अछि जे मिथिलांगनक पिछला अंक (48-49)मे हिनक साक्षात्कारक सारगर्भित अंश प्रकाशित अछि, हिनक साहित्यिक अवदानकेँ जानए लेल ओ अंक अवश्य पढ़ि। साक्षात्कारक पश्चात ओ हमरा अपन किछु पोथी भेंट स्वरूप देने छलाह। जाहिमे उपन्यास 'पंगु' सेहो छल।

मिथिलांगन परिवार दिससँ अपन अभिभावक श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकेँ हार्दिक शुभकामना।

- संपादक

बाध्यता देखैबते अछि। तहिना निशाकान्त बाबू बजला- गाड़ी-सवारी आकि स्टेशने परहक कोनो सामान खाइबला होइए! पानियोँ तेहेन भेटैए जे नल-ट्यूवेलसँ भरि सफका शीशीमे 'शुद्ध जल' कहि बेचैए।

सासुरक नाओं सुनि कौशल्या ओहिना खुशी भेलीह, जेना बिआह-दुरागमनसँ पूर्व बिऔहिता-दुरगमनिया लटलट करैए। सुमनकान्तक साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश द्वार वएह गामक साहित्य कार्यक्रम छियैन्ह।

अपना एहिठाम अदौसँ चलैन रहल अछि जे घरवासक भोज घरवारी करि कऽ अपन घर-दुआर समाजकेँ ई सोचि देखबै छैथ जे अपन देखा देने रहबैन्ह तखन ने ओहो अपन देखौता। आकि हम दुनियाँकेँ खूब देखै छी, आ अपन कियो ने देखैए।

साठि इस्वीसँ पूर्व, जहिना इलाकामे शिक्षण-संस्थान आँगुरपर गनल छल तहिना समाजमे शिक्षणक गति सेहो मंथरे छल। मैट्रिक पास बेकती कोनो-कोनो गाममे छलाह। जौँ मैट्रिकमे कनियोँ नीक रिजल्ट होए छल तऽ इलाकामे चर्चाक मुद्दा बनि जाए छल। गुलाम देशक जे रूपरेखा होइए ओ अपनो मिथिलाक छेलैहे। तहूमे लोक इमानपुरकेँ घेघहा गाम कहै छल। कहब की घेघहा गाम? इमानपुरक लोक अस्सीक दशकसँ पूर्व इनारेक पानि पीबै छला आ पोखैरमे नहाय छला।

इनारक पानिमे आयोडिनक कमी छल, जे पानि समाजक लोक पीबै छला। तइसँ गरदैनमे फलकान आबि जाए छेलैन्ह, तैँ गामक चारूकातक गामक लोक इमानपुरकेँ घेघहा गाम कहै छल, मुदा सातम दशकसँ पानिक महत्वकेँ बुझिते समाज, माने इमानपुरक लोक, एते जागि गेला जे इनारक उपटान तऽ भेबे कएल जे खेतक पटौनी लेल सेहो प्रति आठ बीघाक हिसाबसँ गाममे बोरिंग गड़ि गेल। दमकलक भरमार भऽ गेल। किसान तेते जागि गेलाह जे चाउर-दालिक संग तीमन-तरकारी आ फल-फलहरी सेहो आन गामक लोकक हाथे बेचए लगलाह। तरकारीक खेती भेने गाममे बेचौबलाक जरूरत पड़ल। दस गोरे रोजगार करब शुरू केलैन्ह।

सत्तैरिक दशक धरि अबैत-अबैत सुमनकान्तकेँ समाजक दशा-दिशाक बोध भऽ गेलैन्ह। भोगेन्द्रजीक राजनीतिक कार्यक्रम जहाँ-तहाँ चलिते छेलैन्ह। मंचक इमानदार वक्ता भोगेन्द्रजी छेलाहे। अपना इलाकामे, माने मधुबनी जिलाक पूबरिया इलाकामे, समाजवादी विचारधाराक बोलवाला छल। खाएर तइसँ सुमनकान्तकेँ कोन मतलब छेलैन्ह, मतलब छेलैन्ह अपन समाजकेँ आगू बढ़ाएबसँ।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत जहिना गाम-गाम मिला कऽ पंचायतक निर्माण भेल तहिना पंचायतमे मुखिया, सरपंच, पंचायत सेवकक बेवस्था सेहो भेल। गाम-गाममे जहिना भूदानी कार्यकर्त्ताक बैसार, पदयात्रा इत्यादि होए छेलैन्ह तहिना राजनीतिक कार्यक्रम सेहो चलिये रहल छल। जातिवादी विचारसँ सभ प्रभावित रहबे करैथ।

जातियोक तऽ अजीव लत्ती अछिए, जे शीत-रौदमे जौँ मरनासन्नो होइए तऽ साओन-भादोमे लतैर-चतैर जाइते अछि। कहब जे अमरलत्ती जकाँ बिनु जड़ि-सिरक अछि, से नहि अछि। माटिक भीतर ओकर जड़ियो छै आ सिरो तऽ छइहे। तैँ कखनो काल एहेन सुनबे करब जे 'एहेन विचार जाति-पाँजिसँ ऊपर उठि करू।'

कम्युनिस्ट पार्टी भोगेन्द्रजीक नेतृत्वमे करीब छठम दशकसँ बाढ़ि-रौदीक समाधानक आन्दोलन चलि रहल अछि। जिलाक लोक जे आब कोसी, कमला, बागमतीक महत्वकेँ बुझि रहला अछि। भोगेन्द्रजीक आन्दोलित विचारकेँ सभ राजनीतिक दल रोकलैन्ह। नतीजतन समाज पछुआ गेल।

सातम दशकक अन्त आ आठम दशकक शुरूमे सुमनकान्त कौलेजसँ निकैल गेल रहैथ। दुर्गापूजाक मतभेद इमानपुरमे शुरू भेल। कहब जे पहिनेसँ होइत अबैत पूजामे मतभेद भेल? नहि प्रथमे पूजामे मतभेद भेल। 'लूटमे चरखा नफ्फा' सएह भेल इमानपुर गामकेँ।

अपना इलाकामे ठाम-ठाम दुर्गापूजा बड्ड दिनसँ होइत आबि रहल अछि। खास कऽ सोति-ब्राह्मणक गाममे। पछाइत आनो-आन जातिक गाममे शुरू भेल। इमानपुरक समाजमे, जहिना कबीर मतक विचार तहिना आनो-आन धार्मिक सम्प्रदाय सभहक विचारक लोक छेलाहे। जाहिसँ दुर्गास्थानमे बलिप्रदानक विरोध भेल। गामक लोकक विचार एकमुँहरी जे गाममे दुर्गापूजा हुअए मुदा बलिप्रदान नहि हुअए। ब्राह्मण दूनू दिस बटा शक्तिहीन भइये गेल छलाह। दुर्गापूजाक माने भेल दस दिनक दसो दुआरिक पूजा। सौंसे गामक हिन्दूक पूजा।

आइ पचास बर्खक दुर्गापूजा इमानपुरमे भऽ गेल छैथ मुदा अखन धरि बलिप्रदान, छागरक बलि, नहि कबूल केलैन्ह अछि। जखन कि चारूकातक आन-आन गाम सभहक दुर्गास्थानक दुर्गा बलि चढ़ौआ लइते छैथ। एकर माने इमानपुरक सीमा बन्हाएल अछि? नहि, सोल्होअना नहि बन्हाएल अछि, अखनो इमानपुरक किछु गोटा चढ़ौआ कबुला मानि आन-आन गाममे छागर चढ़ैबते छैथ। तैँ कहब जे इमानपुर गामक दुर्गाकेँ आन-आन गामक लोक लड्डु-मिठाई आकि फल-फलहरी नहि चढ़बै छैन्ह, सेहो बात नहियेँ अछि। आजुक परिवेशमे देवालय सभहक सेहो व्यापारीकरण भइये रहल अछि। अपन जीवनमे सुमनकान्त जहिया जे केलैन्ह से सभ बिसैर अपन विचार अपना जीवन लेल स्थापित कइये नेने छैथ।

1967ई पछाइत इमानपुरमे सुमनकान्त अपनो कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनलाह आ अपना गाममे सेहो सदस्य बना पार्टी ठाढ़ केलैन्ह। समाजक अधिकांश जातिक पढ़ल-लिखल नौजवान संगठित भेलाह। सुमनकान्तकेँ सेहो दिशाक बोध कॉलेजे जीवनसँ भेलैन्ह, मुदा जखन ओ गाममे, माने इमानपुरमे चारि दिनक पार्टी क्लास चलौलैन्ह तखन विचारक दिशामे आरो मजगूती एलैन्ह।

जमगर कार्यक्रम भेल, मार्क्सवादी चिन्तक-साहित्यकार जनार्दन चौधरी, प्रभुनारायण राय, डॉ. खगेन्द्र ठाकुर, चन्द्रकेतु शर्मा आ भोगेन्द्रजीक संग अनेको साथी कार्यक्रममे भाग लेने रहैथ। समाजपर काफी प्रभाव पड़ल। समय आगू बढ़ल।

1952ई.मे स्थापित पंचायत चुनाव, 1962ई. मे भेल। अधिकांश गाम (पंचायत) ओहने छल जैठामक लोक पंचायतक महत्व बुझिते ने छलाह। मुदा तैँ कहब जे सौंसे जिलाक पंचायतमे अहिना भेल, सेहो नहियेँ भेल। जमि कऽ लड़ाइ सेहो चलल। तहूमे मधुबनीक पच्छिमी क्षेत्रमे भूमि आन्दोलन जमि कऽ चलि रहल छल, गाममे आर्थिक जागृति आबि गेल छल। ओना,

आजुक जे बजारोन्मुख दिशा समाजकेँ भऽ गेल अछि जइसँ गाम गामे बनल रहि गेल।

आजादीक दौड़क जे आन्दोलनी पीढ़ी छलाह, ओहो दिनानुदिन, उमेर पाबि, कमाए लगलाह। जइसँ राजनीतिक चेतनाक ह्रास समाजमे भेल। सेवाक रूप बदलि गेल। सस्ता नेतृत्व बढ़ि गेल। कोनो स्थानमे कोनो पूजाक अगुआइ केलौं, जइमे कमेबो केलौं आ समाजक बीच प्रभावशाली सेहो भेबे केलौं। तहिना आनो-आन एजेन्सी सभ सक्रिय अछिए।

दिशाक बोध भेने सुमनकान्त अपन गामकेँ खँतिया कऽ, माने गामक बीच जे कोनो शोषित बेवहार चलि रहल छल तेकरा सभकेँ गतानिकऽ, अपन सेवा कर्म शुरू केलाह।

ओना, राजनीतिक मंचपर बैस विचार करब तखन अन्तर्राष्ट्रीयसँ परिवारक संग मनुक्खक जीवन अनेको स्तरक समस्यासँ ग्रसित अछिए ओहि समस्यासँ मुक्ति कराएब भेल सेवा।

सुमनकान्त अपन जीवनकेँ गाम-समाजसँ जोड़ि सामाजिक, आर्थिक आ राजनैतिक सभ दिशामे समाजकेँ आगू-मुहेँ धकेलैक विचार करैत सबसँ पहिने समाजक बीच जे खेबा-पीबाक छुति बनल अछि, ओहि दिस बढ़लाह। समाजक कोनो जाति शेष नहि बँचल जिनका एहिठाम समाजक सभ जाति नहि खेलैन्हि। समाजमे धार्मिक स्थान सभहक एहन धारणा बनले अछि जे कियो कहैत जे 'जाति न पूछो सन्त को पूछो आत्मिक ज्ञान'। तहिना दोसर दिस सेहो एहेन चलैन अछिए जे जातिसँ ऊपर उठि जखन कोनो धार्मिक सम्प्रदायसँ जुड़ै छी तखन सभ एक भेलौंह, तैं एकठाम बैसि खेबा-पीबामे कोनो परहेज नहि। ओना, समाजमे बेटा बिआहक बरियाती आ मृत्युक बरियातीमे सभ जातिक प्रवेश सभठाम अछिए। मुदा सामाजिक रूपमे एहेन बेवहार सेहो अछिए जे नहेबोकाल आ खेबोकाल अलग-अलग भइये जाइत अछि। सामन्ती शोषण एहि रूपेँ समाजकेँ जकड़नहि छल जे पढ़लो-लिखल विद्व त प्रवर छुआछुतक विचार करबे करैत छलाह आ करितो छथिए। जघन्य-सँ-जघन्य अन्याय बच्चा सभहक संगे भेल अछि। चौकीपर बैसल सहवर्गी छात्रकेँ लगमे गुरुजी बैसबै छला आ आन-आन जातिक बच्चाकेँ ठेहुनियापर बैस चौकीपर किताब-कौपी राखि पढ़बै छलाह।

सामाजिक रूपमे दुर्गापूजामे सभहक प्रवेश भेलैन्ह। सभहक माने सभ जातिक बच्चियाकेँ कुमारि मानल गेल, जाहिसँ खेनाय खेबाक संग अनेको बेवहारमे एकरूपता आयल। तैसंग खेती-गिरहस्तीक संग सुमनकान्तक जीवन चलिते छेलैन्ह।

जहिना शिक्षाक क्षेत्रमे तहिना किसानी जीवनमे गाम खुब आगाँ बढ़ल। समाजक वैचारिक विचारक हवामे पार्टीक बीच टूट शुरू भेल। पंचायतक तेसर चुनावी दौड़ आएल। पार्टीक बीच कसगर दराइर जाति आ वर्गक रूपमे उभरल।

अखन धरि समाजक जे सामाजिक रूप छल, ताहिमे सूदखोरी, जमीनक बटाइ, सिकमी, भूदान इत्यादि आन्दोलन सभ कोनो-नञि-कोनो रूपमे चलिये रहल छल। अनेको बेकती केस-मुकदमामे सेहो पड़ले छलाह, मुदा ताहिमे भूदानक जिलाकार्यालय नाटकक विपटाक काज करए लगल। एक-एक जमीनक पर्चा तीन-तीन, चारि-चारि गोरेक नाओंसँ बनबय लागल।

सामाजिक नेतृत्वक सेहो सस्ता भइये गेल अछि। शहर-बाजारक आमदनी कोनो-नञि-कोनो रूपमे गाम आबिये रहल अछि। सुमनकान्त समाजक बीच अपन अधिकार, माने भौंटक खरीद-बिक्री देख अपनाकेँ चुनावक राजनीतिसँ कात करैत 2015ई चुनावसँ सोल्हन्नी अलग कऽ लेलैन्हे।

एहि बेरक चुनावमे सुमनकान्त स्पष्ट भऽ गेला जे नै कोनो उम्मीदवारक पक्षमे रहता आ नै विपक्षमे रहता। समाजक पंचायत छी समाजक लोक अपन निर्णय करह। एहि विचारकेँ अगुआ सुमनकान्त अपनाकेँ पाछाँ कऽ लेलैन्ह। ओना, सुमनकान्त ईहो देख रहल छलाह जे बिनु जड़ि-छीपक उम्मीदवार सभ मैदानमे छैथ। कियो एकरंगा पहीरि तऽ कियो पाइयक हाथे चुनावमे तैयार छथिए। मनमे चुट्टी धारीक अनुभव छैन्हे। जहिना चुट्टीक धारीमे विपरीत दिशासँ अबैत चुट्टीकेँ सभ चुट्टीक संग मुँहमिलानी होइते अछि, से हेबे करत। सभकेँ अपन राजनीति आ राजनीतिक बोध हेबे करतैन्ह। पछाइत अपन भविसपर नजरि गाड़ि अपन जीवन बनौत।

एहेन विचार मनमे उठैत-उठैत सुमनकान्तक मनमे महाभारतक ओ विचार उठि गेलैन्ह जे द्वापर युगमे भेल छल।



द्वापर युग ओहन युग छीहे जाहिठामक परिस्थिति कृष्ण सनक सुदर्शन चक्रधारीक जन्म देलक आ आगूओ देबे करत। महाभारत भेला पछाइत अर्जुन आ कृष्ण एकठाम बैस विचार केलैन्ह जे जहिना अंगरेजी शासनकेँ हटबैमे देशक जनता सक्रिय रूपसँ भाग लेबे केलैन्ह। कियो अंगरेजक पीठू बनि जन-गणक घरमे आगि लगौलैन्ह, माए-बहीनिक इज्जत लुटलैन्ह आ वएह सभ अपनाकेँ पैघ आन्दोलनी बनि स्वतंत्रता सेनानीक पेंशन उठबै छैथ। गाम-गाममे जे आन्दोलनी पेट साधि जीवनकेँ लड़ाइक दावपर लगा अपन जानो देलैपि, परिवारो बिलटौलैन्ह आ हुनका कियो जानियो नै रहल छैन्ह।

शेषांश पेज 51...

ओ आदमी



❑ *डॉ. नबोनाथ झा*

ओहि रातिमे हमरा टकटकी लागि गेल। एकदम नञि निन्न भेल, रहि-रहि कऽ वएह दृश्य आगाँ आबए जे ओ आदमी कें छल? रहि-रहि कऽ घड़ी देखी जे कखन भोर हैत? हमरहुँ कलमबाग तऽ ओहि स्थलसँ कनिकहिँ हटि कऽ छल। तीस गज रहल हैत सएह बड्ड। अनगिनत राति कलमबागमे सुतल हैब। कहाँ कहियो किछु देखलहुँ। पुनः अवसर भटेल, कलमबागमे सुतब मुदा, आब तऽ सतत् सशंकित रहब जे ओ आदमी ओतहुँ नै आबि जाए। तैँ एकर समाधान आवश्यक बुझना गेल।

घड़ी देखलहुँ, नओ बाजि रहल छल, मुदा तखन धरि सूर्योदय नञि भेल छल। तुरन्त हेबाक उम्मीदहुँ नञि छल, बड्ड घुनि लागल छल। घरसँ निकललहुँ तऽ माए टोकलैन्ह बड्ड ठंढा छै। जलखै बनि गेल अछि। दतमनि कऽ कऽ जलखै कऽ लिय। रौद उगतै तऽ जाएब।

हम कहलिअैन्ह लगले आबि जाएब आ आंगनसँ निकलि गेलहुँ। ओहिठाम जखन पहुँचलहुँ तऽ सड़कहिँ परसँ देखलहुँ जे ओ आदमी तखन धरि ठाढ़े छल। हमर आश्चर्यक ठिकाना नञि रहल जे ओ आदमी तखन धरि ठाढ़े किएक छल? हम ओकरा सवा बारह बजे रातिमे देखने छलहुँ अखन भोरक सवा नओ बाजि रहल छल! नऽ घंटा भऽ गेल। तखन तऽ हमरा ओकरा प्रति अनेकहुँ जिज्ञासा उत्पन्न भऽ गेल जे ओकरा शरीरमे कतेक शक्ति अछि जे ओतेक समयसँ ठाढ़े अछि? ओ किएक ठाढ़ अछि? ओ की चाहैत अछि तखन इहो मनमे भेल जे हम नञ ओकरा सवा बारह बजे रातिमे ठाढ़ देखने छलहुँ वास्तवमे ओ कखनसँ ठाढ़ अछि से कें कहत?

तखन तऽ ओहि आदमीक प्रति असीम श्रद्धा उत्पन्न भऽ गेल, कारण ओतेक समय धरि कोनो सामान्य आदमी तऽ ठाढ़ नहिये रहि सकैत अछि। ओ कोनो तपश्वी तऽ नञि छथि? कोनो तपस्वीये सँ ओतेक समय घरि ठाढ़ रहब सम्भव अछि।

हम तखन गामक लोक पर नजरि दौड़ेलहुँ, धार्मिक स्वभावक तऽ कतेकहुँ व्यक्ति रहथि जे मनक संतुष्टिक हेतु पूजा-पाठ करथि, मुदा तपस्वी तऽ हमरा केओ नै बुझेलाह। तखन भऽ सकैत अछि जे आन ठामसँ कोनो तपस्वी आएल होथि जे तपस्या करैत होथि। हमरा बुझबामे ई नञि आयल जे ओ तपस्वी नवगछीये मे किएक तपस्या करैत छथि?

हमर मानस पटलमे अनेकानेक जिज्ञासा ओहि आदमीक सम्बन्धमे छल। हमर ईच्छा



प्रबल भऽ गेल जे ओकरा लग जाए ओकरासँ भरि पोष गप्प करी, ओ मात्र पच्चीस गज पर रहल हैत। मुदा ओकरा लग असगर जेबाक साहस नञि भेल। से किएक नञि भेल, हम नञि बुझि सकलहुँ।

हम अन्यमनस्क भऽ कतेकहुँ समय धरि ठाढ़ रहलहुँ। भयंकर ठंढ़ छल, एक तऽ माघ मास छल, दोसर हवा बहि रहल छल। तैँ अओर बेशी कनकनी छल। घड़ी पर नजरि पड़ल, एगारह बजि रहल छल। ताबत देखलहुँ जे लोकक अवयाँत सेहो भऽ गेल, किछु लोक उम्हरहुँ आबि रहल छल। बड्ड प्रसन्नता भेल जे प्रतीक्षाक घड़ी आब खतम भऽ जाएत। ताबत देखलहुँ जे एक आदमी उम्हरे जेबाक हेतु सड़क परसँ उतरल। हमहुँ ओकरा सड़क परसँ उतरैत देखि उतरहलहुँ। ओ हमरे गामक सुबोधबा, महेन्द्र बाबूक जन छल। ओहि नवगछीक बगलहिं मे महेन्द्रनाथ बाबूक खेत छल।

सुबोधबा ओहि खतेक आरि कोन बनबय लागल। हम ओकरासँ पूछलहुँ, “ई खेत तुँही करैत छिही की?”

“नञि मालिक अपनहिं करैत छथिन।”

ओ सभ कतेक आदमी छल? गामहिँक छल की अनठिया सभ....?” पता नञि माए अओर की सभ पूछितथि? हम कहलौंह, “केओ नञि छल। हमरा दुहूकेँ धोखा भेल।” हमर जवाबसँ माएकेँ जेना संतोष भेल होनि। ओ कहलैन्ह, “ठीकहिँ।”

“हँ माए” मुदा हमरा अपना-आपसँ ग्लानि भऽ गेल। हम अपन बीमार माएक परिचर्याक करबाक हेतु आएल छलहुँ, मुदा हम हुनक सेवा कम चिन्ता बेशी बढ़ा देलियैन्ह। ओ हमरा हेतु भोरहिँ जलखै बना देलैन्ह आ हम हुनक सुधि धरि नञि लेलौंह, अपना धुनिमे मस्त छलहुँ। कतेक सार्थक उक्ति अछि ‘माएक जीह गाए सन, पूतक जीह कसाई सन’ से आइ मंत्र अनुभवेटा नञि केलहुँ वरन प्रत्यक्षतः प्रमाणित होइत देखेलहुँ। बेटाक अँतरी देखनिहारी माए, बेटाक दुबराएल देह देखनिहारी माए, बेटाक चोटकल गाल आ धँसल आँखि देखनिहारी माएटा। वास्तवमे माए सर्वोपरि छथि।

पच्चीस जनवरी उन्नीस सै छियासी, बाबूजीक पत्र भेटल जे माए बीमार छथि। हम ओहिये राति धुलियान पैसिजनरसँ गाम लेल विदा भऽ गेलहुँ। लहेरियासरायमे एकटा मालगाड़ीक चक्का पटरीसँ उतरि गेल छल, फलतः लगभग ग्यारह बजे रातिमे जयनगर पहुँचलौंह। ढ़ाई सय किलोमीटरसँ आबि आठ-दस किलोमीटर हेतु जयनगरमे ठहरि जाएब उचित नञि बुझना गेल।

भयंकर जाड़ छल। ओढ़नाहुँ पर्याप्त नञि

छल। ऊनी चादर छल सेहो ठढ़िकऽ बर्फ भऽ गेल, किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेलहुँ। बाबूजी तऽ तमसेबे करताह। ओ कतेकहुँ बेर कहने रहथि जे ओतेक राति कऽ यात्रा करब उचित नञि अछि। मुदा माए आ पत्नी प्रतीक्षा करैत हेतीह। प्रतीक्षा तऽ बाबूजी सेहो करैत हेताह, मुदा मुँहसँ नञि हृदयसँ। ई सभ सोचि गाम लेल विदा भऽ गेलहुँ।

टम्पूवाला गामहिँक आशीष छल। ओहो एहिये गाड़ीक प्रतीक्षा कऽ रहल छल। घरक हेतु विदा तऽ भऽ गेलहुँ परञ्च स्टेशनसँ बाहर निकलितहिं हृदय काँपि गेल। भयावाह रति छल। एक तऽ अनहरिया दोसर धुनि लागल, हाथोहाथ नञि सुझैत छल। हमर संदेहक निराकरण करैत आशीष बाजल, “भाई चलु ने घरमुँहा छैक, धीरे-धीरे चलि जाएब।”

गामक सीमामे आबि ओकर नजरि टम्पूक रोशनीमे एक आदमी पर पड़ल, ओ बाजल, “दखियौक एक आदमी ठाढ़ अछि, की करब एहिठामसँ घुमि जाएब?”

हमहुँ टेम्पूसँ उतरि ओहि आदमीकेँ देखलहुँ। जाड़े तऽ थर-थर कँपितहिँ छलहुँ तखन डरे सेहो थर-थर काँपय लगलहुँ। नाना प्रकारक शंका आबय लागल। भेल एहि भयावाह, निशीचर रातिमे सड़कक बगलमे ठाढ़ रहबाक ओकर की उद्देश्य भऽ सकैत अछि? हमरा स्मरण भेल बाबाक ओ कथन जे ‘प्रयास करी जे कोनो कष्ट नञि आबय, मुदा जौँ आबि जाए तऽ ओकर डटि कऽ सामना करी।’ फलतः हमरा पौरुष जागृत भऽ गेल। हम आशीषसँ पूछलहुँ जे घर पहुँचयमे दश मिनट आर लागत आ ओ तऽ अगसरहिं बुझाइत अछि?

अशीष - आरो आदमी नुकाएल हेतैक की?”

हम - देख एहिठामसँ घुड़ि जाएब ठीक नहि, दुई आदमी तऽ हमहुँ सभ छी।”

आशीष - ओकरा सभलग हथियार हेतैक की?

हम - जे हेतैक घरहिँ चल, देखल जेतैक।

आशीष विदा भेल, टेम्पू जखन ओहि आदमीसँ आगाँ बढ़ि गेल तऽ ओकरा कहलहुँ जे ओहि आदमीक सम्बन्धमे ककरहुँ किछु नहि कहिअहि।

घर पहुचलहुँ तऽ देखलहुँ जे सभ केओ हमरहिं प्रतीक्षामे जागि रहल छथि। बाबूजीक मुखाकृति हमरा की कहि रहल छल से हम बुझिते छलहुँ, माए सरिपहुँ बड्ड दुबरायल छलीह। परञ्च यावत हम किछु बाजी तावत ओ हमरेसँ पूछि देलीह, “बड्ड दुबरायल छी बौआ। ठीक छी की ने?” हम, “हम तऽ ठीकहिं छी। अहाँ ठीक छी ने?”

माए, “हँ बौआ ठीकहिं छी। कमजोरी बड्ड बुझा रहल अछि।” ओ पुतोहुकेँ सभ किछु गर्म कऽ दै लेल कहलैन्ह। पत्नी सभ किछु गर्म केलैन्ह। भोजन कऽ सुतय हेतु गेलहुँ मुदा करोट बदलि-बदलि प्रात केलहुँ।

प्रात भेने अशीषसँ हमरा भेट भेल ओ कहलक जे ओहि राति हमसभ बेकार डरेलहुँ ओ तऽ बाँसक आदमी छल। हम तऽ जा कऽ देखि अयलहुँ।

हम कहलहुँ जे देख मानवकेँ खतरा सजीवहिं मानवसँ अछि ओ आदमी तऽ निर्जिव आदमी छल। सजीव आदमी द्वारा प्राकृतिक उपदानसँ निर्मित निर्जीव आदमी। प्रकृति तऽ मानवक सृजनाकालहिं सँ एकर संरक्षक रहल अछि। एकरहिं संरक्षणामे मानवक अस्तिवक रक्षा भेल अछि। एकरहिं संरक्षणमे मानव उतरोत्तर विकसित होइत-होइत वर्तमान स्वरूपकेँ पौलक अछि। मुदा कृतध्न मानव प्रकृतिहिंक अस्तित्वकेँ विनाश करबा पर तुलि गेल। ओ आदमी तऽ रक्षक छल। एकटा कर्तव्यनिष्ठ रक्षक, एकटा निष्ठावान रक्षक। अपन कर्तव्य पक्ष पर अडिग रहयवाला रक्षक। बिनु भोजना, बिनु दरमाहाक रक्षक। केहन आदर्श रक्षक ओ छल।

कार्टुन कोना

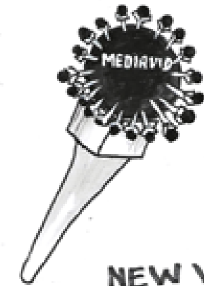
अलविदा बिरजू महाराज



युपीक बन्दर बॉट







निवेदन :- जनगणनाक काज आरम्भ भऽ चुकल अछि। सभगोटासँ करबद्ध आग्रह जे जनगणनामे दसम बिन्दु भाषाक लेल अछि अओर मैथिलीक लेल कोड 162 अछि। सपरिवार ध्यान राखि, अपनो आ आनो सबकेँ आग्रहपुर्वक भाषाक नाम मैथिली लिखाबी। याद राखु मातृभाषाक रक्षाक जिम्मा अपनेक परम् कर्तव्य अछि। - मिथिलांगन

मुद्दा-आधारित समर्थन



❑ ज्ञानवर्द्धन कंठ

ओहि दिन बच्चाकाका पोथी सरिया रहल छलाह, कहलियैन्ह - बच्चाकाका, की मदति कऽ दियऽ?

कहलाह - हौ, हम अपन पसीनक पोथी सभ छाँटि रहल छी। एहिमे तोँ कोना बुझबह जे हमरा की पसीन अछि? तखन हमर कोन मदति करबह? हँ, हम जे चुनि-बटोरिकऽ देबह,तकरा निर्धारित स्थान पर रखबामे सहयोग कऽ सकैत छह।

हम कहलियैन्ह - इएह हेबाक चाही। लोककेँ अपन पसीनक हिसाबसँ काज करक चाही। जेना अहाँ पोथी चुनि रहल छी, तहिना जनप्रतिनिधि सेहो चुनक चाही।

बच्चाकाका रोषपूर्वक बजलाह - हौ अथाह! ई कोन बात लुब दऽ बाजि देलह? एतय कोन पोथी चुनावमे ठाढ़ छैक, जे एतय नञि हेतैक? ओ बाहरोसँ कीनि सकैत छी, मँगा सकैत छी? कहऽ जे व्यक्ति अपन नामांकन करा चुनाव लड़क लेल ठाढ़े नञि हेतह, ओकरा चुनब पार लगतह? ओतय तोरा कोनो स्वतंत्रता छह?

हम फेरसँ कहलियैन्ह - मुदा बच्चाकाका, जौँ केओ पसीन नञि हेताह तऽ 'NOTA'क विकल्प तऽ छैहे।

बच्चाकाका बिहुँसैत बजलाह - हौ, ई तऽ भेलह 'नञि चुनबाक बात'! तखन चुनबह ककरा, से नै कहऽ!

हम बातकेँ आगाँ करैत कहलियैन्ह - हमरा विचारें तऽ पहिने व्यक्तिकेँ देखी, ओकर व्यक्तित्वकेँ देखी। कोनो मुद्दा पर हुनक दृष्टिकोण देखी। तखन निर्णय करी।

बच्चाकाका बजलाह - कोनो दूटा बुद्धि जीवीक संवाद सुनिकऽ तँ नञि अयलह अछि? हौ, ठीकसँ सुनल करह। ओहो लोकनि इएह गप्प कहथुन। मुदा दूनू कोनो-नै-कोनो पक्षमे पूर्वहिसँ मोन बनेने रहैत छथि आ ओहि पक्षमे संगहि विरोधीक विपक्षमे दलील, साक्ष्य आ तर्क एकट्ठा करबामे लागल रहैत छथि। ई आशा नञि करियह जे कोनो संवादक परिणाम स्वीकार कऽ ओ अपन मत बदलि सकैत छथि। हुनक तऽ बेसी इएह कहतह जे नेतावर्गसँ संतुष्ट नञि छी। मुदा ओ भोट ककरा देतैक सेहो तय केने रहैये अपना हिसाबे। किछु गोटे सोचने रहैत छथि जे किछु बीति जाए, भोट हम ओकरे देबैक। किछु गोटे अपन व्यक्तिगत नफा-नोकसानसँ भोटक निर्णय करैत छथि। किछु गोटे ईर्ष्यावश भोट करैत छथि। ओ ओकरा देतैक, तऽ हम ओकरा किन्नहुँ नञि देबैक।

हम पुछलियैन्ह - हेबाक की चाही, से नऽ कहू बच्चाकाका?

एहि पर ओ कहलैन्ह - देखह, तकनीकक जमाना छैक। घरे बैसल एक खाताक पाइ



निकालि दोसरमे दऽ सकैत छह, यात्रा-टिकट कटा सकैत छह, तैँ एहन जोगार हेबाक चाही जे घरे बैसल भोट दऽ सकी। जे काज नञि करय, ओकरा घरे बैसल हटा सकी। एहि सभ मुद्दा पर जोर लगाबी, वातावरण बनाबी। झुट्ठे मुद्दा-आधारितक आवरण पहिरि सुविधा-आधारित संवादसँ लोककेँ मोल्हा बनेने जाधरि रहबह, ताधरि बच्चाकाकाक बात कटाह लगबे करतह। कनी ई पोथी रैकपर अलगसँ राखह - 'अंधेर नगरी!'

संवाद-विवाद अपन मतक प्रचारमात्र रहैत छैन्ह। ओ मुद्दा-आधारित समर्थन नञि, वस्तुतः समर्थन-आधारित मुद्दाक ताकमे रहैत छथि।

तै पर हम फेरसँ कहलियैन्ह - मुदा...

ओ कहलाह - मुदा की? कोनो मुद्दा नञि! हौ, हमरा एक पार्टीक कोनो मुद्दा पसीन अछि आ दोसर पार्टीक कोनो आन मुद्दा। तखन हम की करब? केओ दूटा भोट खसाबऽ देत हमरा? देखह, लोकसँ पुछबह



गोल माल पंचायत चुनाव



❑ कपिलेश्वर राउत

छोट छिन पंचायत विकासपुर। अदौकालसँ विकासपुरमे एक-सँ-एक विद्वान सब जन्म लेलैन्ह। अहिठामक विद्वानके राष्ट्रपति सम्मानसँ आ टैगोर सम्मानसँ सम्मानित हेबाक गौरव प्राप्त भेल छैन्ह। आइ विकासपुरक चर्च जिला-जबाड़मे होएत अछि। आब तऽ तेहन काजक रूपरेखा भऽ गेल अछि जे ईमानदारीक केतौ मोजड़े नञि देल जाएत अछि। नीचासँ ऊपर धरि सरकारी कर्मचारी घूसखोरीमे लिप्त छथि। कर्मचारिए किएक कहबै आम जनतोक आदत व स्वभाव तेहने भऽ गेलैए। तैं एहि बेमारीसँ बाँचव कठिन अछि। एकटा कवि कहने छथि, "जैसे बहे बयार वैसे पीठ ओरिए, पत्थर तरका हाथ जुगुत से खींचिए।"

जीवकान्त बाबा अस्सी बरखक उमेरमे गामक तीत-मीठक अनुभव करैत चौकी पर बैठि चाह पी रहल छलाह आ मनेमन गुनधुन कऽ रहल छलाह। तखने उदयकांत, एकटा ईमानदार, सुशील स्वभावक नवयुवक बाबासँ भेट करबा लेल एलाह। बाबाकेँ गोर लगलैन्ह, बाबो आशिर्वाद दैत बैठबाक आग्रह केलैन्ह। चौकी पर बैसैत उदयकांत बजलाह, "अपना पंचायतमे जे पंचायत चुनाव भेल से जुनि पूछु। तकरे विचार विमर्श करबा लेल एलहुं अछि।"

बाबा बजलाह - कने परिछाकेँ कहऽ।

उदयकांत - ई तऽ बुझले अछि पाँच-छहटा टोल-टपड़ा मिलाकेँ अपन पंचायत विकासपुर बनल अछि। सब टोलसँ एक-एक गोटा ठाढ़ भऽ गेल छल। केओ नौकरी छोड़ि हैदराबादसँ तऽ केओ सिलीगुड़ीसँ आओल तऽ केओ दबँगैक दाबीसँ ठाढ़ भेल छल। ठाढ़ भेला से कोनो बेजाए नै, मुदा सामाजक सेवाक भावना हेबाह चाही, त्यागक भावना हेबाक चाही। ककरो सामाजक विकास होए, जाति-पाति मिटैल जाए, धरम-अधरमक ज्ञान होए, छुआछुतक भेदभाव मिटैल जाए तकर सोच कहाँ छै। फण्डक सर्वग्रास आ दलालीक लालचक अओर कोनो सोचे नञि। एक-दोसरमे ओझड़ी लगा अपन गोटी लाल करी, जेना माछक उजहिया चढ़ल होए तहिना ठाढ़ भऽ गेल छल।

बाबा कहलैन्ह - उदय बौआ, ई कोन नवका बात बजे छह, जहिना धनिक रहत तऽ गरीबो रहबे करत। भ्रष्टाचारी-घूसखोरी रहत तऽ ईमानदारो रहबे करत। चोर रहत तऽ साधु रहबे करत। तेहने हालत आइ विकासपुरक भऽ गेल अछि। अछैत संसाधन, घूसखोरीक चलैत पंचायतक ई दुर्दशा भऽ गेल अछि। आजादीक लेल लड़नीहार न बुझलकै जे कोना अंग्रेज भगाओल गेलै। कोना भगत सिंह, राजगुरू, शुखदेव, बटुकेश्वरदत्तकेँ फाँसी देल गेल। कोना आ चंद्रशेखर आजाद आ गांधीजीकेँ गोली मारल गेल। कोना जमींदारी उन्मूलन भेल आ बैंकक राष्ट्रीयकरण भेल। पंचायतमे केकरो कोनो ज्ञान छै जे हमहीं सब जमींदारकेँ भगेबामे कतेको मुकदमामे फँसा देल गेलौंह। जहल धरि गेलौंह। कतेक कहबऽ, आब तऽ केकरो कोनो सिद्धांते नै छै। सब सुविधा भोगी भऽ गेल। तैं मुखिया, सरपंच, पंचायत समिति आ नेता बनबाक लेल कुकुर मारि करैत अछि। एकटा गीतमे कहै छै नऽ- मेरे पैरों में घूँघरु बन्हा दे तो फिर मेरी चाल देख लें।

उदयकांत बजलाह - बाबा, ठीके कहै छियै। रूपयाक बदौलत वोटरकेँ जे लोभ-लालच दऽ, ताड़ी-दारु पीआ, प्रशासनकेँ घूस दऽ अपन पक्षमे केलक तेकरे गोटी लाल छै। तहिना अपनो पंचायतमे भेलै। सिद्धांतवादी गरीब-मजदूरक नेता छल तकर वोटकेँ प्रशासन लाख-दू-लाख लऽ कऽ दोसराकेँ जीता देलक।



बाबा बजलाह - कहु तऽ ई तऽ बड्ड अन्याय भेल किने! घरवालीकेँ घरे नञि आ

निमोछाकेँ घर। गामक मुखिया तऽ ओ न जे गामक जनताक हर दुःख दर्दमे संग दै।

उदयकांत बजलाह - बाबा यौ भेलै ई, वोटमे जे खेला-बेला भेल से तऽ भेबे कैल, गिनती बेरमे प्रत्याशी सबकेँ कोनो खबड़े नञि आ पुरना मुखिया आ ओकरे ठाढ़ केलहा दूटा प्रत्याशीकेँ लऽ जा बाउण्ड पेपर पर हुनका सबसँ दस्तखत करबा प्रशासन पुरना मुखियाकेँ जीत घोषित कऽ देलकै। जखन आन-आन प्रत्याशी बुझलक आ गिनती रूममे गेल तऽ इ.वी.एम खुजल देखलक। तखन सब हल्ला केलैन्ह। पुलिस सब दू-दू डंडा दऽ कहलक, "दोबारा गिनती करा लिअ।" इहो सब अड़ि गेलाह। पाँच-छह घंटाक बाद दोबारा गिनती भेलै। रिजल्ट जहिना सुनौने छल तहिना भेलै मशीने छलै नऽ। बटमे टिपलासँ होए छै तऽ मुँह मिलानी कऽ देलकै।

बाबा बजलाह - प्रशासनो जेकड़ नमक खेने रहै तेकड़ शरीयत दऽ देलकै। आगाँ हरलाहा सब की केलक से नऽ कहऽ?

उदयकांत आगाँ बजलाह - बाबा, एकटा सिद्धांतवादी प्रत्याशी योगानंद छलाह ओ गाम आबि सब हारल प्रत्याशीकेँ बजा बैठार केलैन्ह आ संघर्ष समितिक निर्माण केलैन्ह। विहान भने ब्लॉक पर धरणा प्रदर्शन केलैन्ह। जखन चुनावमे जे धांधली भेल छल ताहि लेल कोनो सुनबै नहि भेल। पुनः एक दिनक बाद जिलामे जा समाहर्नालयक आगाँ अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैसि गेलाह।

बाबा रूचि लैत पुछलैन्ह - अखन कतेक दिन भेलैन्ह हन भूख हड़ताल पर बैसला?

उदयकांत - अखन तऽ साते दिन भेलैन्ह।

बाबा - देखहक कते दिन धरि भूख हड़ताल पर रहै छथि। गांधीजी तेईस दिन धरि भूख हड़ताल पर रहल छलाह। बंगालक एकटा क्रांतिकारी यतिन्द्रनाथ दास, ओ एक्कासी दिन धरि भूख हड़ताल पर बैसल रहैत। अंतमे हुनकर मृत्यु भऽ गेल रहैन्ह। हुनकर लहास सुभाष बाबू प्राप्त केने रहैथ।

देखबहक जे किसान सब लेल खेतीक ततेक नै औजार आ मशीन-पाइनिक सुविधा भेलै जे बीया-बागसँ लऽ कऽ कटनी, दौनी आ तैयार करय धरिक सुविधा भेलै। मुदा किसानक बेटा किसानी छोड़ि बाहरक लेल पलायन केने जा रहल अछि। जुआन-जहानसँ पढ़ल-लिखल धरि भागि रहल अछि, तखन गामक सुधार कोना हैत? तेहने हालत सरकारी तंत्रोक छै। अपनेमे बन्दरबाँट करैत अछि। गामक दूधक दाढ़ीए भेटै छै। जेहन भ्रष्ट सरकारी तंत्र, तेहने भ्रष्ट किछु आम जनतो भऽ गेल अछि तहन किएक नहि उलटफेर करत।

बाबाक बात सुनि उदयकांत बजलाह - प्रशासन तेहन नै आदत बिचौलियाकेँ लगा देलक जे इंदिरा आवासमे दस हजार, वृद्धा पेंशनमे पाँच हजार, पैखाना घरमे दू हजार बान्हल फीस अछि। एना कोनो अपने पंचायतमे भेलै अछि, से नै छै। सभ पंचायतक हालत एहने छै। कमीशनकेँ चलैत पंचायत व देश बर्बाद भऽ गेल छै। जहन कि प्रत्याशी सब वोटमे घोषणा करैत अछि जे हम सुयोग्य, कर्मठ, ईमानदार आ सामाजसेवी छी।

बाबा बजलाह - जतय केर जनता जतेक सचरगर हेत ततय आन्दोलन आ संघर्ष हेबे करतै।

उदयकांत जिज्ञासा करैत पूछलैन्ह - तहन अन्यायक खिलाफ कोना सामाजक विकासकेँ आगाँ मुँहे ससारत। कोना ईमानदार बनि सामाजमे जीवय? देखलिए हन जे मदनपुर टोल पर जे रोड ढलाए भेलै ओ दसे दिनक पछाति टूटि-टाटि गेलै। तहिना दक्षिणबरिया टोलक सड़कक सेहो भेलै। कारण छलै सीमेंट बालू व गिट्टीक मात्र ततेक नै कम देलकै, पाए बचा लेलक आ रोड ढ़नमना गेलै। तहिना सभ बिजली पोल पर सोलर लाइट लगेबाक छलै मुदा सरकारी आदेशकेँ औंठा देखाबैत घटिया किस्मक लाइट लगा पैसाक बन्दरबाँट कऽ लेलक। डिलरकेँ आदेश छै जे प्रति यूनिट पाँच किलो आनाज देबाक मुदा दैत अछि चारि किलो। सगरे जेना लूट मचल छै। जन प्रतिनिधि तऽ बुझैत अछि एक बेर कहुना जन प्रतिनिधि बनि जाए आ कतेको पीढ़ी लेल जमा कऽ ली। जहन की उमेर तऽ गनल-गुथल छै।

बाबा बजलाह - आब बुझलहक नऽ जे कोना लूट मचल छै? जे जतै छै से ततै लूटि रहल छै। जनता जाऊ भाँड़मे। केँ सुधि लेत जनताक? भगवानो तऽ दू रंगाहे अछि। गरीबकेँ गरीब सन आ धनिककेँ धनिक सन व्यवहार करैते छथि। उचित वक्ता आकि ईमानदारीसँ काज केनिहार अंगूरी पर गनने भेटत वा नहिए भेटत।

उदयकांत - तहन गाम वा देशक सुधार कोना हेत?

बाबा - केना सुधार हेतै? से तोड़े वा हमरे ऊपर अछि। जे टिटही जकाँ टाँग आकाश दिस तनने छह। दुनियाँ बड़ीटा छै। दुनियाँ समुन्द्र छिअए। किओ खुट्टा गाड़िके थोड़े रहल हन। एक-नञि-एक दिन सबकेँ नाश होएते छै। तैँ कहबऽ इज्जतक संग जीवऽ। अपना पएर पर ठाढ़ रहऽ आ ईमानदारीसँ जीवैत रहऽ। कतेक कहबऽ? हरि अनंत हरि कथा अंनता। जा बड़ी काल गप-शप केलहुँ। सगरे गोले माल चलै छै। आब दोसर दिन आरो गप-शप करब।



हँ, एहनो होइत छैक



❑ डॉ. शेफालिका वर्मा

सासु पुतहुक ताना-तानीसँ परेश हरदम तनावमे रहैत छल। जे माएसँ पिता कोनो धीया-पूताकेँ जोर से नञि बाजऽ दैत छलाह, आइ पिताक बाद माएकेँ ककरो आनसँ नै अपने पुतहुक एतेक बोलीक गोली सहय पड़ैत छल सेहो बिनु कोनो कारणेँ। घरमे कोनो काजमे गड़बड़ तऽ माएक माथे, रीना प्रत्येक नीक काजक श्रेय अपना पर। माए दुःखी तऽ रहिते छलीह परञ्च मौन-मूक बेसी रह लगलीह।

रीना अपन नैहरमे अपन माएकेँ देखने छलीह खाली नानीसँ मौसा-मौसी, भाए-भौजायसँ सटल। दादा-दादीकेँ तऽ खाली शब्द मात्र छल। प्रेम नै, हेम-छेम नै ओकर बालमनमे सासुरक रूप एहने बसल छल। जाधरि माए रीनाक बड़ाई करथि, रीना खूब खुश। रत्ती जे टोकि दैत छलीह रीना माहुर भऽ जायत छलीह, तामसे पित्त लहरि जायत छल।

"एकटा बात सुनैत छी" पतिक प्रेमपूर्ण स्वर सुनि "बाजू ने की कहैत छी। चाह बना रहल छी।"

माए मंदिर गेल छलीह, चाहक आसमे परेश डाइनिंग टेबल पर पेपर उल्टा-पुल्टा रहल छल।

हाथमे दुटा कप नेने रीना बैसि गेलीह - आब बाजू, की कहबाक छल?

अपना सभ वियाहमे अग्निक सोझा किरिया खेने छलौंह, अपना सभ एक दोसराक सुख-दुःखमे संग रहब, एक-दोसराक सहगामिनी रहब। जे हम कहब से अहाँ करब, जे अहाँ कहब से हम। यानी एकटा संगी बनल रहब।

रीनाकेँ निश्छल आँखिमे जेना ओकर निर्दोष अंत छलकि आयल - हँ... हँ... हमरा मन अछि! अचक्के अहाँकेँ किएक मन पड़ल?

हम सोचैत छी जे हम कतेकोठाम चुकि जाइत छी। अहाँक माए हरदम एहिठाम अबैत-जाइत रहैत छथि। अहाँ जाहि ढंगसँ हमर माएस गप करैत छी, ओहिना तऽ हमरो अहाँक माएसँ गप करबाक चाही। जहिना हमर भाए-बहिनक विषयमे अनर्गल



प्रलाप करैत छी, ओहिना तऽ हमरो अहाँक भाए-बहिनसँ करबाक चाही। हम चुकि जाइत छी। हमरा लगैत अछि हम कतहु किछ गलत कऽ रहल छी। आब एथीन तऽ हम अहिं जकाँ व्यवहार हुनकासँ करबैक।

पति दिस भुकुर-भुकुर तकैत रीना अस्फुट स्वरे बजलीह - की एहनो होइत छैक?

परेश हुनकर कान्ह पर हाथ राखि कनि दबबैत बाजल - हँ रीना, एहनो होइत छैक।

अछिंजल



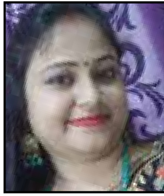
❑ कुमार मनोज कश्यप

स्कूलक छुट्टीक घंटी एम्हर की बाजल सभ बच्चा अपन बस्ता समेटने घर दिस बेछोह पड़ायल। स्कूलक बाद चौड़मे पहुँचिते एका-एक पैघ-पैघ बुन्नी संग बरखा शुरू। भिजबासँ बचबा लेल सभ अओर जोड़सँ दौड़ल आ दौड़ैत-दौड़ैत एकटा घर लग जा कऽ क्षणिक विरमि अछोपक घर बुझि पड़ाइते रहल। मुदा अस्थमासँ पीड़ित ओकर साँस फूलय लगलै आ आगाँ दौड़बामे अक्षम ओ ओतहि ठाढ़ रहि गेल।

गामक बाहर ई अछोपक घर छै आ मैयाँ कहै छै जे ओकर छाँहोंसँ लोक छुआईत छै, तैं दूरे रहक चाही। प्राण-रक्षा आ छुआयब... एक दिस पोखरि दोसर डिस ईनार... महान धर्म-संकट! कि करय ओ? अनायास ओ पानिसँ अपनाकेँ बचबै लै दाबा पर चढ़ि भीतक देवालमे सटि गेल। ताबत आँगनसँ एकटा स्त्रीगणकेँ सूप ओढ़ने आबैत देखि ओ डेरा गेल। लगलै ओ तमसैत जे हमर दाबा ढ़हि जैत आ एतय सँ बैला देत।

ओ डेराईत-डेराईत दाबासँ स्वयं निचा उतरिते रहै कि ओ स्त्री बजलै, "बाऊ! बलू असोरा पर आ जाऊ... हियाँ भीज जैब। डेराऊ नै... अपना घर जा कऽ गंगाजल छीटि लेब। अहाँ आऊर सुकुमार लोक भीजब तऽ बेराम भऽ जैब।" ओ बिनु किछु बजने ओहि स्त्रीकेँ देल सूप ओढ़ि कऽ झटकारैत ओकर ओसारा पर चढ़ि गेल। घर जा कऽ जे प्रायश्चित करय पड़ौ, मुदा प्राण-रक्षा तऽ भेलै।

कोरोना



❑ अंजना शर्मा

आब कोरोनाक नाम सुनितहिं होइया खूब कानि। कोरोना एहन नाम आबि गेल अछि जे जाधरि लोक जीयत ताधरि नै बिसरत। ई एहन वैश्विक महामारी आयल जे देश-विदेशक कोनो कोना बाँचल नै रहि सकल। चाइनावला सब तऽ अपने मरल आ संगे-संग सब देशक लोककेँ गटकी गेल। भगवान जल्दीसँ नीक दिन घुराउ आ एकरा भगाऊ। ई किछ सिखाइयो देलक, जेना- केहुनीमे छिंकू, बिनु मास्क लगेने बाहर नै निकलु, कनि-कनि काल पर हाथ धोऊ, पड़ोसी घर नञि जाऊ, मॉल, सिनेमा, भीड़-भड़क्कावला जगह पर एनाय-गेनाय कम करू।

हमर गामक करिया कक्काक एकटा बेटा आ दूटा बेटी छलैन्ह। सब गामेक स्कूलमे पढ़ैत रहैन्ह। बेटी दूनू पैघ आ बेटा छोट छलैन्ह। दूनू बेटीकेँ वियाह बड्ड सुखितगर घरमे केने रहथि। काकी सेहो बड्ड नीक रहथिन। बेटा छोट रहला कारणेँ अखन नीचुलके कक्षामे पढ़ै छल। जखन बेटा बेचन मैट्रिक पास केलक तऽ कक्का दूनम प्राणीक मन बड्ड खुश भेलैन्ह। अपने कम पढ़ल रहथि, बेचनकेँ आगाँ पढ़ेबाक कक्का-काकीक बड्ड इच्छा छलैन्ह। मुदा बेचनक अँगूठा छाप संगी सब गप्प दऽ कऽ बेचनकेँ रास्ता भटका देलक।

संगी सब कहलक जे गाममे रहि गमैया बनयसँ नीक चल दिल्ली हमरा सब संगे, ओत खूब मजा एतहु। बेचनकेँ मन तऽ नै रहैक मुदा संगी सब ततेक जोर देलक आ शहरक बड़ाई केलक जे इच्छा भेलैक जे हमहुँ दिल्लीमे जा किछ टाका कमा लेब आ ऐशसँ रहब। जखन दिल्लीवला बात कक्का आ काकीकेँ सुनौलक तऽ ओ सब सन्न रहि गेलाह। कहलैथ जे तोरा पैसाक चिंता किएक होए छौ? तू अखन पढ़ आ हमरा सभहक नाम रौशन करिहें। बेटा नै मानलक चलि गेल। जा कऽ ओत काज पकड़ि लेलक। धीरे-धीरे कक्का आ काकी अपन काज-राजमे लागि गेलैथ। फोनसँ गप-सप होए छल। अचानकसँ कोरोना संक्रमणक हवा चलि गेलै जाहि कंपनीमे काम करैत छल से बन्न भऽ गेलै। धीरे-धीरे कोरोना विकराल रूप धारण कऽ लेलकै। कतेको मौतक मुँहमे समा गेल। दिल्लीमे तऽ त्रहिमाम मचा देलक। आब कि करत से बेचनकेँ किछु नै फुरानि। आँखिसँ दहो-बहो नोर झरय लागलैन्ह। मोन पड़लैन्ह माए-बाबूक कहल बात। कोरोनाक विकराल रूप देखी बेचनकेँ बड्ड पछतावा होमय लगलैन्ह। तीन मास पर बेचन दिल्लीसँ गाम घुरि अयलाह आ अबिते देरी माएसँ कहलथि जे आब हम जे करब से गामेमे करब। ओ दिल्लीक रूप देखी गाम आबि गेलाह। काकी आ कक्काक खुशीक ठिकाना नै छलैन्ह। बेचनक फैसला पर सब कियो सहमति दऽ देलैन्ह। सब खुशी-खुशी गामेमे रहय लगलाह।

शहीद जवान



❑ अंजू मिश्रा

विजय ऑफिस लेल विदा होएत रहैथ की मोबाइल बजलैन्ह। मोबाइल साइलेन्ट कऽ ऑफिस लेल विदा भऽ गेलाह आ अतीतक संस्मरणमे विलिन भऽ गेलाह- 1999 जूनक महिना हॉस्टलके रिसेप्शन पर फोन छल.. एहि बेर गर्मी छुट्टीमे गाम कहिया एबहीं? बुचिया सासुरसँ पहिले बेर एतौ आ बाबू सेहो रवि दिन आबैय छथुन...

बाबू भारतीय सेनामे कार्यरत रहैथ, जम्मू-कश्मीरमे पोस्टिंग रहैन। 2 साल बाद गाम अबैत रहैथ। विजय शनिदिन गाम पहुँचलाह। घर पर कोनो पावनि सन माहौल छल, रविदिन माए आ बुचिया दूनू व्यस्त छल। कियो खाना बनाबै मे तऽ कियो बाबूक कोठरी साफ-सफाईमे, बाबू सफाई आ व्यवस्था पसंद लोक रहैथ। घड़घड़ाईत जीप दलान पर आयल। सब दौड़ल बाबू एलखिन-बाबू एलखिन... अचक्के एकदम सन्न... बाबू तिरंगामे जे आयल रहैथ (कारगिलक शहीद जवान)।

क्षण भरि बाद भीड़ आ सन्नाटाकेँ चिड़ैत पूर्ण जोशमे आवाज आयल 'जय हिंद'।



आइ माएक एकटा अलगे रूप देखायल... पूरा राजकीय सम्मानक संग शहीद जवानक अंत्येष्ठी भेल।

ओ दिन छल... आ आइ धरी 21 साल बादो माए हर साल जूनमे एक बेर फोन अवश्य करत... छुट्टी कहिया हेतौ, गाम नै एबहीं... आ मौन... ई मौन अतीतक संस्मरण आइयो ताजा कऽ दैत छल।

विजय स्नातकक बाद बाबूक अधूरा स्वप्न पूरा करय लेल भारतीय सेनामे कार्यरत भऽ गेल रहैथ।

आइ फेर माएक फोन आयल छल। विजयक मष्तिस्कमे द्वन्द चलैत छल, कोना कहियैय माए, आइ फेर देशक रक्षा करैत कैटा कोख उजड़ि गेल, कैटा सिथ सुन्न भऽ गेल, कैकटा बच्चा-बच्ची अनाथ भऽ गेल। केना कहियै, माए आबी तऽ रहल छी गामे दिस, मुदा गर्मीक छुट्टी मे नै... शहीद जवानक पार्थिव शरीरक संग...।



साँठ



❑ वंदना झा

राति‌ए तऽ सुधाक दुरागमन भेल, आइ भोरेसँ सासुरमे सुना-सुना कऽ सुधाक नैहरक नामे आने-माने लगा-लगा कऽ बात कहब शुरू भऽ गेल छल। सुधाक साउस, “कनियाँक माए कोन-कोन जमानावला सड़ल-गनहायल नुआ सब साँठमे साँठि कऽ धऽ देने छैक से नै देखियौ, एहनो कतहुँ साँठ देल जाइत छैक। ओहो अपन धी-बेटीकेँ, छिया-छिया!!!”

सुधा कोहबर घरसँ चुपचाप अपन साउसक सबटा गप आ अपन नैहरक लेल गाइर-बात सब सुनि, आँखिसँ बहि रहल झर-झर नोरक संग हुनका नञि जानि कोन-कोन जमानाक बात याद आबय लागल छल।

सुधाक माए सदिखने कतहुँ सँ भेटल आकच-दोकच नुआ सब ई कहि कऽ बक्सामे राखि दैत छलखिन्ह, जे सुधियाक बियाह-दुरागमनमे, साँठ देबयमे गिनती जुराबैमे ई सबटा नुआ सब काज आबि जेतैक। दु-चारिटा नबका नुआ फेंट कऽ ई सबटा नुआ बक्सामे धऽ कऽ साँठि देबय।

कतेको बेर इएह सब गप सुनैत-सुनैत एक बेर सुधा अपन माएकेँ टोकि देलकै, “माँ गे! कोन काज छैक एहन नुआ लत्ता सब देबाक, कें पहिरतै ई नुआ-लत्ता सब जे तूँ सेहो नहि पहिर सकैत छहिन?”

सुधाकेँ एतबे बाजिते सुधाक माए ओकर झोंटा लिरियाबैत बाजय लागलै, “गे निरासी! हम सबटा बात बुझैत छियौ, तोहर आँखि हमर सबटा सिल्क आ बनारसी नुआ सब पर गरल छा। गे रक्षसिया! तू की बाजलहिन्ह, हम अपन ओ सबटा सिल्कवला नुआ सब तोरा दऽ देबौ! हे गै, सुनि ले नंगटे विदा कऽ देबौ मुदा अपन



वला एक्कोटा नीकहा नुआ-लत्ता तोरा नञि देबौ। रक्षसिया जनमबे कएल अछि जेना हमर शौखक सराध करबाक लेल।”

आँगनमे साँठक चीज-वस्तु सभहक लेल भोरेसँ हो-हल्ला आ घोंघाउज सब सुनि कऽ सुधाक वर सेहो आँगन दिस अयलैन्ह आ कोनहुँ काजक बहाने कोहबर घर दिस गेलाह तऽ ओतय अपन नवकनियाँ सुधाकेँ दहो-बहो नोर बहा कऽ कानैत देखि ठिठकि गेलाह। ओतेक देरसँ माएक मुँहे नुआ-लत्ताक लेल घोंघाउज सुनि सबटा गप बुझा गेल रहैन्ह।

सुधीर अपन हाथसँ सुधाक नोर पोछैत कहलखिन्ह, “एक सप्ताह बाद तऽ अहाँकेँ हमरे संग चलबाक अछि, ई नुआ-लत्ता सभ कतेक दिन चलतैक? माएक बात पर नञि कानु, जतेक जे कमी रहि गेल अछि ओ अहाँ अपन सिनेह आ प्रेमसँ पूरा कऽ दियौ। हमरा लग बड्ड बेसी धन संपत्ति तऽ नञि अछि मुदा ई नुआ-लत्ता लेल एना कानब, हमर अहाँक जिनगीमे कहियो नञि होएत।”

ई बात कहि सुधीर अपन बाँहिमे सुधाकेँ भरि लेलैन्ह, सुधाकेँ सेहो ई लागलै जे ओकर जीवनक असली साँठ तऽ इएह अछि। अपन वरक असली प्रेम आ सिनेह, जे ओ पाबि गेल।

डिमोशन



❑ मिन्नी मिश्रा

दोस, तोरासँ दू वर्षक बाद भेट भेल, सलीम-ड्रीम कोना भऽ गेलैं? जाधरि नौकरीमे छलैं तोहर धोइध आगाँ-आगाँ चलैत छलौ! तो लगैत छलैं जे ऑफिसक बड़का हाकिम छैं। ऑफिसमे तोहर धोइध देखि कऽ लोक डराइत छलौ। आब तऽ ओकर पते नहि छौ, सरपट मैदान भऽ गेलौ!

रौ, तीस वर्षक कमाओल धोइध, कोना सटकि गेलौ? घोर आश्चर्य! अपना सभ एक्के संगे पढ़लौंह, संगे-संगे नौकरी केलौंह आ रिटायरमेंट सेहो संगे भेल। तों भागक जोरगर छलैं, प्रोमोशन पाबि चपरासीसँ बड़ा-बाबू भऽ गेलैं आ हम सबदिन चपरासीये रही गेलौंह, खैर...! आब, ई बता जे कोहा सनक धोइध कोना बिला गेलौ? तोरा कोनो असाध्य रोग तऽ नञि भऽ गेल छौ? बड्ड चिंता भऽ रहल अछि।

पुरान मित्रसँ भेट करय आएल आगंतुक मित्र पुछलक तऽ दोसर मित्र हँसी देलैथ।

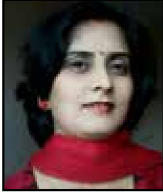
- रौ.. बताह जेना किएक हँसैत छैं? हमरा सत-सत बता।

- धत्त, बुरबक। ध्यानसँ सुन, रिटायरमेंटसँ पहिने हम ऑफिसक काज करैत छलहुँ आ रिटायर भेलाक बाद घरक सब काज करैत छी। हमर घरवालीक कहब छैन्ह जे ‘अहाँ रिटायर भऽ गेलौंह तैं आब काजवालीक रखनाय मतलब पैसा फेकनाय तैं घरक काज अहिं करू।

सुनितहिं दोसरक मुँहसँ अनायासे निकलि गेलै ‘रौ, रिटायरमेंटक बाद तोहर डिमोशन भऽ गेलौ। आब तों चपरासी आ हम बाबू। बड्ड देर भए गेल, घर जाइत छी, घरनी खेनाय परसि हमर बाट तकैत हेतीह। जाइत-जाइत एकटा बात कहि दैत छीऔ, कतबो काज करबें आब तोरा प्रमोशन नञि हेतौ।

एतबा सुनितै दोसक आँखी आ मुँह डोका जेना फक्कसँ खुजि गेल।

अलौकिक दीपोत्सव : देव दिवाली



❑ कविता पाठक झा

पूर्णिमा मानव जीवनक सुख-समृद्धि, सौंदर्य, शीतलता आ निश्छलताक प्रतीक अछि। चन्द्रमाक दूनू छवि पूर्णिमा आ आमवस्या मानव जीवन यात्रामे सुख आ दुःखक प्रतीक मानल जाइत अछि। आमवस्याक बिना पूर्णिमाक कोनोमिहत्व नै, यानी बिनु दुःख सुखक पूर्ण आनन्द नै प्राप्त भऽ सकैत अछि। दूनू मानव जीवनक सत्य थीक आ एक-दोसराक पूरक सेहो। चन्दमाक दूनू छवि अति सम्मानित होयत अछि। अपना सब नश्वर प्राणी कार्तिक आमवस्याकेँ दीपोत्सव मनाबैत छी, मुदा शाश्वत देवगण सब दीपोत्सव कार्तिक पूर्णिमाकेँ मनाबैत छथि।

हिन्दु धर्ममे बारहटा पूर्णिमा होएत अछि। पूर्णिमाक चाँद सदिखन सौंदर्य, शीतलता, निश्चछला आ उज्ज्वलता रूपमे प्रतिष्ठि छथि। ओहियोमे कार्तिक पूर्णिमाक चाँद अद्वितीय सौंदर्यपूर्ण आस्था अओर उमंग भावसँ उदित होयत छथि। किएक तऽ जगत पालनहारी केर निन्द्रासँ जगलाक बाद प्रथम पूर्णिमासी रहैत अछि। चाँद पूर्ण उत्साहित आ अनन्दित रहैत छथि। एहि लेल कार्तिक पूर्णिमा धार्मिक दृष्टिकोणसँ विशेष होइत अछि। माँ गंगा आ जलाशयमे भक्तगण आस्थाक डूबकी लगाबैत छथि आ लोक-पारंपरिक पावनि सामा-चकेबा भाएक लेल शुभकामना माँगैत विधिवत लोकगान संग विदाई करैत छी। शिवपुत्र कार्तिकेयक जन्मोत्सव सेहो बड्ड धुमधामसँ मनायल जाइत अछि। सिखक प्रथम गुरु गुरुनानक जीक जन्म दिनक शुभ अवसर पर सिख सब प्रकाशोत्सव मनाबैत छथि।

देव दिवाली जकर वर्णन आ विशेषता हम पत्र-पत्रिकामे पढ़ैत छलहुँ, ओकर प्रत्यक्ष दर्शन लेल आत्मीय लालसा छल। ईश्वरक कृपासँ 2010मे देव दिवालीक प्रत्यक्ष दर्शन करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल। काशी गंगाघाट पर अपूर्व मनमोहक छवि, अन्तस मे परमानन्द केर अनुभूति भेल।

कार्तिक पूर्णिमामे काशी गंगाघाट पर मानव आ देवताक समागम रहैत अछि। सम्पूर्ण देव उपस्थित भऽ मानव संग दीपोत्सव मनाबैत छथि। धार्मिक मान्यता अछि जे कार्तिक आमवस्यामे राम रावणक वधकऽ अयोध्या अयलाह अओर कार्तिक पूर्णिमा देव दीवाली दिन शिव त्रिपुरासुर नामक विशाल राक्षसक वधकऽ काशी नगरी अयला। देवगण खुशीमे विशेष रहैत अछि। हम सब औढ़रदानीक कृपासँ जलाभिषेक केलहुँ, मानवीय जीवन अक्षय सुखक कामना सब रखैत छथि, हमहुँ बाबासँ अक्षय सुखक कामना केलहुँ।

पूर्णिमा दिन रविवार छल हम सब गंगा स्नान कऽ ओहि घाट पर बौआक मुडंन करा दोसर शिव मंदिर पर अपन परम आदरणीय मामा जीसँ हम दूनू प्राणी विधिवत गुरुमंत्र लेलहुँ।

संयोगवश ओहि दिन रवि-शनि पावनि सेहो छल। स्त्रीगण माए-बहिन सभ मंदिरे प्रांगणमे एकसंझा कैलैन्ह। संध्या काल गंगाघाट पर दीप दीवालीक मनमोहक छविसँ अध्यात्मिक आनन्द प्राप्त केलहुँ। दीप दीपावलीमे सम्पूर्ण घाट पर आस्था उमंगक दीप प्रज्जवलित कएल जाइत अछि। घाटक आलौकिक छटा



अवर्णनीय रहैत अछि। कतेको तरहक अद्भूत सांस्कृतिक कार्यक्रय सब होएत अछि। भक्तगण ाक अपार भीड़, कतको भक्त नौका विहार कऽ दीप दीपालीक अलौकिक आनन्द लैत छलाह।

ओहि दिन काशीमे दीपोत्सव मनौलैन्ह, ओहि दिनसँ देव दिवाली काशी घाट पर मनाबैक परंपरा बनल अछि आ दिन महादेवकेँ शिव त्रिपुरारी नाम सेहो पड़लैन्ह।

संयोग्य ई भेल जे हमरा बौआकऽ लेल हमर माए काशी गंगाघाट पर मुंडनक कबुला केने छलीह। कार्तिक पूर्णिया 2010केँ योजना बनल जे बौआक मुंडन संग गुरु मंत्र सेहो लेब।

पूर्णिमासँ एक दिन पहिले बैकुंठ चतुर्दशी कऽ काशी बाबा विश्वनाथ नगरी हमसभ सपरिवार 15 आदमीसँ पहुँचलहुँ। माँ गंगामे स्नान कऽ अपनाकेँ पवित्र करैत बाबाक दर्शन केलहुँ। बाबाक दर्शन बैकुंठ चतुर्दशी दिन

दोसर दिन हम सब माए विध्यांचल देवीक दिव्य दर्शन केलहुँ। बाबा विश्वनाथ आ माए विध्यांचल देवीक दर्शन कऽ अपनाकेँ कृतार्थ करैत अपन गन्तव्य लेल प्रस्थान केलहुँ।

शिव-शक्तिक कृपासँ दीप दीवाली केर जे अलौकिक आनन्द आ ओकर प्रत्यक्ष दिव्य अनुभूति भेल, से एखन धरि हदयकेँ प्रफुल्लित करैत अछि । देव दिवाली अलौकिक दीपोत्सव अछि, मन आ विचारमे शुभताक आलोक करैत अछि।

कोरोना काल



❑ संजय झा 'नागदह'

कोरोना एखन गेल कहाँ जे बात संस्मरणक करू! हँ, मुदा ई कहल जा सकैछ जे कोरोनाक शुरुआतसँ एखनधरिक संस्मरण अछि! हमरा याद नञि वरन् एकदम दिमागक पटल पर स्पष्ट स्मरण अछि जे दिसम्बर 2019सँ एकर सुगबुहाट भऽ चुकल छल। मुदा एहि बातक तऽ ककरो कोनो आशंको नञि छल जे एहन विकराल एकर स्वरूप हेतैक। अवश्य रूपें, जकर नामहिं मात्रसँ दुनियाँ थर-थर काँपय लागत। लोक एना डेरा जाएत जेना सिंह द्वारक मुख्य भाग पर मासक-मास भूखसँ व्यग्र भऽ ओकरहिं बहरएबाक प्रतिच्छा कऽ रहल होए।

हम एहि बिकट समस्याक प्रादुर्भावसँ गोटेकमास पहिने ईस्ट अफ्रिकाक तंजानिया देशक अरुषा नामक शहरमे पहुँच चुकल छलहुँ आ पुनः अपन स्वदेश ओ गाम जएबाक नेयार मार्च 2020क मध्य कएने छलहुँ। एहि बीच, ई कोरोना नामक अदृश्य बेमारी तेना नै पसरल जे दसो दिशाकें बिन रस्सिये बान्हि देलक आ सभहक आवागमन पर अंकुश तेना नै लगा देलक जेना सीताक कुटियामे कियो प्रवेश नञि करए ताहि लेल लक्ष्मणजीक रेखा। एकान्त भावे जाहिठाम छलहुँ ताहिठाम तेना ठमकि गेलहुँ जेना बाढ़िक पानि बाढ़िक उपरान्त ठमकि जाएत अछि, नै एक्को मिसिया एमहर नै ओमहर। संयोग नीक छल जे हमर कार्यालय आ डेराक दूरी मोसकिलसँ दू सय डेग। हम एकसरे तंजानियामे नौकरीक विवशतामे अटकल छलहुँ, माए-पिताजी गाममे आ पत्नी दूनू पुत्रक संग दिल्लीमे।

माताजी-पिताजी गाममे बन्हायल छलाह, परिस्थिति एहन नञि छल आ नै उम्रे एहन जे दौड़ कऽ भागल-भागल धिया-पुता लग दिल्ली चलि अओताह आ ताहूमे गाममे लगभग नब्बे बरखक दाई (बाबी)कें छोड़ि एनाय कठिन। हमर अनुज सेहो एहि देशक एकटा द्वीप जांजीबारमे कार्यरत छथि जे हमरा लगसँ प्रायः आठ सय किलोमीटर हेतैक, ओहो कोरोना कालसँ एखनधरि घेरायल छलाह, मुदा एहिठाम कनियाँ आ बाल-बच्चाक संग छथि तऽ हुनका दिससँ मोन कनि हल्लुक रहैत छल।

सोचि सकैत छी जे असगर विदेश प्रवासमे रहयवलाकें एहि बेमारीक नाम सुनि की हालत भऽ सकैये? मार्चमे तऽ कोरोनाक लीला छत चढ़ि तांडव केनाए शरू कऽ देने छल। जाहिठाम हम छी ओहिठामक मौसम सालोभरि सामान्य ठंढ़ा रहैत अछि। आठ-दस दिन सर्दी-बोखार मुदा खाँसी नञि छल, सँ पीड़ित रहलहुं। मोन डेरा गेल छल, मुदा डॉ.क उपचारसँ पाँच-सात दिनक बाद मोन हल्लुक भेल। जानि नञि कोरोनाक कोनो छोट-छीन रूप छल आ की सामान्य सर्दीक प्रकोप? जानथि भगवान!

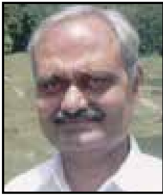
ई देश लॉकडाउनक शिकार तऽ नञि भेल। मुदा बजारसँ लोक गायब, सामान्य लोक मास्कक प्रयोग प्रमुखतासँ एक-सावा मास कएलक। सब दोकान, प्रतिष्ठान इत्यादि पर सेनिटाइजर, गरम पानिसँ हाथ धोयबाक व्यवस्था सरकारक फरमान छल, तकर लोक पालन कएलक। बन्न तऽ एको क्षण लेल ई देश नञि भेल। लोक अपन देशक लोकसँ फोने पर नजदीकी बढ़ाबय लागल जे कदाचित कोनो विपरीत परिस्थिति हेतैक तऽ एकजूट भऽ सरकार पर दबाव देबैक। हालाँकि जुलाईसँ फ्लाइट इत्यादि कोनो-ने-कोनो माध्यमसँ टुकटुकेलै से इएह सभहक कारणें।

कोरोना एहिठाम नञि एलैक वा नञि रहैक से कहनाय तऽ अनुचित हेतैक। कारण हमरा सम्पर्कमे एहिठामक कतेको लोक कोनो-ने-कोनो माध्यमसँ छथि। ई तऽ सुनबामे आबय जे लोक मरि रहल छै, सरकारक आदमी आबि रातिमे ओकरा दफना दैत छै, संगहि ओकरा परिवार पर चौदह दिन बाहर नञि बहरएबाक प्रतिबन्ध सेहो। एहिठाम कोरोना पर कोनो रिपोर्ट छापब प्रतिबन्धित छल। न्यूज़ पोर्टल आ लोक एहि विषय पर अपन मुँह बन्न केने छल। हमरा एक दिन अपन भारतसँ कोनो न्यूज पोर्टल पर लाइव एबाक आमंत्रण भेटल जाहिसँ हम एहिठामक वस्तुस्थितिक जानकारी दऽ सकियैन्ह, ताहि डरे हमरा माफिक संग मना करय पड़ल। स्थानीय दूटा तऽ आँखिक देखल लोकक निधन भेलैक, मुदा तैयो कियो ई स्पष्ट नञि कहल जे ई कोरोनाक प्रकोप छल, सरकारक दबाब ताहि तरहें छल। हालाँकि दुनियाँक तुलनात्मक दृष्टिकोणें एहिठामक स्थिति बड्ड सन्तोषजनक छल। नञि तऽ जे एहिठामक मेडिकलक स्थिति छैक छगबा-पिटबा मचि जएतैक। कदाचित तैं भगवान सन्तुलिते भावसँ एमहर पठौलखिन्ह।



धीरे-धीरे समय बीतल, बीतल कहब तऽ कठिन अछि, मुदा ई कहब जे बीत रहल अछि प्रभु कृपासँ। समयक प्रतीक्षा करैत-करैत अगस्तसँ किछु-किछु फ्लाइट चलनाए शुरू भेल। अक्टुबरमे हम हिम्मत कएल, चाहे जे भऽ जाए गाम जाएब। बच्चा सबकें देखना पनरह मास भऽ गेल छल। नव-नव नियमक पालन करैत बाइस अक्टुबर कऽ अपन देश आ कनियाँ-बच्चा सबकें दिल्लीमे देखि मोन तृप्त भेल। दिल्लीमे बाल-बच्चा संग दिवाली पूजन कऽ सपरिवार गाम गेलौंह आ माता-पिताजी, दादीजीक संग बारह बरखक बाद गामक छठि मैयाक पूजा देखबाक अवसर भेटल। पनरह दिन केना गाममे बीतल बुझि नञि सकलहुं। फेर गामसँ दिल्ली आ पुनः दिल्लीसँ तंजानिया कोरोनाक नवका-नवका नाटककें झेलैत पहुँचलहुं। कोरोनाक कानब तऽ चलिए रहल अछि। अपने एहिठाम आ जी देशे टाँगल अछि।

गामक इज्जति



❑ रबीन्द्र नारायण मिश्र

"एहन भइए नञि सकैत अछि।"

"से की?"

"हमरासभक अछैत अपन समाजक बेटी अजातिमे बिआह कऽ लेत आ हमसभ मुर्दा भेल देखैत रहब।"

"तऽ एहिमे हम तूँ की करबैक? जखन दूनू आपसमे मोन बना लेने छैक तखन केओ की कऽ सकैत अछि? जखन मिआँ-बीबी राजी तऽ की करताह काजी?"

"तोरो माथा भसिआ रहल छह? ई कोन गाम छैक से ओकरा जनतबमे हेबाक चाही। लाठीक डरे भूत पड़ाए। चारि लाठी जखने ओहि छौंड़ाकेँ लगतैक, सभ बात अपने बूझएमे आबि जेतैक।"

"हमरा ई नञि बूझएमे आबि रहल अछि जे केओ ककरो संग दोस्ती करैत छैक, कि अपन मर्जीसँ बिआह करैत छैक तऽ एहिमे तोरा की हर्जा छह? तूँ अनेरे आमिल किएक पिने छह? एहन-एहन घटना आब कोनो नव बात नञि छैक। आइ-काल्हि तऽ ई सभ होइते रहैत छैक। तूँ ककरा-ककरा सुधारबहक?"

"जतए जे होइत छैक से होइत हेतैक मुदा महारपुरमे ई नञि हेतैक।"

"शांत माथासँ सभ बात सोचि लएह। समय-साल बड्ड खराब भऽ गेल छैक। कानून ओकरेसभक पक्षमे छैक। एहन नै होअए जे हमहीं सभ परेशानीमे पड़ि जाए। ओना तूँ जे करबह ताहिमे हम संग देबे करबह।"

हरिनाथ आ मोहन आपसमे इएह सभ गप्प-सप्प करैत छल की चाह आबि गेलैक। दूनूगोटेकेँ चाह पिबैत देखि थोड़बे कालमे ओतए किछुगोटे अओर आबि गेलाह। हुनको सभ लेल चाह आबि गेल। ओना भोरूका उखरा हरिनाथक ओहिठाम दस-बीसगोटेक गोष्ठी होइते छल। पहिनेसँ चाह तैयार रहैत छलैक। लोक अबैत गेल, ओकरा सभहक हाथमे चाह पहुँचैत गेल। चाहक संगे गप्प-सप्प सेहो होइते छल।

हरिनाथक आइ-काल्हि इलाकामे चलती छलैक। पटना, दरभंगा, मधुबनी जतए जकरा जे काज होइक से ओ फटाक दऽ करबा दैत छल। मंत्रीसँ लऽ कऽ संत्री धरि ओकर जेबीमे छलैक। मंत्रीजी जखन कखनो क्षेत्रमे अबितथि तऽ ओकरा ओहिठाम अबिते छलाह। मंत्रीजीक संगे कैकटा हाकिम सभहक आवागमन सेहो होइते रहैत छल। आर्थिक रूपसँ सेहो ओ क मजगूत भऽ गेल छल। किसिम-किसिमक काज-धंधासँ आमदनी करबाक लुरि ओकरा छलैक। एहि सभसँ समाजमे ओकर बड्ड धाक छलैक। नीक-बेजाए जे किछु ओ कऽ दैक, तकर प्रतिरोध करबाक साहस ककरो नञि रहैक।

मोहन हरिनाथक प्रमुख समर्थक छलैक। लठै ओकर मूल पेशा रहैक। मंत्रीजी जाबे एमहर रहितथि ताबे मोहन हुनका छाया जकाँ पछोड़ केने रहैत छल। एहिसँ दूनूगोटेकेँ फएदा होइत छल। मोहनसँ केओ सोझां-सोझी झंझट नञि करैत छल। हरिनाथकेँ मोहन आ मोहनकेँ हरिनाथ लस्सा जकाँ पकड़ने छल।

चाहक चौपाल चलि रहल छलैक। सभ आपसमे तरह-तरहक समाचारक आदान-प्रदान कऽ रहल छल। एक तऽ भोरूका समय, ताहिपरसँ भफाइत चाहक चुस्की। माहौल आनन्दमय छल। एतबेमे एकटा मोटर साइकिलपर एकटा युवक आ कन्या जाइत देखेले।

"किछु देखलहक?" - मोहन बाजल।

"से कोनो हम आन्हर छी।"

"आन्हर तऽ गौंवासभ भेल अछि। अजाति छौंड़ा सरेआम एहिटोलक बेटीकेँ उठा लेलक आ सभ देखैत रहि गेल।"

"से तऽ बूझलियैक मुदा समाधान?"

"समाधान, समाधान चिचिएलासँ थोड़बे काज होइत छैक?"

"तैँ ने पुछलिअह। आखिर हमसभ की करी?"

"करी की?"

"चारोगोटे जो आ ओहि छौंड़ीकेँ घिंचने चलि आबय। आगाँ हम देखि लेब।"

हरिनाथकेँ एतेक कहबाक देरी छल। ओहिठाम चाह पिबि रहल लठैतसभ हथिआर उठओलक आ दौड़ल। हरिनाथ थाना पहुँचल आ थानेदारसँ असगरमे किछु बतिआएल। किछुकालक बाद दूनूगोटे एकहिं मोटरसाइकिल पर बैसि ओहि टोल दिस बिदा भेल। पाछाँ-पाछाँ किछु अओर पुलिससभ सेहो बिदा भेल।

मोहन, हरिनाथ किछु गौंआसभहक सहयोगसँ कतहुसँ एकटा सजातीय वरकेँ तकलक। बिआह ठीक भऽ गेल। साँझमे सएसँ बेसिए बरिआती आएल। कोनो बरिआती वा वरकेँ किछु हवा नञि लगलैक। नीकसँ बिआह भऽ गेलैक। बरिआती सभहक संगे सरिआती सभहक सेहो नीकसँ स्वागत कएल गेल। सभगोटे बड्ड प्रसन्न छलाह। हरिनाथ आ मोहनक प्रयास सफल भेल। ताहि हेतु ओ सभ खुब गौरवान्वित अनुभव कऽ रहल छलाह। आखिर एकटा स्वजातीय कन्याकेँ अजातिमे बिआह करबासँ बँचा लेने छलाह। मुदा कनिआँक मोन बेचैन छल। ओकर आँखिसँ नोर झहरि रहल छल। ओकर ई मनोदशाकेँ देखि वर बड्ड चिंतित भेल। ओ कनिआँकेँ पुछलकै, "बात की छैक? अहाँ एना किएक कानि रहल छी?"

"हम एकटा अजाति पुरुषसँ कतेको दिनसँ प्रेम करैत छी, ओ हमर इसकूलिआ संगी अछि। कहि नहि कोना खेल-खेलमे हमसभ एक-दोसरकेँ दोस्त बनि गेलहुँ। कोना परेम करय लगलहुँ। ई सभ कोनो एकदिने नञि भेल। सालक-साल ई सभ चलैत रहल। हम ओकरा ओहिठाम जाइत छलहुँ। ओहो हमरा ओहिठाम अबैत छल। हमरा लेल किछु-किछु उपहार सेहो आनैत छल। हमर माए-बाप कहिओ ओकरा मना नहि केलखिन। अपितु, जखन ओ हमरा लेल मोबाइल फोन अनने रहए तऽ सबसँ पहिने हमर बाबूए ओहि

फोनसँ गप्प केने रहथि। गामोमे ककरो एहि बातसँ कोनो परेसानी नञि रहैक। मुदा कालक्रमे गामक किछु बलंट लोकसभ हमर पाछाँ पड़ि गेल। हमरा तरह-तरहक प्रलोभन देबए लागल। मुदा हम ओकरा सबकेँ कहिओ मोजर नञि केलियैक। ताहि बातसँ ओ सभ हमरासँ तमसा गेल आ ओलि चुकेबाक हेतु ब्योंत करए लागल। तकर बाद तऽ जे सभ भेल से तऽ देखिए रहल छी।"

"मुदा अहाँ चाहैत की छी?"

"हम अपन प्रेमीक संगे रहय चाहैत छी। हम हुनका संगे बिआह कऽ चुकल छी आ संगे रहलो छी। ई सभ जबरदस्ती हमर बिआह अहाँ संगे करबा रहल छथि।"

वर नीक लोक छल। एहि फसादमे नञि पड़ल। ओ तुरंत अपन निर्णय सुना देलकै, "हमरा दिससँ कोनो आपत्ति नञि अछि। हम स्वयं एहिमे नञि पड़ए चाहैत छी। अहाँ जाहिमे प्रसन्न रही सएह करू। अहाँ अपन प्रेमीकेँ बजा लिअनु आ हुनकेँ संगे चलि जाउ।"

वर अपन मोबाइल फोन देलकै। कनियाँ ओकरे फोनसँ अपन प्रेमीकेँ बजओलक। ओ तुरंते आबिओ गेलै। दूनूगोटे रातिएमे मोटर साइकलसँ बिदा भऽ गेल। जहन फरीछ भेल तऽ वर असगरे घरसँ बाहर भेल। घरक लोकसभ कनियाँकेँ ताकए लागल। जाबे बात पसरैत ताबे तऽ वरो ओहिठामसँ घसकि गेल छल। हरिनाथ आ मोहनकेँ सेहो एहि बातक पता लगलै। ओ सभ तामसे आगि भऽ गेल। एक बेर फेर किछु लठैतसभहक संगे प्रेमीक घर पहुँचि गेल। अपना भरि प्रेमी कनियाँकेँ दोसर घरमे नुका देने रहैक। मुदा हरिनाथ आ ओकर समर्थकसभ ततेक हल्ला केलक जे प्रेमीक लगपासक लोकसभ डरा गेल।

पुलिस घरक बाहर ठाढ़ रहल आ लठैतसभ ओकरा घरमे पैसि गेल। जे जेमहर भेटलैक, तकरा धुनैत गेल। मुदा ओ छौंड़ी कतहु नै देखेलैक। ओसभ चारूकात ओकरा तकैत छल। एतबेमे संदूकमे बड़ी जोरसँ केओ छिकलक।

"पकड़ा गेलौ। एहिमे ओ छौंड़ी नुकायल अछि।"

कुरहरिसँ सन्दूककेँ तोड़ि देल गेल। ओ छौंड़ी सचमुच संदूकेमे नुकाओल रहए। मुदा अचानक भेल छिक्का सभटा गड़बड़ा देलकै। छौंड़ीकेँ संदूकमेसँ निकालल गेल। ओ बाहर अबिते कहैत छैक, "हम स्वेच्छासँ हिनका संगे छी। हमरा ई पसंद छथि। हम हिनकेसँ बिआह करब।"

"जौँ जान बँचेबाक होउ तऽ चुपचाप हमरा सभहक संगे विदा भऽ जो।"

"हम किन्नहुँ नञि जाएब। हम एतहि रहब, एतहि मरि जाएब।"

"निर्लज्ज! केहन ठेक्कर अछि। कनीको लाज-धाक नञि? कनीको अपन समाजक,



माए-बापक प्रतिष्ठाक ख्याल नञि।"

तकरबाद चारि-पाँचटा लंठसभ ओकरा पकड़लक आ जबरदस्ती लगमे ठाढ़ जीपमे बैसा देलक। चारूकातसँ पुलिस बन्दूक तनने छलैक, जीप खुजि गेल। पाछाँ-पाछाँ लंठसभ मोटर साइकिलपर विदा भेल। ककरो साहस नहि भेलैक जे केओ ओकरासभक प्रतिरोध करए, किछु बाजए।

प्रेमीक सामनेमे पुलिसक उपस्थितिमे ओकर प्रेमिकाकेँ लठैतसँ घिमचि कऽ घरसँ बाहर केलक आ जबरदस्ती जीपपर बैसा लेलक। पुलिससभ बंदूक तानि देने छल। जीपक चारूकातसँ रखबारी कए रहल छल। जीप आगाँ बढ़ि रहल छल। जौँ-जौँ जीप आगाँ बढ़ैत छल तौँ-तौँ प्रेमीक मोनमे आक्रोश बढ़ि रहल छल। मुदा सामनेमे ओकर बाप हाथ जोड़ने ठाढ़ छलैक। नेहोरा कऽ रहल छलैक। ओकर टोलक लोकसभ सेहो ओकर बापक संग दऽ रहल छलैक। सभ अपन जान बँचाबएमे लागल छल। ककरो अओर किछु सोचबाक परिस्थिति नञि रहैक। सभ बेवस छल, लाचार छल। जीप आगाँ बढ़ैत गेल। प्रेमी बेहोस भऽ ओतहि ठामहि खसि पड़ल।

हरिनाथ आ मोहनक हेतु ई घटना आब तऽ नाकक सवाल भऽ गेल छल। ओ सभ कनियाँक माए-बापकेँ बजओलथि। दूनूगोटे सौंसे गौंआक आगाँ स्पष्ट कएलैन्ह, "हमसभ एहि छौंड़ीक संगे नञि छी। जे समाजक विचार सएह हमरो विचार। गामक इज्जति रहबाक चाही। कोनो हालतमे अजाति बिआह नञि हेबाक चाही।"

"सही बात।" गौंआसभ एक स्वरसँ ओकर बातक समर्थन केलक। हरिनाथ आ मोहनक संकल्प अओर दृढ़ भऽ गेलैक। हरिनाथ सभक आगाँ घोषणा केलक, "हमरा अछैत अहाँसभ चिंता जुनि करू। एकर बिआह अपने जातिमे हेतैक। हमसभ ओरिआन कऽ लेलहुँ अछि। एहि बेर सभकिछु ठीके रहतैक।" ओकर सभहक बात सही भेल। साँझ होइत-होइत गोवर्धन एहि कनियाँसँ बिआह करबाक हेतु तैयार भऽ गेल। गोवर्धनक नाम सुनिते कनिआँक बापक रोंआ ठाढ़ भऽ गेलैक। असलमे ओ तऽ इलाकाक नामी अपराधी

छल। कैकटा खूनी मोकदमामे ओकर नाम छलैक। बहुत मोसकिलसँ ओकरा जमानत भेल रहैक। बड्ड दिनसँ ओ बिआह करबाक जोगारमे छल, मुदा केओ ओकरासँ बिआह करबाक हेतु राजी नञि रहैक। जखन मोहन ओकरा ई सभ बात कहलकै आ कनियाँक फोटो देखेलकै तऽ ओ तुरंत बिआह करबा हेतु स्वीकृति दऽ देलक। मुदा एतेक जल्दी कोना की होइत? बरिआतीक जोगार कोना कएल जाइत? फेर इहो चिंता रहैक जे देरी भेलासँ प्रेमी युगल कहीं किछु अओर तामासा नै कऽ दैक। तैँ तय भेल जे जनकपुरक जानकी मंदिर परिसरेमे गोवर्धन पहुँचए। ओतहि आइए रातिमे बिआह भऽ जेतैक आ प्रात भेने द्विरागमन सेहो भऽ जेतैक।

कनियाँकेँ प्रेमीक घरसँ आनि कऽ ओकरा गामेमे गुप्तस्थान पर राखि देल गेलैक। ओकर मन अत्यंत व्याकुल रहैक। ओ नञि बूझि पाबि रहल छल जे एहि अन्यायक प्रतिकार कोना करए। कानून आ पुलिस सभ व्यर्थ भऽ गेल छलै। ई बात नञि छल जे ओ अचानक ककरो संगे भागि गेल छल। ओकर प्रेमी इसकूलिआ संगी रहैक। स्वभाविक रूपसँ ओकरसभक प्रेम अंकरूरीत भेल रहैक, पल्लवित-पुष्पित होइत रहलैक। ओकर माता-पिताकेँ सेहो एहि बातक जनतब रहैक। ओहोसभ कोनो प्रतिरोध नञि केने रहैक। बात तखन बिगड़ि गेलैक जखन ओ सभ आपसमे बिआह कऽ समाजक सम्मुख सीना तानि कऽ ठाढ़ होबए चाहलक। तखन किछु दबंग लोकनिक अहँ पर चोट पड़लैन्ह आ ओहि प्रेमी युगलक संग एतेक अत्याचार कएल गेल। एकटा बालिकाक तीन-तीन बेर बिआह कऽ देल गेल। कनियाँकेँ असगरमे ई बात सभ ध्यानमे अबैत रहल। ओकर मोन तऽ होए जे जहर-माहुर खा ली, मुदा सेहो नञि भेटैक। फेर इहो फुराइक जे जखन ओ अपन निश्चय पर अडिग अछि तऽ केओ की कऽ लेत? ओ तऽ कपलेश्वर स्थानमे अपन प्रेमीक संगे बिआह कऽ चुकल अछि। ओ से सभ सोचिए रहल छल की केओ केबार खोललकै। ओकरा आँखिपर पट्टी बान्हि देलकै। दूनू हाथ बान्हि देलकै आ जीपमे बैसा गामसँ बाहर लेने चलि गेलै। जीपक पाछाँ-पाछाँ तीन-चारिटा मोटर साइकिल पर मुस्टंडसभ चलि रहल छल। चारि-पाँच घंटाक बाद जीप आ ओकर पाछाँ-पाछाँ चलनिहार समर्थकसभ जनकपुर पहुँचि गेल। ओतहि कनियाँक माए-बाप सेहो पहुँचलाह। एहि तरहेँ ओहि कनियाँक तेसर बेर बिआह संपन्न भेल। हरिनाथ आ मोहन आपसमे गप्प करैत छल, "जे भेल, से भेल मुदा गामक इज्जति तऽ बाँचि गेल।"

ओमहर हरिनाथ अपन सहयोगी सभहक संगे गाम पहुँचल। एमहर द्विरागमनक हेतु कार आबि गेल छल। मुदा वर-कनियाँक कोठरी खुजिए नञि रहल छल। लोककेँ होइत छलैक जे थाकल-ठेहिआएल छैक, निन्न पड़ि गेल हेतैक। मुदा जखन दस बाजि गेलै तऽ लोक सभकेँ चिंता होबय लगलैक, केबारकेँ खटखटाओल गेल, किछु क्रिया-प्रतिक्रिया नञि भेलैक। बारम्बार प्रयासक बादो जखन केबाड़ नञि खुजलै तऽ ओकरा जेना-तेना तोड़ल गेल। आखिर केबाड़ टुटि कऽ खसि पड़ल। मुदा ओकर भीतरक दृश्य देखि सभ छगुंतामे पड़ि गेल। बर-कनियाँ दूनू रक्त रंजित निष्प्राण पड़ल छल।

अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्य



❑ रीना चौधरी

अभिव्यक्ति अर्थात् विचारक प्रकटीकरण। अपन भावनाक संप्रेषण, शब्द द्वारा व्यक्त करबाक प्रक्रियाकेँ अभिव्यक्ति कहल जाइत अछि। प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन भाव-विचार व्यक्त करबाक मौलिक अधिकार छैन्ह आ अपन विचारक अभिव्यक्ति व्यक्ति विशेष वा समाजक सम्मुख, कतहुँ प्रकट करय हेतु स्वच्छंद छथि।

व्यक्तिक सोच आ विचार, हुनक परिवेशसँ प्रभावित रहैत अछि। ओ जे पढ़ति छथि, जे सुनति छथि, जे महसूस करति छथि, वएह सब विचार मिलीकेँ आकार लैत अछि आ एहिसँ विचारक रूप-रेखा तैयार होइत अछि। विचार सकारात्मक वा नकारात्मक दूनू भऽ सकैत अछि। किछु लोक अंतरमुखी होइत छथि, अपन विचार अपने धरि समेटने रहैत छथि। ओतहिं जे मुखर होईत छथि ओ अपन विचारक अभिव्यक्ति झट दऽ करय छथि। किछु लोक बड्ड सोचि-विचरिकेँ, तौलकेँ बाजय छथि, तऽ किछु लोक जे मुँहमे आयल तत्काल बाजि देलैथ।

आइ-काल्हि अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्यक चलन चलि गेल अछि। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रा सबकेँ चाही। किछु लोक ज्येष्ठ-श्रेष्ठ सभ लग अपन अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्य प्रदर्शन करयसँ नञि चुकय छथि, तऽ किछु लोकक बकतूति सीमाक पार रहैत छैन्ह। हिनका स्वतन्त्रा चाही अनुशासनसँ, नैतिकतासँ, मर्यादासँ, कृतज्ञतासँ। प्रत्येक अतार्किक तर्क हिनका अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्य बुझि पड़ैत छैन्ह। कियो-कियो तऽ देश, सेना, सत्ता, प्रतिष्ठानक विरूद्ध किछु बाजयसँ परहेज नञि करय छथि। एहन लोक संस्कार, संस्कृति आ परम्पराकेँ ताख पर राखि कऽ बाजय छथि। हिनका विरोध आ विद्रोहमे अंतरे नञि पता रहैत छैन्ह। जौँ व्यवस्थामे कोनो कमी बुझना जाइछ तऽ विरोध करबाक अनुमति संविधानयुक्त अछि, मुदा विद्रोहक अनुमति संविधान नञि दैत अछि।

समाचारपत्र वा टेलिविजन पर कतेको बेर अमर्यादित भाषा पढ़य वा देखय लेल भेटैत अछि जे सुनि सम्भ्रांत समाज शर्मसार भै जाइत अछि। हिनका देशक मर्यादित पद पर आसीन व्यक्ति विशेष लकल अमर्यादित भाषाक प्रयोगमे तनिको संकोच नञि होइत छैन्ह। ई अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्य मदमे एहन



आन्हर भऽ जाइत छथि कि हिनका देश आ धर्म सेहो नञि सुझय छैन्ह, ई ओकरो खिलाफ बाजय छथि।

शिक्षाक प्रांगणमे ठाढ़ भऽ देशक अपमान करबाक की औचित्य? ई अपन शिक्षाक कोन स्तरक प्रदर्शन करय चाहैत छथि? आब तऽ अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्य एहन विद्रूप रूप देखय लेल भेटैत अछि जे बात भाषासँ उतरि व्यवहारमे आबि रहल अछि। संवैधानिक पदासीन व्यक्ति विशेषक निम्नस्तरीय भाषा सुनि अत्यंत ग्लानि होइत अछि जे हिनका भाषाक मर्यादा नञि बुझल छैन्ह, पदक गरिमा नञि बुझल छैन्ह।

आइ नित्यप्रति टेलीविजनक प्रत्येक न्यूज चैनल पर वाद-विवादक जेना प्रतियोगिता चलैत अछि। राजनीतिक पक्ष-विपक्ष दूनू बैसि भाषाक मर्यादाकेँ तार-तार करैत कियो अपनाकेँ किनका सँ कम नञि मानैत छथि।

अखनि लोक अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्यक बिहारि संग चलि रहल छथि। प्रान्त प्रमुख, सत्ता प्रमुख, सेना प्रमुख सभहक विषयमे अनर्गल बाजि लोक अपन सोचक निम्नता प्रदर्शित करय छथि। हिनका बुझल छैन्ह, एहि देशमे, ओ संवैधानिक पदासीनकेँ गरियाओ कें सुरक्षित छथि। आन देशमे हाथक हाथ परिणाम भेट जेतैन्ह। आइ भारतभूमिक औदार्यता आ सहिष्णुताक अनुचित उपयोग भऽ रहल अछि।

हालाँकि एहन तथाकथित बुद्धिजीवी लोक मुट्ठी भरि छथि, मुदा एक्कोटा सड़ल माछ सम्पूर्ण पोखरिकेँ दूषित कऽ अछि से सर्वविदित अछि।

हिनक विचारक कोन प्रभाव समाज पर पड़त, आबयवला पीढ़ीकेँ ई कोन विचार प्रेषित कऽ रहल छथि, ई कोन वैचारिक परम्पराकेँ लऽ कऽ आगाँ बढ़ि रहल छथि, हिनक विरोधात्मक सोचकेँ कि औचित्य अछि? हिनका एहि सबसँ कोनों सरोकार नञि रहैत छैन्ह। ओ बिसरि रहल छथि जे नकारात्मक सोचसँ सकारात्मक शीर्ष कदापि नञि भेट सकैत छैन्ह।

व्यवस्थामे त्रुटि निश्चित तौर पर सम्भव अछि, ओकरा मर्यादित तरीकासँ व्यवस्थित कएल जा सकैत अछि। अपन भाषाशैलीकेँ ध्यान राखल जा सकैछ, आखरि आब सभ शिक्षित छी। भारतभूमिक सामान्यजन संस्कार आ परम्परासँ जीवन जीबय छथि, तैं एतय लोककेँ अपन संस्कृति, भाषा, परिवार, समाज, राष्ट्रसँ अथाह प्रेम छैन्ह। ओ अपन राष्ट्रक प्रति सम्मानक भाव राखैत। नञि बिसरू जे ई मर्यादा पुरुषोत्तम रामक देश अछि, एतय मर्यादित व्यवहार मात्र पूजनीय अछि। जे एहि सामाजिक मूल्यकेँ नञि बुझताह, नैतिकता नञि रखताह तऽ समाज एहन व्यक्तिकेँ बहिष्कार सेहो बुझैत अछि। अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्य अपन सीमा रेखामे रहय तखने नीक।



पश्चाताप आओर प्रायश्चित



❑ प्रीति झा

इन्टरव्यूक बड्ड पैघ लाइन छल। समीर सोचि रहल छलाह। एकटा पोस्टक वास्ते एतेक लोक आवेदन केने अछि। हमर चयन तऽ असंभवे लगैत अछि। अपन बगलमे बैसल प्रत्यर्थि सबकेँ प्रमाणपत्रकेँ नजरि चोरा कऽ देखलैन्ह तऽ एम ए, एम एडक संग नञि जानि कतेक चिजक अनुभवसँ संकलित पोथा छल।

समीरकेँ भेलैन्ह, जे हेतैक आब अयलहुँ तऽ दऽये केँ जायब। हिनका लग मात्र स्नातक संग बी. एड.क प्रमाणपत्र छल।

सभहक इन्टरव्यूक बाद अंतमे हिनकर नामक घोषणा भेल, ओ भीतर गेलाह। ओहिठाम एकटा पैघ कोठरीमे बड़का टेबल-कुर्सी सब लागल छल आ ओहि पर मात्र एक गोटा बैसल छलाह। समीर हुनका अभिवादन कएलैन्ह आ ओ व्यक्ति हिनक इन्टरव्यू लेलैन्ह। घोषणा भेल जे 2 घंटाक बाद चयनित व्यक्तिक नाम बाहरवला बोर्ड पर लिख देल जायत।

समीर जखन इन्टरव्यूक कोठरीसँ बाहर अयलाह तऽ रहि-रहि कऽ होइन्ह जे एहि व्यक्तिकेँ हम कतहुँ अवश्य देखने छि। मोन पाड़ैत-पाड़ैत घुमैत रहथि। अचानकेसँ मोन पड़लैन्ह ई तऽ योगेश मास्टर साहब छथि जिनकासँ मिडिल स्कूलमे भूगोल पढ़ैत छलाह। परञ्च ओ तऽ बड्ड मोट-सोंट छलाह आ कारी फ्रेमवाला चश्मा लगाबैत छलाह। रंग कनि श्याम छलैन्ह तैं सब शैतान विद्यार्थीक टोली हुनक नाम 'कारी चश्मावला हाथी' राखि देने रहैन्ह, ताहिमे समीर सभहक नेता रहथि।

समीरक मुताबिक योगेश मास्टर साहब हिनका सबसँ तंग आबि स्कूल छोड़ि कऽ चलि गेल छलाह। ई तऽ दुब्बर छथि, निस्संदेह ओ मास्टर साहब नञि छथि।

समीर अपन माए-बापक इकलौता संतान रहथि। कनि बेसिये दुलार-मलारसँ पलल रहथि। पढ़ाईमे तऽ ठीक रहथि, मुदा खास मोन नञि लागैत छलैन्ह। बापकेँ धन-संपत्ति खूब रहैन्ह। कहूना कऽ बी. ए. पास कऽ लेलैन्ह। कॉलेजक बाद घर आबि गेलाह। बाबूकेँ कहलापर बी. एड. कऽ लेलैन्ह।

एक दिन अचानके पता चललैन्ह जे बाबू



कोनो पैघ बीमारीसँ ग्रसित छथि तऽ इलाज शुरू भेल। बहुतो जमीन-जथा बेचय पड़लैन्ह। माए सेहो हरदम दुखीत रहथिन्ह।

तखनहिं समीर एक दिन अखबारमे देखलैन्ह जे एहिठाम अपने जिलामे एकटा मास्टरक पोस्ट खाली छैक जकरा लेल आवेदन करबा लेल निकलल छै। समीर फार्म भरि पोस्ट कऽ देलैन्ह आ इन्टरव्यूक बुलावा आबि गेलैन्ह।

इन्टरव्यूमे चयनित व्यक्तिक नाम बोर्ड पर लिखा गेल छल। सब जाऽ कऽ मुँह लटका कऽ घुरि-घुरिकेँ वापस जा रहल छल। समीरकेँ आश्चर्य होइन जे ककर चयन भेल से नञि कहि? अपना पर तऽ भरोसे नञि छलैन्ह।

आखिरमे नञि मोन मानलक हुनकर जाकेँ देखलैन्ह तऽ 'समीर' अपन नाम लिखल देखि पहिने तऽ विश्वास नञि भेलैन्ह। पुनः अपन आवेदनपत्रक नम्बर देखि आश्वस्त भेलाह जे ई तऽ हमहीं छी, हमरे चयन भेल अछि।

समीर सोचि रहल छलाह ई कोना भेलैक? तखनहिं पाछासँ अपन नाम ककरो मुँहसँ सुनि पाछाँ घुमलैथ "समीर! हम अहाँक योगेश मास्टर साहब 'कारी चश्मावला हाथी' नञि चिन्हलहुँ?"

अरे ई तऽ वएह छथि जे हमर इन्टरव्यू नेने रहथि। तऽ हमर अंदाज ठीक छल। मुदा एतेक दुबर आ ओहि पर बिनु चश्माकेँ?

"हँ, हम अहाँक योगेश मास्टर साहब छी। हमहीं अहाँक चयन जानि बुझिकऽ केलहुँ अछि। हमरा अहाँक सभटा परिस्थिति बूझल अछि।"

"मुदा, मास्टर साहब हम तऽ अहाँक संग बड्ड खराब व्यवहार कएने रही, फेर अहाँ किएक हमरा संग एतेक सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार केलहुँ?"

मास्टर साहब बजलाह, "ओहि स्कूलसँ निकलि गेलाक बाद हम खुब पढ़ाई केलहुँ आ हमर चयन पैघ पोस्ट पर भऽ गेल। आब हम एकटा अधिकारीकेँ रूपमे सबठाम इन्टरव्यू लेबाक लेल पठाओल जाइत छी। ई सबटा हम जौँ ओहि स्कूलमे तत्कालिक मास्टरक पोस्ट पर रहितहुँ तऽ संभव नञि होइतय। ताहि द्वारे हम अहाँक उपकार मानि अहाँकेँ ई पोस्ट देलहुँ।"

समीर योगेश मास्टर साहबक पएर पर खसि पड़लाह, "हम तऽ अहाँक अपराधी छी, सर। हमरा बड्ड पश्चाताप भऽ रहल अछि जे हम अहाँक संग कतेक खराब व्यवहार केलहुँ। मुदा अहाँ हमरा क्षमा कऽ, हमरा ई पद देलहुँ जकर अधिकारी शायद कियो दोसर व्यक्ति सेहो भऽ सकैत छलाह।"

समीरकेँ उठाबैत योगेशजी कहलैन्ह - उठू, आब अहाँक प्रायश्चित इएह अछि जे ई मास्टरक पोस्टक माध्यमसँ सभ बच्चाक सही मार्गदर्शन करू।

बिनु खुट्टाक गाय

क्रमशः (पृष्ठ 35 सँ) ...

जिनकर नाओं लोक जनैए तिनकर पचहतरमी सालगीरह पर मोन पाड़ल जाए छैन्ह, मुदा जे हेरा गेल छैथ की तिनकरो पचहतरमी सालगीरह पर मोन पाड़ल जेतैन्ह? जानसँ बाजी लगा जे आन्दोलनमे अपन हिस्सेदारी देलैन्ह, हुनकर चर्च कें करत? समाजक ओहन रूप बनि गेल अछि जाहिसँ समाजक सेवाक अर्थे बदलि गेल अछि। द्वापर युगक अर्जुन आ कृष्णकेँ कोन मतलब छैन्ह, मतलब छैन्ह जे कौरव-पाण्डवक बीच जे लड़ाइ भेल ओ दुनियाँक चौदह हजार लड़ाइमे एकटा ओहो भेल।

कृष्ण अर्जुनकें कहलैन्ह- अर्जुन! अहाँ लड़ाइक महानायक बनलौंह, हम तऽ अस्त्र उठेबे नै केलौंह, एक-दूठाम जे उठेबो केलौंह तऽ ओ चोरनुकबा भेल, सघन लड़ाइमे उठाएब नहि भेल। लाखो सेना अपन भागीदारी देलैन्ह, ताहिमे कतेको गुमनामो रहि गेलाह, तैँ एकबेर ढोल्हो दऽ दियौ जे महाभारतमे जिनकर जे योगदान छैन्ह ओ अपना मुहेँ बजताह।

कृष्णक विचार अर्जुनकेँ जँचलैन्ह। तऽ कृष्णक विचारकेँ मानि अर्जुन सौंसे देशमे ढोल्हो दिया देलैन्ह। ढोल्हो दिएलाक बाद अर्जुनक मनमे उठलैन्ह जे जौँ समय निर्धारित नहि कऽ देबैन्ह तखन तऽ सुननिहारेक बीच फेर महाभारत शुरू भऽ जाएत, तखन केकर नेतृत्व चलत? की फेरसँ महाभारत कराएब? कोनो देश होउ कि परिवार-समाज आकि बेकती-विशेष, महाभारत तऽ एक्के बेर हएत।

अर्जुन कृष्णकेँ कहलैन्ह - एक तऽ सौंसे देशक लोककेँ एकठाम बैसा सबकेँ सुनि-सुनि बजैक मौका देबैन, तखन अपन केलहा काज बिसैर जेता आ सुनलहे बातक जवाब दिअ लगता, तखन थाह केना पएब?

अर्जुनक विचार कृष्णकेँ जँचलैन्ह ओ बजलाक - दोहराकऽ ढोल्हो दिया दियौ जे पहिने महाभारतक विचार बाजैथ, पछाइत सुनल-सुनाएल विचारक जवाब, सवाल-जवाबक कार्यक्रममे दैथ।

जहिना अर्जुन ढोल्हो दियौलैन्ह तहिना महाभारतक रचयिता सभ अपन-अपन उपस्थिति दर्ज करबैत अपन-अपन वक्तव्य देलखिन। ताहिमे सभहक भावना इएह रहैन्ह जे जौँ हम नहि गुल्ली-पेंच केने रहितौं तऽ महाभारतक सिहिन्ता अर्जुनकेँ लगले रहि जइतैन्ह।

कृष्ण अर्जुन दिस देख बजला - की अर्जुन?

अर्जुन उत्तर देलैन्ह - जनिहेँ मीयाँ धुनै बेरिया।

चुनाव सम्पन्न भेल। जहिना एकक राजनीतिक प्रलय भेल तहिना दोसरक उदय सेहो भेबे कएल अछि। नरकोमे ठेलमठेल होइते अछि। एक-एकक जनगणना हएब शुरू भइये गेल अछि।

हृदयकें झकझोरैत : मनतोड़िया (मैथिली कथा संग्रह)



❑ डॉ. संजीव शमा

डॉ. महेन्द्र नारायण राम साहित्यिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक तीनू क्षेत्रमे विविध लोक साहित्यक फुलवाड़ीमे अपन विविध विषयक फूल लोढ़ि-लोढ़ि भरैत रहलाह अछि। ई अपन विशिष्ट परिचिति लोक-साहित्यविज्ञ रूपमें बनौलैन्ह अछि। प्रस्तुत पोथी 'मनतोड़िया' तकरहिं एकटा पुष्प थिक। लोक परिपाटी प्रायः सामान्य लोकक जे निरक्षर, समाजक मुख्य धारासँ दूर आ नगरीय सभ्यता संस्कृतिसँ अनभिज्ञ रहनिहार होइत छथि आ ओ लोकनि अपन दुःख-सुख, आशा-आकांक्षाकें मौलिकता अभिव्यक्त करबाक चेष्टा करय छथि ताहि सभहक झलक एहि पोथीमे भेटैत अछि।

एहि मैथिली कथा संग्रहमे कथा सब एतेक मनलग्गू अछि जे एक बेर पढ़ब शुरू केलाक बाद संपूर्ण केने बिनु चैनसँ नञि रहि सकैत छी। हिनक विशेषता, हिनक कथा सबमे सहजता आ लोकसाहित्यक अनुरूपें समाज सापेक्ष होइत अछि। जाहिमे लोक जीवनक विराट, विलक्षण आ स्पष्ट चित्र सब अंकित केने छथि। कथा सबमे कोनो वाद वा प्रतिबद्धता थोपल नञि बुझना जाइत। बेसी कथा खिस्सा जकाँ अछि जे अपन विशिष्टताक स्वाद बचौने अछि, जकर एखनहुँ समाजमे प्रासंगिकता अछि। प्रस्तुत पोथीमे सोलहटा बिछल कथा सभहक संग्रह भेल अछि। सब कथाक फरिछोहट नाम गुन करबामे कथाकार सफल भेल छथि।

सभ कथाक सार कहब उचित नञि बुझना जाइत अछि, पाठक स्वयं पोथी पढ़ी ओकर रसास्वादन करैथ तऽ नीक तैया किछु कथाक उल्लेख आवश्यक बुझना जाइत अछि-

पहिल कथा 'मनतोड़िया' शीर्षकसँ अछि, जाहिमे कथाकार देखौलैन्ह अछि जे कथाक मूलमे विराजमान मनतोड़िया (कथाक मुख्य भूमिकामे स्त्री पात्र) दूनू परानी रामा दूनू परानीकें अपनामे राखि खर्चा जुड़बैत अछि। एहि कथामे ई देखेबाक प्रयास भेल अछि जे समांग घटलाक बाद अपन संतानो कोना दुत्कारि दैत छैक। दस लोकी मनतोड़ियाक समांग घटि गेल छैक, पति ओकर सेवा करबामे कोनो चूक नञि करैत छैक। कथाक अंत मर्मस्पर्शी अछि जे हृदयकें झकझोरि दैत अछि। एक दिन रामा घर आबि मनतोड़ियाकें समाद सुनबैत अछि जे भैया नञि रहला आब दुनियामे। अपन घरवलाक मरबाक समाद सुनि मनतोड़िया सेहो अपन प्राण त्यागि दैत अछि। वास्तवमे, ई कथा समाजक दम भरनिहार लोक सब पर तीख प्रहार अछि।

'जय पराजय' कथाक मुख्य पात्र रत्नबली झा पहलमानक चारूकात घुमैत ओकरहिं पर समाप्त होइत अछि। कथाकार एहि कथामे इष्टदेवक कृपा आ अहंता दिस ध्यान आकृष्ट करबै छथि।

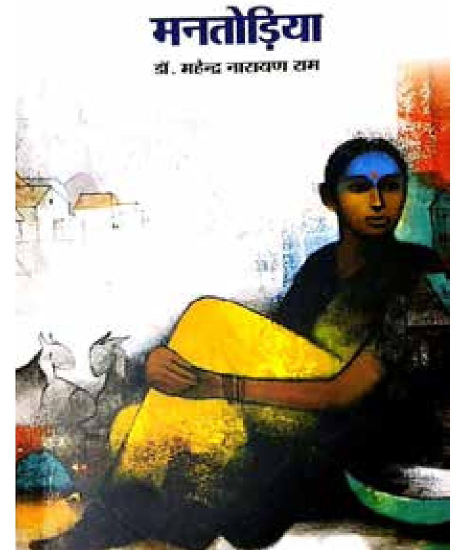
हम कहय चाहब जे महेंद्र नारायण राम जीक कथाशिल्प कोनो लोक कथाकें सम्प्रेषणीय बना दैत अछि। 'जुड़बन' कथा तकर एकटा सुन्नर उदाहरण अछि। बड्ड रोचक ढंगसँ कथामे मोड़ दैत विध-विधाताक लिखल गप्प साँच भऽ कऽ रहैत अछि। तकरा चरितार्थ करैत ई कथा जुड़बनकें स्थापित करैत अछि।

चारिम कथाक 'रंग' थोड़े काल वास्ते स्तब्ध करैत अछि। एहिमे कथानककें बड्ड संवेदनशील ढंगसँ देखाओल गेल अछि आ समाजक मार्मिक चित्रण कएल गेल अछि।

कथाकार लोकक चालि-ढालि पर महीन नजरि रखैत छथि आ तकरा ओ अपन कथा सबमे कलात्मक रूपसँ रखबामे कुशल देखल जाइत छथि। एहने कुशलता हिनक कथा 'आखिर किएक'मे देखबा लेल भेटैत अछि।

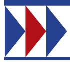
एकरा अलावे 'प्रायश्चित', 'मुँह पुरखी', 'ट्रांसफर', 'सखरेश्वरी दर्शन', 'पछतावा', 'फर्जी', 'अपने गाम', 'क्षोभ', 'यथास्थान' अओर कथा संग्रहक अंतिम कथाक 'असलियत' जाहिमे ई गप्प नीक जकाँ रेखांकित भेल अछि जे आजुक समयमे गाम-घरक सुदूर स्थान पर स्थापित विद्यालयमे शिक्षकक उपस्थिति कम रहलासँ धिया-पुताक चरित्र निर्माण आ विकास पर असरि पड़ैत छैक। कहबाक जरूरत नञि जे कथाकार स्वयं अपनो शिक्षा विभागसँ जुड़ल रहलाह, जाहि कारणेँ बड्ड नजदीकसँ व्यवस्थाकें देखबाक अवसर भेटल छैन्ह। तैं स्वाभाविक अछि जे हिनक आनो आन कथामे विषय-वस्तुक रूपमे ओकर भिन्न-भिन्न आयाम देखबा लेल भेटि जाइत अछि। कथामे गढ़ल विरल चरित्रक निर्माण महेन्द्र नारायणजीये सन कथाकारे गढ़ि सकैत छथि।

मैथिली लोकसाहित्यक अनुशीलन कयनिहारमे एकटा सशक्त हस्ताक्षर छथि, डॉ महेन्द्र नारायण राम। ग्राम्य लोकजीवनसँ परिचित होबय लेल आ लगसँ सामाजिक, आर्थिक आ समकालीन मिथिलाक चुनौतीकें जनबाक लेल हिनक कथाकें पढ़ब आ गुनब बेस खगता बुझना जाइत अछि। हिनक कथा-संग्रह मनतोड़ियाकें धैर्यपूर्वक पढ़ला आ गुनलासँ हिनक कथाक विलक्षणता आ विशेषताकें बुझबामे सहुलियत होयत, अन्यथाक स्थितिमे असंभव नहि तऽ कठिनाह अवश्ये।



पृष्ठ संख्या : 104

मूल्य : 200/- टाका



'मुड़ियाएल घर'क रूप-रेखा



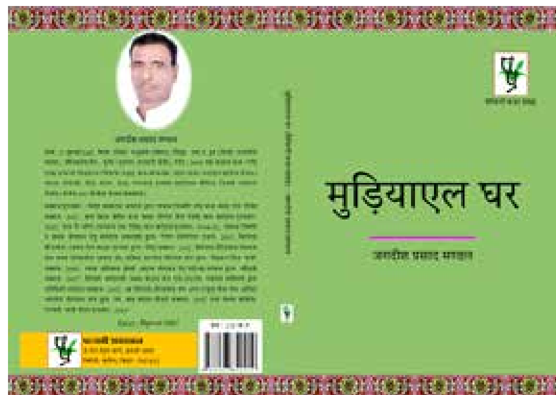
❑ डा. उमेश मण्डल

'मुड़ियाएल घर' कथा संग्रह 2016 इस्वीक अन्तमे प्रकाशित भेल अछि। पोथीक रचयिता श्री जगदीश प्रसाद मण्डल छैथ। ओइ बर्ख माने 2016 इस्वीमे हिनक आरो-आर पोथी सभ प्रकाशित छैन्ह। जेना, 'एगच्छा आमक गाछ', 'शुभचिन्तक', 'गाछपरसँ खसला', 'डभियाएल गाम' इत्यादि। 'मुड़ियाएल घर' कथा संग्रहक पहिल संस्करण 2016 इस्वीमे पल्लवी प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल अछि। एहि पोथीक लोकार्पण दिनांक 31.12. 2016क आयोजित 'सगर राति दीप जरय'क 92म कथा गोष्ठीमे भेल अछि। एहि पोथीकेँ उक्त गोष्ठीमे भाग लेनिहार समस्त साहित्यकार-साहित्य प्रेमीगणक बीच वितरण सेहो कएल गेल छल।

प्रस्तुत पोथीमे कुल एगारह गोट कथा संग्रहित अछि, जकर लेखन 6 सितम्बर 2016 सँ 28 नवम्बर 2016 धरिक समयावधिमे कथाकार केने छैथ। पोथीमे संग्रहित सभ कथाक संक्षिप्त विवरण- कथाक शीर्षक, शब्द संख्या आ लेखन तिथि निम्नांकित अछि-

1. **बगदल गाम** - शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
2. **बत्तीसोअना** - शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
3. **कचहरिया रोग** - शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
4. **दिन घटि गेल** - शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टूबर 2016
5. **मुड़ियाएल घर** - शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टूबर 2016
6. **गामक सुरता** - शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टूबर 2016
7. **खतियाएल घर** - शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
8. **बात-कथा सुनौलक** - शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
9. **अनका बेर ओंघी** - शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
10. **देव उठान** - शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
11. **नमहर घरक चोरि** - शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना कौशलक सन्दर्भमे विद्वतजन लिखने छथि, "मण्डलजी फुसियाँहीक रचनाकार नञि छैथ, हिनक एक-एक वाक्य महत्वपूर्ण होइत छैन्ह। एहि तरहक रचना कौशल कोनहुँ रचनाकारमे तखनहिं आबि सकैछ जखन मंसा-वाचा ओ कर्मणाक सतह एक हो।"



प्रस्तुत पोथीमे पहिल स्थानपर 'बगदल गाम' नामक कथा संग्रहित अछि, जकरा माध्यमसँ कथाकार समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी सोच ओ अन्धविश्वाससँ जकड़ल समाजक चित्रकेँ सोझामे अनलैन्ह अछि। बगदल गाममे समाजक ओहन व्यक्ति आ सोचक रेखांकन भेल अछि जे मिथिलाक किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृतिकेँ कमजोर करैत रहल अछि।

'बत्तीसोअना', 'कचहरिया रोग', 'दिन घटि गेल', केर बाद पाँचम स्थान पर अछि 'मुड़ियाएल घर', एहि कथाक उद्देश्य बेस व्यापक अछि। वाणीश्वरी भगवतीक भक्त वएह छैथ जनिक वाणीमे विवेक छैन्ह, जनिक स्वर कर्मसँ बान्हल छैन्ह। ई चीज कथामे तखन स्पष्ट होइत अछि।

कहल जा सकैत अछि जे प्रस्तुत कथा 'मुड़ियाएल घर'क माध्यमसँ कथाकार मनुक्खक वाणीक चर्च गहराइसँ केलैन्ह अछि। अर्थात् ई जे मनुक्खक वाणी (बोली) जीवनक लेल सबसँ महत्वपूर्ण होइत अछि। ओना, वाणीक सुधार साधनासँ होइए, जिनकर जेहेन साधना, तिनकर तेहेन वाणीमे शुद्धतो आ मिठासो रहिते अछि। एहि विचारधारा दिस इशारा करैत कथाकार वाणीश्वरी भगवतीक चर्च केलैन्ह अछि।

आगाँ 'गामक सुरता', 'खतियाएल घर', 'बात-कथा सुनौलक', एहि कथाकेँ कथाकार रोचक ढंगसँ लिखलैन्ह अछि। मोबाइल आ फोनक माध्यमसँ एककेँ एक्कैस आ तीनकेँ तेरह वा कही तऽ तीलकेँ तार करबाक जे सुविधा लोकक बीच बढ़ि गेल अछि तेकरे परिणाम एहि कथामे देखौल गेल अछि।

'अनका बेर ओंघी', पढ़ल-लिखल व्यक्ति केर अनुशासनहीनताकेँ रेखांकित करैत ई कथा पारिवारिक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल अछि। जाहिमे गुरुए अनुकूल ज्ञान आ ज्ञानहिं केर अनुकूल व्यवहारकेँ जीवनक धरातलपर आनि स्पष्ट करैत अछि।

'देव उठान', प्रस्तुत कथाक मुख्य पात्र कथाकार स्वयं छैथ, अधेर उम्रमे शिक्षकक बहालीमे अपन आ अपन पत्नीक बहाली करबा कथाकार 'पीसा, पाहुन' आ पत्नी मैडम भऽ गेलैथ।

पोथीक अन्तिम कथा 'नमहर घरक चोरि', मे कथाकार वर्तमान साहित्य जगतमे भऽ रहल रचनाक चोरी आ अशुद्धता दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट करय चाहैत छहलैन्ह अछि।

अतएव 'मुड़ियाएल घर' कथाकारक रचना कौशल आ हुनक सामाजिक सरोकारकेँ दर्शबैत पाठकक हृदयकेँ स्पर्श करबामे सफल रहल अछि।

घरक बनल रसगर व्यंजन



❑ सरिता दास

वेज डम्पलिंग

सामग्री :-

मैदा - 1 कटोरी
पत्ता कोबी, शिमला मिर्च, गाजर, मूली (कद्दूकश कएल) - 1 कटोरी
शिमला मिर्च, प्याज आ गाजर (मोट काटल) - 1/2 कटोरी
लहसून काटल - 1 पैघ चम्मच
तेल - 2 चम्मच,
मरीच पाउडर - 1/4 चम्मच
नून, मिरचाई - स्वादनूसार
सोया सॉस - 1 पैघ चम्मच।
टोमैटो सॉस - 2 पैघ चम्मच
आरारोट - 1 पैघ चम्मच।

विधि :-

मैदाकेँ पानिमे सानि कऽ मुलायम कऽ लिय आ ओकरा भीजल कपड़ासँ झाँपि कऽ राखि लिय। पैनमे कनेक तेल गरम कऽ कद्दूकश कएल तरकारीकेँ कनेक नून-मिरचाई





दऽ दू मिनट भूजि कऽ राखि लिय।

मैदाकेँ छोट-छोट पूरी जकाँ बेल कऽ भूजल मिश्रण कनी-कनी भरि कऽ पुरूकिया जकाँ मनपसंद आकार दऽ तेल लागल प्लेटमे राखु।

आब पैघ बरतनमे आधा पानि दऽ आँच पर चढ़ा दियौ। स्टीलवाला चालैन पर मोमोज जे पुरूकिया जकाँ बनेलौंह ओकरा दऽ उबलैत पानि पर राखि भाप पर 10 मिनट पकाऊ। ओहिना सीझ जैत।

आब एकटा लोहियामे शेष बाँचल तेल गरम कऽ पहिने काटल लहसून गुलाबी होए धरि पकाऊ, आब रफली काटल तरकारी दऽ दू मिनट पकाऊ आ ओहिमे 1/2 लिटर पानि दऽ दियौ। आरारोट छोड़ि कऽ बाँकि सब सामग्री मिला कनेक गाढ़ होए धरि पकाऊ बस सूप जकाँ गाढ़ होए। ओहिमे भाप पर पकाओल डम्पलिंग दऽ दियौ। सग्गा प्याज जौँ होए तऽ बारीक धनिया पात संग सजा कऽ सर्व करू।

कीमची (कोरियन अचार)

सामग्री :-

मुलायम पत्ता कोबीक पात
अलग कएल - 5-6 टा
नून - 3 चम्मच
आदी कुचल - 1 चम्मच
चीन - 1/2 चम्मच
लहसून थकुचल - 1 चम्मच
भूजन तील - 1 चम्मच
मिर्च पाउडर - 3 चम्मच
सोया सॉस - 2 चम्मच
आरारोट - 1 चम्मच

विधि :-

पात पर खुब नीकसँ नून लगा कऽ 2-3 घंटा लेल एकटा बरतनमे झापिकऽ राखि लिय।

एक कप पानिमे आरारोट घोरि कऽ एकटा पैन लऽ लिय। एहिमे कनेक नून, चीनी आ सोया सॉस मिला कऽ आँच पर चढ़ा दियौ।



लगातार चलबैत रहु, जखन घोर पारदर्शी भऽ जाए तऽ आँचसँ उतारि लिय।

पातकेँ दू-तीन पानिसँ नीकसँ धो लिय। पकाओल घोरमे आदी, लहसून, मिर्च पाउडर नीकसँ मिला लिय। आधा तील सेहो मिला लिय। घोरकेँ पात पर नीकसँ लेप कऽ अलग-अलग खुब नीकसँ रोल जकाँ मोड़ि लिय। एकटा छोट बरतन वा माटिक बरतन जे ढक्कनवाला होए, ओहिमे दाबि-दाबि राखु। ऊपरसँ तील छीट कऽ कसलमे ढक्कन बंद कर दियौ। 24 से 36 घंटा लेल एहिना राखि दियौ। किमची तैयार अछि। परसयसँ पहिले चॉपिंग बोर्ड पर बारीक काटि लिय, ताकि एकर रस फेरसँ सेभ कऽ सकी। ई अचार बड्ड करू संगे स्वादिष्ट होइत अछि, एकरा फ्राईड राइस बनबै मे सेहो इस्तेमाल कऽ सकैत छी।



फ्राईड राइस बॉल्स

सामग्री :-

चावल आटा	- 1 कटोरी
लहसून-आदि पेस्ट	- 1/2 चम्मच
तेल	- 2 पैघ चम्मच
रैंची	- 1/2 चम्मच
हरियर मिरचाई(बारीक)	- 2 टा
करी पत्ता	- 8-10 टा
लाल मिर्च पाउडर	- 1/2 चम्मच
नून	- स्वादानुसार

विधि :-

आटाकेँ लहसून-आदी पेस्ट, नून आ



कनेक तेल दऽ गरम पानिसँ मुलायम कऽ सानि लिय। एकर छोट-छोट बॉल बना कऽ भाप पर पका लिय। टूथापिकसँ चेक कऽ लिय, सीझ जाएत तऽ साफ नीकलि जाएत। नञि तऽ कनि आर पका लिय।

आब फ्राईग पैनमे तेल गरम कऽ सेरसोंक फोरन दऽ, करी पत्ता, हरि मिर्चक कनेक पका कऽ सबटा बॉल दऽ भूजु। ऊपरसँ स्वादानुसार नून मिरचाई सेहो छीट दियौ। एहिमे जौँ कनी सग्गा प्याज काटि कऽ दऽ देबै तऽ बड्ड नीक स्वाद भऽ जाएत।

फ्राईड मिल्क

सामग्री :-

दूध	- 2 कप,
आरारोट	- 2 चम्मच
चीनी (पाउडर)	- 2 चम्मच,
दाल चीनी (पाउडर)	- 1 चम्मच
फ्राई करय वास्ते	- घी।

विधि :-

दूधमे आरारोट आ एक चम्मच चीनी घोरि कऽ आँच पर चढ़ा लगातार चलाबैत रहु, जाधरि खुब गाढ़ नञि भऽ जाए। आब एकटा चौकोर कोनो खुलल बरतनमे घी लगा कऽ एहि मिश्रणकेँ 1 इंच मोट लेयरमे पसारी कऽ आधा घंटा फ्रिजमे सेट होए लेल राखि दियौ।

आब फ्राईंग पैनमे घी गरम होए लेल चढ़ा दियौ। एम्हर सेट भेल मिश्रणकेँ बर्फी आकारमे काटि लिए। एहि टुकड़ाकेँ घीमे फ्राई कऽ लिय उपरसँ बाँचल चीनी पाउडर आ दालचीनी पाउडरकेँ मिला कऽ छीट दियौ।



यकीन मानु सबकेँ ई मिठाई खुब पसंद आओत। दालचीनी फ्लेवर एकदम अलग स्वाद देत।



रंगमंचसँ फिल्म धरि अपन अभिनयक ढंका बजा रहलीह साक्षी मिश्रा

वर्ष 2013मे मिथिलांगनक प्रस्तुति मैथिली नाटक 'बैसाख नन्दन'मे एकटा छोट भूमिकासँ अपन रंगमंचीय जिनगीक आरम्भ करयवाली, हालहिं मे प्रदर्शित मैथिली फिल्म 'बबितिया' मे मुख्य भूमिका निभा सम्पूर्ण मैथिलजनक हृदयमे अपन अभिनयक छाप बसा चुकल साक्षी मिश्रा आइ कोनो परिचयक मोहताज नञि छथि।

नयागाँव निवासी अरूण कुमार मिश्र आ बेबी मिश्राक सुपुत्री साक्षी तीन भाई-बहिन छथि। वर्त्तमानमे अपन पति विद्यांशु मिश्रा आ पुत्र अयांश मिश्राक संग सुखीपूर्वक पारिवारिक जिनगी बिता रहल छथि।

दिल्लीमे रहि कतेको नाटकमे अहम भूमिका निभा, रामलीलामे कतेको वर्ष धरि सीताक अभिनय कऽ मायानगरी दिस मुखर भेलीह जतय सावधान इण्डिया, क्राइम पेट्रोल, क्वीन हैं हम आदिमे अभिनय कऽ रंगजतमे पएर राखि 2020मे मैथिली फिल्ममे अभिनय केलीह।

भविष्यमे मैथिली रंगमंच आ फिल्ममे अभिनय करैत रहबाक प्रबल इच्छा राखयवाली साक्षीक भविष्योमे अपन अभिनयसँ दर्शककेँ आनंदित करैत रहतीह।

गौरतलब अछि जे साक्षी मिथिलांगनक नाट्य प्रस्तुति फुटपाथ, नञि लागय दुज्जन हासा, राजा सहलेश आदिमे अपन अभिनयसँ प्रेक्षककेँ हर्षित कऽ चुकल छथि। मिथिलांगन हुनक उज्ज्वल भविष्यक कामना करैत अछि।

सौन्दर्य निखार केर घरेलू तरीका



❑ *संतोषी कर्ण*

घर पर हेयर स्पा

सामग्री :

नारियल तेल, टी ट्री ऑयल, हेयर स्पा क्रीम, शैम्पू, सॉफ्ट-क्लीन टॉवल, हेयर स्पा हाईड्रेटिंग कोन्सन्ट्रेट, कंडीशनर, सीरम, शॉवर कैप।

स्पा करबाक तरीका :

सबसँ पहिने केशमे बढ़ियाँ जकाँ शैम्पू (जे अहाँ इस्तमाल करय छी) कऽ लिय। आब केशमे टॉवल लपेट लिय आ बढ़ियाँ जकाँ पोइछकेँ अतिरिक्त पानि हटा लिय। आब एकटा बाउलमे 1 से 1.5 चम्मच नारियल तेल लिय। तेलक मात्र अपन केशक हिसाबसँ घटा-बढ़ा सकैत छी। आब तेलकेँ हल्का गुनगुना कऽ लिय, ध्यान राखब जे तेल बेसी गरम नै भऽ जाय। तेल गरम करय लेल गैस पर एकटा बर्तनमे कनि पानि धऽ दियौ, आब जाहि बाउलमे तेल निकालि कऽ रखने छी ओहि बाउलकेँ पानिमे राखि दियौ ओकरा बाद गैस जराकऽ तेलकेँ हल्का सुसुम कऽ लिय। गरम भेल तेलक बाउलकेँ बर्तनसँ निकालि ओहि तेलमे 4-5 ड्रॉप टी ट्री ऑयल मिला लिय।

आब मालिशके लेल तेल तैयार भऽ गेल अछि। आब एहि तेलसँ सिरक त्वचा (scalp) पर बढ़ियाँ जकाँ मालिश कऽ लिय।

अपन केशक लंबाईक हिसाबसँ एकटा बाउलमे स्पा क्रीम निकालि लिय। ओहिमे L'Oréal hair spa hydrating concentrate (for dry hair) मिला लिय। आब एकरा केशक लंबाईमे लगा लिय। केशकेँ छोट-छोट सेक्शनमे बाँटि लिय, जाहिसँ पूरा केशमे बढ़ियाँ जकाँ क्रीम लागि पाबय। एहि क्रीमकेँ केशक लंबाईम अंत धरि लगेबाक अछि, मुदा सिरक त्वचा पर नहि।

पूरा केशमे क्रीम लगेलाक बाद आब बढ़ियाँ जकाँ सिरक त्वचामे 10 मिनट धरि मालिश कऽ लिय। ओकरा बाद बर्तनमे गरम पानि (जते अहाँ बर्दाश्त कऽ सकी) कऽ लिय। ओहि पानिमे तोलियाकेँ भिजा अतिरिक्त पानि निकालि लिय आ पूरा केशकेँ समैट कऽ लपेट लिय। जौँ अहाँक केश रूखल आ घुँघरल अछि तऽ अहाँ दुबारा सेहो कऽ सकैत छी। आब केश में shower cap लगा लिय आ आधा घंटाक लेल छोड़ि दियौ। तकर बाद शैम्पू आ कंडीशनरक सहायतासँ केश धो तौलिया लपेट अतिरिक्त पानि निकालि लिय।

एहि तरहेँ स्पा महीनामे एक बेर कऽ सकैत छी।

नोट :-

1. स्पा करयसँ पहिने केश धोनाय अनिवार्य अछि।
2. ध्यान राखब जे केशसँ अतिरिक्त पानि निकालयकेँ अछि नै की पुरा सुखेबाक अछि।
3. स्पामे उपयोग होएवला सामग्री नीक कम्पनीक हेबाक चाही।
4. जौँ सिरमे कोनो समस्या अछि तऽ चिकित्सकक परामर्शक बादे हेयर स्पा करब।

दाग धब्बा हटेबाक घरेलू उपचार

सामग्रीः

चाऊरक आटा - आटा अपना चेहराक हिसाबसँ लिय, आटा बजारसँ सेहो लऽ सकै छी वा घरमे चाऊर फूला कऽ पीस सकैत छी।



आलू - आलूकेँ घैस कऽ ओहिमे सँ रस निकाहल लिय। एहि रसकेँ चाऊरक आटामे जरूरतक हिसाबसँ मिला लिय।

नेबो - एकटा नेबोक रस निकालि कऽ लिय।

एहि तीनुकेँ नीकसँ मिला लिय। आब चेहराकेँ नीक जँका साफ कऽ लिय। ओकरा बाद तैयार पैककेँ चेहरा पर लगा लिय आ 20 सँ 25 मिनट लेल चेहरा पर छोड़ि दियौ। आब पेनक सहयतासँ सर्कुलर मोशनमे 2 मिनट मिनट धरि मसाज करू आ टीसूक सहयतासँ ओकरा साफ कऽ लिय।

एहि पैककेँ एक दिन छोड़ि-छोड़ि कऽ दू सप्ताह धरि लगाऊ। फेर एक वा दू सप्ताह लेल छोड़ि दियौ। तकरा बाद फेर शुरू करू। शरीर पर जतय कतौ दाग अछि अहाँ ओतय एकर इस्तेमाल कऽ सकैत छी।

ओना तऽ ई पैक सब कियो कऽ सकैत छथि, मुदा नाजुक त्वचाक लेल किछ सावधानी अछि। ओ चेहरा पर लगाबयसँ पहिने गरदन पर लगा कऽ जाँच कऽ लैथ जे कोनो प्रकारक दिक्कत तऽ नै होए छैन्ह। जिनकर त्वचा बेसी नाजुक त्वचा छैन्ह ओ इस्तेमाल नै करैथ।



संस्कार-स्वैग, परंपरा-प्रगति आ संस्कृति-स्टाइलक जुगलसँ नव अंदाजमे भारतीय संस्कृतिकेँ संगीतक माध्यमे युवा पीढ़ीमे प्रचारित-प्रसारित कऽ रहल छथि प्रिया मल्लिक

संगीतक क्षेत्रमे नव डेग बढ़ाबैत प्रिया मल्लिक

प्रिया मल्लिक बॉलीवुडमे तेजीसँ लोकप्रिय भऽ रहल एकटा युवा गायिका छथि, जिनका सोशल मीडिया पर लाखक-लाख फॉलोअर्स अपन प्यार आ सम्मान दऽ रहल अछि। स्टार भारत चैनल पर प्रसारित आ डिजनी हॉटस्टार पर स्ट्रीम भऽ रहल कार्यक्रम 'ओम शांति ओम' सिंगिंग रियलिटी शोसँ लोकप्रिय भेल प्रिया देशक जानल-मानल संगीतकारक संग-संग पार्श्व गायनमे सक्रिय छथि। ओ देश-दुनियाक पैघ-पैघ मंचसँ जनतामे अपन आवाजक जादू बिखेर रहल छथि। हालहिं मे फिल्म 'भुज'मे हुनक शंकर महादेवन संग गाओल देशभक्ति आ ओजस्वी गीतकेँ जनता आ देशक दिग्गज राजनेता सभ द्वारा सराहल गेल। फिल्मी संगीतक संग-संग बिहार-उत्तर प्रदेशक लोकगीतकेँ एकटा नव अंदाजमे प्रस्तुत करबा लेल सेहो प्रिया मल्लिक सोशल, प्रिंट आ इलेक्ट्रॉनिक मीडियामे खुब चर्चामे रहलीह।

अपन गायकीक बल पर यूथ आईकॉन भऽ चुकल प्रिया मल्लिक मिथिलाक एहन युवा गायिका छथि जिनकामे संस्कारो छैन्ह आ स्वैगो छैन्ह, परंपरो छैन्ह आ प्रगतिसे छैन्ह। संस्कृति आ स्टाइलक जुगल हिनक संगीतमे अछि। भारतीय संस्कृतिकेँ अपन संगीत आ वक्तव्यक माध्यमे युवा पीढ़ीमे नव अंदाजमे प्रचारित-प्रसारित करबा लेल हिनक सराहना कएल जाएत अछि।

सहरसा सुपौल निवासी श्री भारत भूषण मल्लिक आ श्रीमती समता मल्लिक केर सुपुत्री प्रिया मल्लिक जयपुर घरानासँ भारतीय शास्त्रीय संगीतक शिक्षा-दीक्षा पाबि जैज, ब्लूज, रॉक एंड रोल जेहन वेस्टर्न गायिकी स्टाइलमे सेहो अपन प्रस्तुति दैत छथि। सरस्वती बाई दादा साहब फाल्के सम्मान, आधी आबादी बेस्ट सिंगर सम्मान, ग्लोबल यूथ आईकॉन अवार्ड, महादेवी वर्मा युवा प्रतिभा सम्मान आदि संग कतेको प्रतिष्ठित मंचसँ संगीतमे हिनक योगदान लेल हिनका सम्मानित कएल जा चुकल अछि।

हिनक गाओल 'आजु मिथिला नगरिया निहाल सखिया', 'ए पहुना एहि मिथिलेमे रहू ना', 'सोहर', 'अरजि-अरजि भोला केकरा केँ दै छी', 'गणेश आरती', दुर्गा सप्तशतीक कवच स्तोत्र (संस्कृत मे) आदि खुब पसिन कएल गेल अछि। अखन धरि हिंदी, अंग्रेजी, मैथिली, भोजपुरी, पंजाबी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, गुजराती, बंगाली आदि कतेको भाषामे गीत गाबि चुकल छथि।



एहि स्तम्भक माध्यमे वर्तमानमे मिथिला आ देशक नाम ऊँच करयवाली मैथिल धियाक परिचय पाठक लोकनि सँ कराओल जाएत अछि।

मिथिलाक धरोहर

जुड़शीतल



❑ बी. के. मल्लिक

मिथिलाक पावनि जुड़ शीतलक महत्व सांकृतिक, आर्थिक आ वैज्ञानिक रूपसँ विशेष अछि। ई पावनि देशक विभिन्न हिस्सामे 13-14 अप्रैलकेँ विभिन्न नामसँ मनाओल जाइत अछि। बैशाखी, बिहू, विशु, पोइला बैशाख, तऽ पुथांदु क नामस अलग-अलग जगह मनाओल जाइत अछि। ई बिहारोमे अलग-अलग क्षेत्रमे अलग-अलग नामसँ जानल जाइत अछि। भोजपुरक इलाकेमे सतुआनीक नामसँ तऽ ओतहि अंग आ मगधक इलाकामे बिशुआ पावनिक रूपमे मनाओल जाइत अछि।

ई पावनि सब साल 14 अप्रैलकेँ होइत अछि। ओहि दिन मेषक संक्रांति रहैत अछि आ मिथिलामे नववर्ष शुरू होइत अछि। ई पावनि एहन अछि जे जाहिमे मनुष्य आ प्रकृतिसँ सीधा सम्बन्ध अछि। ओहि समयमे दू मौसमक संक्रमण काल रहैत अछि। गर्मी ऋतूक आगमनक कारणेँ वाष्पोत्सर्जनक मात्रा बढ़ि जाइत अछि अओर गाछ-वृक्षमे जलक मात्रा कमि जाइत अछि ओहि द्वारे गाछ सबमे पानिक जरूरत परैत अछि ओहि कारणसँ जुड़ शीतल पावनिमे गाछमे पानि देबाक परंपरा अछि।

जुड़ शीतलक दिन दौरान चूल्हा-चौकी बन्न रहैत अछि। सतुआनीक रतिमे बड़ी आ भात बना कऽ राखैत अच्छी आ भिनसर चूल्हा, दरवाजा आ खाम्ह सभहक निचामे बड़ी-भात चढ़ाओल जाइत अछि। ओहि दिन चूल्हा नञि जरैत अछि, जकरा चूल्हा-निवारण सेहो कहल जाइत अछि। घरक सभ लोक बसिया बड़ी-भात खाइत अछि। ई परंपरा अदौकालसँ चलि आबि रहल अछि।

लोक पोखर, ईनार सबकेँ साफ करैत अछि जाहिसँ गर्मीमे पानिक संचय ठीक ढंगसँ होए। जल संचयक दृष्टिसँ अपने आपमे एहि पावनिक बड्ड महत्त्व अछि। जुड़ शीतलक दिन लोकसब माटि-पानी, थाल-कादोसँ सेहो खेलायत अछि, जकरा धुरखेल कहैत अछि। तुलसीक पौधा सूखा गेल रहैत अछि वा नञि रहैत अछि तऽ ओहि दिन तुलसीक पौधा रोपल सेहो जाइत अछि।

जुड़ शीतलसँ एक दिन पहिले सतुआनी पावनि दिन लोक चना, जौ आ गेहूमक सत्तूसँ नाश्ताक प्रारंभ करैत अछि। एहि पावनिक समयमे गर्मी रहैत अछि, ओकर स्वागत लेल बूढ़-बुजुर्ग सब धिया-पुता सबकेँ माथ पर बसिया पानी दऽ कऽ आशीर्वाद दैत छथिन्ह जाहिसँ हुनक स्वाभाव सदिखन शीतल बनल रहय।

पर्यावरणक दृष्टिये जुड़ शीतलक दिन बड्ड महत्वपूर्ण अछि। ओहि दिन घर, दलानक संग-संग बाट-घाट पर पानिकेँ छिड़काव कएल जाइत अछि। सभ गाछ-वृक्षक जड़िमे पानी देल जाएत अछि। अहि तरहक पावनि अहाँकेँ मिथिलाक अलावे कतओ अओर नञि भेटत। वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ सूर्य आ चन्द्रमाक चालि जुड़शीतलक समय नक्षत्र आ राशि एहन भऽ जाइत अछि जे कीटाणु खाद्य पदार्थकेँ खराब करैत अछि ओ अहि समयमे नञि कऽ सकैत अछि।



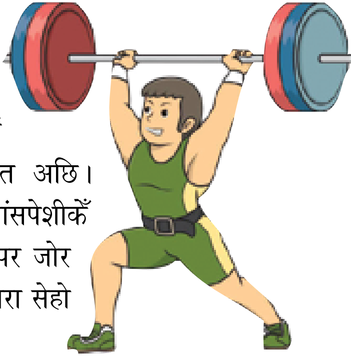
बौआ-बुच्ची लोकनि,

अहाँ सभहक रूचिकेँ देखैत एहि स्तम्भक आरम्भ कएल गेल, अहाँक सहभागिता सराहनीय अछि। अहाँ सब अपन-अपन प्रश्न आ एहि स्तम्भमे पुछल प्रश्नक उत्तर मिथिलांगनक ईमेल **mithilangan@gmail.com** वा मो. न. ***9910952191*** पर व्हाट्स अप कऽ सकैत छथि। चुनल प्रश्न/उत्तरकेँ अहाँक नाम आ पताक संग अओर मिथिलांगनक विशेषज्ञक उत्तरक संग पत्रिकाक अगिला अंकमे प्रकाशित कएल जाएत।

- सम्पादक

1. भारोत्तेलक वजन उठाबयसँ पहिने हमेशा पेट पर एकटा चौड़गर-मोटगर बेल्ट किएक बाँधैत छथि?

उत्तर :- जखन कोनो व्यक्ति भारी वजन उठाबैत छथि तऽ हुनक पेटक मोसपेशी पर बेसी जोर वा दबाव पड़ैत अछि। मांसपेशीकेँ बेसी कमजोर भेलासँ कखनो-कखनो मांस फाटय केर खतरा सेहो रहैत अछि। भारी वजन उठेलासँ हनिर्याक संभवना सेहो बढ़ि जाइत अछि। जाहिमे कोनो आंतरिक अंग जेना आंतक एक भाग सुरक्षात्मक मांसपेशीक मध्यमे अन्तरालक कारणेँ उभरि कऽ बाहर आबि जाइत अछि। चूकिँ उदरीय मांसपेशी शीघ्रे शिथिल पड़ि जाइत अछि, एहिसँ हर्निया हेबाक खतरा बढ़ि जाइत अछि। एहन स्थितिमे बेल्ट बाँधलासँ मांसपेशीकेँ सहारा मिल जाइत अछि, ओहि पर जोर नञि पड़ैत अछि आ हर्नियाक खतरा सेहो कम भऽ जाइत अछि।



(आयुष वर्मा; जमशेदपुर, झारखण्ड)

2. एल्यूमिनियम फॉइलमे राखल खेनाय/वस्तु देर धरि किएक गर्म रहैत अछि?

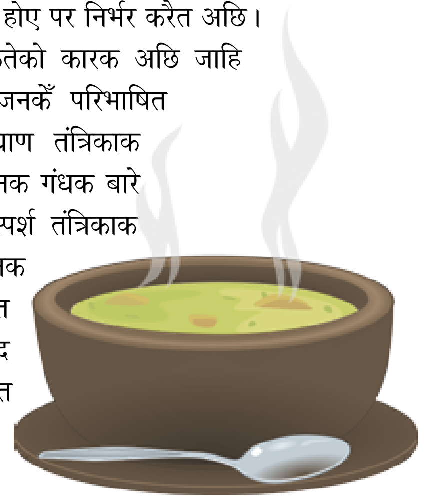
उत्तर :- एल्यूमिनियम धातु हेबाक कारणेँ ऊष्माक नीक चालक अछि, परञ्च पॉलिश कएल गेल वा चमकाओल एल्यूमिनियम ऊष्माकेँ परावर्तित सेहो करैत अछि। एहिसँ जखन एल्यूमिनियम पॉलिश कएल गेल पातर पन्नी वा वर्कमे गरम खाद्य पदार्थकेँ लपेटल जाइत अछि तऽ ओकर भीतरक ऊष्माकेँ ओ भीतरे सीमित रखबामे सहायक होइत अछि। संगहि ई खाद्य वस्तुसँ बेसी ऊष्मो ग्रहण नञि करैत अछि। एहि कारणेँ खाद्य वस्तु अपन ऊष्णता छोड़ि शीघ्रे ठण्डा नञि होइत अछि। जाहिसँ एल्यूमिनियमक वर्क वा फाइलमे लपेटल खाद्य पदार्थ पर्याप्त समय धरि गर्म बनल रहैत अछि।



(पियुष अरविन्द दत्त; कालम्बोली, नवि मुम्बई)

3. गर्म बनल खेनाय, ठण्डा भेल खेनायसँ नीक आ स्वादिष्ट किएक लागैत अछि?

उत्तर :- कोनो भोज्य पदार्थक स्वाद मात्र ओकर खटास, मिठास, नमकीन वा मीठ होए पर निर्भर करैत अछि। एकर अलावे अओरो कतेको कारक अछि जाहि आधार पर स्वादिष्ट भोजनकेँ परिभाषित कएल जाइत अछि। घ्राण तंत्रिकाक सहायतासँ लोककेँ भोजनक गंधक बारे मे पता चलैत अछि। स्पर्श तंत्रिकाक सहायतासँ लोककेँ भोजनक आकारक भान होइत अछि, जखनकि स्वाद कलिका नीचा स्थित स्पंदन तंत्रिकासँ मिर्च मसालाक तीखापनक आभास होइत अछि।



ठण्डा भेल खेनाय आमतौर पर अस्वादिष्ट एहि लेल होइत अछि, किएक तऽ एहिमे सँ निकलयवला स्वादक गंधवाला धुआँ नञि निकलि रहल होइत अछि। वास्तव मे गर्म-गर्म भोजनसँ निकलैत धुआँसँ हमर घ्राण तंत्रिका संवेदित भऽ खानाक स्वादकेँ अओर बढ़ा दैत अछि। एहिसँ खानाक स्वाद लेबाक लेल घ्राण तंत्रिका संवेदन भेनाय आवश्यक अछि। अक्सर अनुभव केने होएब जे जुकाम भेला पर वा नाक बन्न भेला पर स्वादिष्ट भोजन सेहो स्वादहीन लागैत अछि।

(शिवानी कर्ण; नांगलोई, नई दिल्ली)

आहाँ लोकनिक लेल प्रश्न

1. **मानसिक रोगीकेँ बिजलीक झटका किएक देल जाइत अछि?**
2. **काफी समयसँ राखल पुरान कापी-किताबक पृष्ठ पियर किएक भऽ जाइत अछि?**
3. **लकड़ी जराबय पर चटकयकेँ आवाज किएक होइत अछि?**

बाल कविता

आ रे आ सुग्गा आ



❑ डॉ. किशन कारीगर

आ रे आ कौआ आ
आ रे आ सुग्गा आ

आ रे आ मैना आ
आ रे आ बगरा तहुँ आ

चिड़ै-चुनमुन सब आ आ
दौगा-दौगी बौआ संगे खेला आ

हे सुग्गा तूँ बौआकेँ रोटी नै खेहियै
हम तोरो लै रोटी रखने छियौ

हे मैना आइ तूं कतऽ रैह गेलही
हमर बौआ तोरा तकै छलौ

आ रे बगरा जल्दी आबि जो
हमर बुच्ची कटोरी मे पानि रखने छौ

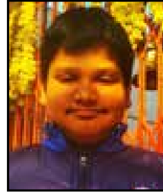
चिड़ै-चुनमुन सब चूं-चूं चीं-चीं करै
हमला बौआ केँ कते नीक लगलै

आ सब मिलकेँ खेलै जाइ जो
हे खेलाइत खेलाइत झगड़ा नै करै जाहियैं

आ रे आ सुग्गा आ
बौआ संगे खेला आ।



चुटुक्का



❑ स्वर्ण सार्थक

1.

माए अपन बेटाकेँ कहलैन्ह - जो पाहुन सबसँ खेनाय दऽ पुछने आ।

बेटा पाहुन सबसँ पुछलक - माँ पुछैत छथि अहाँ सभ खा कें आयल छी की जा कें खायब?

2.

एक दिन हमर मामा घर आयल छलाह, ओ हमरासँ परीक्षाक तैयारकेँ बारेमे पुछलैन्ह। तऽ हम कहलियैन्ह हम परीक्षाकेँ तऽ नै मुदा रिजल्टक पुरा तैयारी कऽ लेने छी। ओ पुछलैन्ह, “से कोना?”

हम कहलियैन्ह - पापाकेँ चमरावाला बेल्ट नुका दकने छी, हुनक बाटावला चप्पल नुका देने छी, मम्मीकेँ करछी-बेलन नुका देने छी। पुरा तैयारी कऽ लेने छी।

3.

एकटा बहीन अपन भाएसँ कहलक - भैया हम बड्ड ताकतवर भऽ गेलौंह।

भाए पुछलक - से कोना?

बहीन - हम शेरक दाँत तोड़ि देलौंह, बन्दरक नाङ्गिरि मड़ोड़ि देलौंह, भालूकेँ कपाड़ फोड़ि देलौंह, चीताकेँ टाँग तोड़ि देलौंह।



भाए - तखन!

बहीन - तखन!

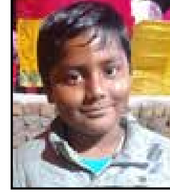
तखन कि, दुकानवाला हमरा दुकानसँ बाहर निकालि देलक।

4.

एकटा बुजुर्ग स्वास्थ्य जाँच लेल अस्पताल गेलाह। नर्स जाँच करैत कहलकैन्ह - तेज-तेज साँस लीय।

ओ तेज-तेज साँस लेबय लगलाह। कनि देर बाद नर्स पुछलकैन्ह - केहन लागि रहल अछि?

बुजुर्ग - बड्ड बढ़ियाँ, कोन ब्राण्डक इत्र लगाबैत छी अहाँ?



❑ यज्ञेश नन्दन दत्त

1.

विदेशमे सरकार युवा सभ चलाबैत अछि आ पेंशन बुढ़ सबकेँ दैत अछि आ भारतमे सरकार बुढ़ा सब चलाबैत अछि आ टेंशन युवा सबकेँ दैत अछि।

2.

एकटा बुढ़ा व्यक्ति जंगलसँ जा रहल छलाह। बाटमे हुनका एकटा शेर भेट गेल, शेर हुनका खाय लेल आबय लागल तऽ ओ शेरसँ कहलैन्ह,



“महाराज! अहाँकेँ तऽ कोनो जवान आदमीक खुन पिबाक चाही, ओकर खुन नरम-गरम होइत अछि।”

ई सुनि शेर बाजल - से बात नै छै बाबा! आइ-काल्हि हमरा कोल्डड्रिंक पिबैकेँ बेसी मन करैत अछि।



3.

सवाल - अरैंज मैरेजमे तलाक कम किएक होइत अछि।

जवाब - जे अपना मनसँ वियाहो नै कऽ सकैत अछि ओ तलाक खाक करत!

की अपने, अपन धीया-पूताक संग मैथिली मे बतियाइत छी? जौं नञि तऽ आइये सँ शुरू कऽ दीयौ। मातृभाषाक रक्षाक जिम्मा अपनेक कर्तव्य अछि। - मिथिलांगन

रामायणसँ साइबर सिक्योरिटीक मंत्र



❑ कमांडर (रिटा.) कौशल किशोर चौधरी

जखन भगवान राम अपन वनवासक लेल प्रस्थान केला तऽ हुनका सरयू नदी पार करबाक छलैन्ह। ओ एकटा नाविक केवटकेँ यमुना पार करबामे मदति करबाक अनुरोध केलैन्ह। केवट नदी पार करेबा लेल राजी तऽ भऽ गेल मुदा एकटा शर्तक संग। शर्त रहय जे पहिले हुनका अपन पएर धोआबय पड़तैन्ह।

भगवान राम जखन एकर कारण पुछलैन्ह तऽ ओ जवाब देलकैन्ह, "हे प्रभु! हम सुनने छी जे अहाँक चरणक धुलसँ पत्थर एकटा महिलामे परिवर्तित भऽ गेल (माता अहिल्याक कथा)। जौं अपनेक पएरक धुल हमर एहि काठक नावमे सटत आ ई नाव सेहो कोनो जीव (नारी)मे परवर्तित भऽ जाइत तऽ हमर जीविका कोना चलत?"

भगवान राम लग ओकरासँ अपन पएर धोयेबाक अनुमति देबाक अलावा कोनो आर विकल्प नञि रहि गेलैन्ह।

सुरक्षाक दृष्टिकोणसँ केवट एकटा भावी जोखिमक परिकल्पना केलक। हमरा विचारँस जोखिमक परिकल्पना केर ई पहिल उदहारण होएत।

केवट बुझैत छल जे ओ भगवान राम छथिन्ह, ओ आँखि बन्न कऽ केँ हुनका पर भरोसा कऽ सकैत छल, मुदा ओ अपन भरोसा पर नियंत्रण कऽ भरोसासँ उत्पन्न होएवाला जोखिमकेँ कम कऽ लेलक।

'कोविड-19' दुनियाक सबसँ भूतिया शब्द भऽ गेल अछि। एहि वायरससँ पैदा भेल तबाही अद्वितीय आ परम विनाशकारी साबित भेल अछि। सम्पूर्ण लॉकडाउन आ आंशिक लॉकडाउनसँ देशक अर्थव्यवस्था पर सेहो बड्ड खराप असर पड़ल अछि। मुदा एहन विषम परिस्थितिमे अर्थव्यवस्था आ दुनियादारी चलेबाक लेल आई टी एकटा बड्ड पैघ साधनक रूपमे साबित भेल अछि। भगवानक कृपासँ आइ अपना लग तकनीक अछि जेना की इंटरनेट, डीटीएच, मोबाइल आदि। जकर माध्यमसँ हम आंशिक वा पूर्ण लॉकडाउन रहितो समूचा दुनियासँ जुड़ल छी।

इंटरनेट आब हर घरमे अछि आ परिवारक लगभग हर सदस्य स्मार्टफोन वा कंप्यूटरक माध्यमे इंटरनेटसँ जुड़ल छथि। हालक सर्वेक्षणसँ पता चलल अछि जे हर मिनट लगभग 13 लाख लोक फेसबुक पर लॉग-इन करैत छथि, 47 लाख लोग YouTube पर वीडियो देखैत छथि आ 41 लाख लोग Google पर किछु सर्च करैत छथि। एकर अलावे, एक्हिं मिनटमे लगभग 60 लाख संदेश पठाओल जाइत अछि आ लगभग 4 लाखसँ बेसी ऐप डाउनलोड कएल जाइत अछि। इंटरनेट पर लोकक अतेक सक्रियता इंटरनेटक साइबर अपराधीक लेल सोनाक खान बनि गेल अछि।





केवटे जकाँ एहिसँ होएवला जोखिमक परिकल्पना इंटरनेट केर जोखिमसँ बचवाक सबसँ उपयुक्त साधन अछि।

चलू, कनि बूझल जाए जे साइबर अपराधी सफल किएक होइत अछिः-

साइबर अपराधीकेँ इंटरनेटक अंतर्निहित तकनीकसँ हमर अज्ञानता अओर दोसर पर जल्दिये भरोसा करबाक हमर भोला-भाला दिमागक बारेमे नीक जकाँ पता छै। ओ भोला-भाला लोक सबकेँ धोखा देबा लेल विभिन्न प्रकारक हथकंडा अपनाबैत अछि आ हम सभ ओकर चालमे फँसि जाइत छी।

विचार मंथनक सारः-

जेना भगवान रामक प्रति पूर्ण विश्वास रहितो केवट अपन भोलापन छोड़ि, जोखिमक पूर्वानुमान कऽ अपन संतुष्टिक लेल चरण धूलिकेँ हटेलाक बादे कार्य निष्पादन केलक, तहिना हमरो सबकेँ इंटरनेटसँ होएवाला संभावित जोखिमक पूर्वानुमान करलाक बादे ओकर उपयोग करबाक चाही।

इंटरनेट पर कोनो अनजानसँ ओटीपी वा अपन निजी सूचनाक कोनो हालतमे साझाँ करबासँ पहिले एक बेर केवटकेँ अवश्ये यादि कऽ ली।

भारत रत्न सुर सम्राज्ञी लता मंगेशकर पंचतत्वमे विलीन

"मेरी आवाज ही मेरी पहचान है" कहयवाली स्वर कोकिला, भारत रत्न लता मंगेशकरजी 06 फरवरी 2022कें एहि नश्वर शरीरकें त्याग कऽ पंचतत्वमे विलीन भऽ गेलीह।

28 सितम्बर 1929कें इंदौरमे जनमल लताजी चारि भाए-बहिनमे पिता दीनानाथ मंगेशकर आ माता सेवंती मंगेशकरक सबसँ पैघ संतान छलीह। हिनक निधनक समाचार अत्यंत दुःखद अछि, निःसंदेह ओ अपन कतेको भाषामे गाओल गीतसँ सदिखन अमर रहतीह। गौरतलब अछि जे ओ आन भा षाक संग मैथिलीमे सेहो गेने छलीह।

मिथिलांगन परिवार ईश्वरसँ ओहि पुण्यात्माक शांतिक लेल सतति प्रार्थना करैत अछि आ हुनक प्रसंशक लोकनिकें एहि आघातकें सहबाक शक्ति देबा लेल प्रार्थना करैत अछि। मिथिलांगनक सांस्कृतिक प्रभाग द्वारा हुनक सम्मानमे एकटा डिजिटल श्रद्धांजलि सभाक आयोजन कऽ हुनका याद कएल गेल।



साहित्य अकादमी पुरस्कृत साहित्यकार लिलि रे केर निधन



मैथिली भाषाक प्रख्यात साहित्यकार लिली रे केर आत्मा 03 फरवरी 2022कें अनन्तमे विलीन भऽ गेलैन्ह। मैथिली कथा साहित्यक अग्रणी लेखिका रहल लीली रे जीक आकस्मिक गेनाय मैथिली साहित्यकें शून्य कऽ गेल।

लिली रे पाहिल लेखिकाक रूपेँ आगाँ अबैत छथि जे मैथिलीक स्त्री-कथा लेखनकें भारतीय आ विश्व साहित्यक आगाँ आनलैन्ह। पचास-साठि साल पूर्वहिं ओ जाहि सामंती-पितृसत्तावादी शक्तिसँ लोहा लैत अपन पहिल रचना 'रोगिण ी'सँ 'रंगीन पर्दा', 'मरीचिका' (एहि उपन्यासक लेल वर्ष 1982मे हुनका साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलैन्ह), 'पटाक्षेप' आदि सन रचनाक सृजन केलैन्ह ओ समकालीन रचनाकार लेल पैघ लकीर बनल। 26 जनवरी 1933कें जनमल लिली रेक कथामे निर्मित होइत स्त्री चेतनाकें स्पष्ट रूपसँ देखल जा सकैत अछि।

हिनक असामयिक स्वर्गारोहणसँ मैथिली साहित्य छुछुन्न भऽ गेल ईश्वर शोकाकुल परिवारकें दृढ़ इक्षा शक्ति प्रदान करैथ। मिथिलांगन परिवार दिससँ ब्रह्मलीण आत्माकें अश्रुपूर्ण सादर श्रद्धांजलि।

समाजसेवी शोभाकांत दास जीक निधन



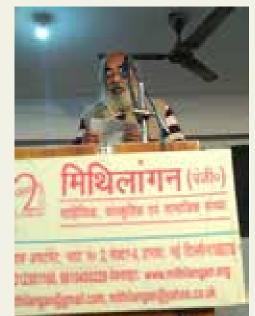
मैथिल कर्ण कायस्थ व्यापार नञि कऽ सकैत अछि एहि मिथककें तोड़ि व्यापारी वर्गक समूह बनाबयवाला मधुबनी जिलाक नवानी ग्रामवासी शोभा कान्त दास जीक आकस्मीक निधन मैथिल समाज लेल एकटा बड्ड पैघ क्षति अछि। गोयनकाक संग दोस्तीक संग मद्रासमे उत्तर भारतीयक आदरपूर्वक प्रतिनिधित्व केलैन्ह। बिहार भवन, अनाथालय, उच्च विद्यालय आ आन संस्थाक माध्यमसँ समाजकें सशक्त बनाबैत लाभ-लोभ, हर्ष-विषाद आदि समीकरणसँ सदिखन दूर रहयवला दासजी विद्यापतिक पुरुष परीक्षामे जाहि गुणक चर्चा कएल गेल अछि ओहिसँ लबरेज छलाह।

मिथिलांन परिवार एहि महान आत्माकें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत एहि महामानवकें अंतिम प्रणाम करैत अछि।

मिथिलांनक अभिभावक विश्व मोहन जीक देहावसान

अपन लेखनीसँ सम्पुष्ट आ उपस्थितिसँ मिथिलांगनकें कतेको बेर कृतार्थ केनिहार साहित्य पुरोधा बेलाराही ग्रामवासी श्री विश्व मोहन जी विगत 07 दिसम्बरकें परलोकगामी भऽ गेलाह।

मिथिलांन परिवार अपन एहि महान अभिभावकक आत्माकें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत अछि।







सेमीवर्चुअल माध्यमे मनौलक मिथिलांगन अपन 30सम वार्षिकोत्सव माता सरस्वती पूजनोत्सव

कोरोना महामारीक भीषण विभिषिकाक रहितो मिथिलांगन अपन सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक दायित्वक निर्वहन सफलतापूर्वक करैत आबि रहल अछि। एहि क्रममे वसंत पंचमी दिन 05 फरवरी 2022क मिथिलांगन अपन 30सम वार्षिकोत्सव माता सरस्वती पूजनोत्सवकेँ रूपमे पूर्ण सादगीसँ श्रद्धा आ भक्तिपूर्वक मनौलक। मात्र 25 कार्यकर्ता आ बच्चा-बुच्चीक उपस्थितिमे माए सरस्वतीक पूजा अर्चना भक्तिभावसँ कएल गेल। नेना-भुटका सभहक चित्रकला आ सांस्कृतिक कार्यक्रम वर्चुअल माध्यमसँ सफलतापूर्वक संपन्न कएल गेल। जाहिमे सब बच्चा सब अपन-अपन पेंटिंग आ





गीत-संगीत-नृत्यक वीडियो बना कऽ पठौलैन्ह आ ओकरा मिथिलांगन चैनल पर प्रसारित कएल गेल। साँझमे वरिष्ठ आ उदीयमान गायक कलाकार सभहक सुमधुर स्वरमे सांस्कृति कार्यक्रम लोकप्रिय संगीतकार आ सांस्कृतिक प्रभारी सुंदरमजीक संचालन आ संयोजन संजय चौधरी भेल। जाहिमे मिथिलाक जानल-मानल, नामी-गिरामी कलाकार सब अपन गायन कलाक प्रस्तुति देलैन्ह। सब कार्यक्रम अध्यक्ष श्री कमलेश जी आ अर्चना जीक सान्निध्यमे संपन्न भेल।

माए सरस्वतीसँ प्रार्थना जे एहि भीषण विभिषिकासँ संसारकेँ मुक्त कऽ सभहक रक्षा करैथ, जाहिसँ मिथिलांगन अपन पूर्ण क्षमताक संग कार्यक्रम सभहक कुशलता पूर्वक संचालन कऽ सकै।

पण्डित लालदास स्मृति सह जयंती समारोहक भव्य आयोजन

महाकवि पंडित लालदासक जनस्थली खड़ौआ गाममे महाकविक स्मृति सह जयंती समारोहक भव्य आयोजन कयल गेल। कार्यक्रमक मुख्य अतिथि छलाह डॉ. अशोक अविचल, विशिष्ट अतिथि डॉ. विनय कर्ण, भैरव लाल दास, अजित आजाद, प्रवीण नारायण चौधरी आ अध्यक्षता केलैन्ह डॉ. नरेश झा। गणमान्य मनीषी लोकनि महाकविक तैल चित्र पर माल्यार्पण आ दीप प्रज्वलित कऽ समारोहक विधिवत शुभारंभ केलैन्ह।



एहि अवसर पर महाकवि लालदास पर केंद्रित स्मारिकाक विमोचन कएल गेल। वर्ष 2021क महाकवि पण्डित लालदास साहित्य गौरव सम्मान उमेश नारायण कर्ण 'कल्प कवि'केँ देल गेलैन्ह। एहि कड़ीमे महाकवि लालदास प्रतिभा सम्मान स्थानीय लालदास



प्लस टू विद्यालयक बोर्ड टॉपर सौरभ कुमार, श्वेता कुमारी आ अंजली कुमारीकेँ देल गेल।

समारोहमे आयोजित काव्य गोष्ठीमे नवरत्न कवि अपन काव्यक पाठ केलैन्ह, बाल गायिका विदिशा अपन मधुर गायनसँ श्रोताकेँ मुग्ध केलीह।



मुख्य अतिथि साहित्य डॉ. अशोक अविचल महाकवि पं. लालदासक व्यक्तित्व पर चर्चा करैत कहलैन्ह जे महाकवि अपन लेखनीसँ मैथिली भाषा साहित्यकेँ ऊँचाई देबामे सफल भेलाह। डॉ. अविचल साहित्य अकादमीकक कैलेंडरमे महाकविक नाम शामिल करबाक आश्वासन दैत कहलैन्ह जे ओ एहि दिशामे ओ सार्थक प्रयास करताह। एहि आयोजनमे परोपट्टाक कतेको गणमान्य व्यक्ति मौजूद छलाह।



'मिथिलांगन' पोथीक समीक्षा

पंडित लाल दास विशेषांक , मिथिलांगन के जे आयल हाथ।
शताब्दी वर्ष पर आलेख पढ़िक्य ,जनलहु लाल दास के खास।।

डिजाईन कव्वर पर देखलहु , लाल दास संग अनेको विद्वान।
मुकेश जीके सम्पादकीय पढ़ु, सब के सदा करथि सम्मान।।

तहसील झंझारपुर गाम खड़ौआ, पिताक नाम छल बचकन दास।
जाल्पादत्त दासक पौत्र आ, नाम पड़ल चूड़ामणि दास।।

लाल दास आ पंडित के उपाधि, देने छलैथ दरभंगा महाराज।
कतोको ग्रंथ के कयलनि रचना, सहजहि पुर्ण करथि सब काज।।

लय कान्ह पर बोझ परिवारक, घरक छलाह जेष्ठ संतान।
विवाहक सन 1870 छल, फागुन कृष्ण तृतीया सब जान।।

दायित्व सदा अपन बुझलनि, पेशकार स एक अलग पहचान।
रचना मे नहि सानी हुनकर, धौत आ पंडित के मिलल सम्मान।।

सबसे अलग संयोग ई देखु, जन्म विवाह आ वैकुण्ठ के वास।
सबटा तृतीया दिन रैब छल, 1856 1870 चाहे 1921 के बात।।

खबर एक सँ एक छपल अछि, एहि विशेषांक के नाम रहत ।
जा धरि रहय धरा पर सुर्यचांद, लाल दासक सम्मान रहत।।

रौद रहय कि बहय बसात, नहि पत्रिका के कोनो हानी छै।
एक सँ एक पद्य श्री रचना,मिथिलांगन के नहि कोनो सानी छै।।

आशीष सदा रहय लाल दासक, सब मिली करि हुनक सम्मान।
लिखलक "राजीव" ई दु पाँति, पढ़ि मिथिलांगन लाल दास विशेषांक

राजीव कमल
कोलकाता

प्रणय मल्लिककेँ मैजिक बुक ऑफ रिकॉर्ड



मैजिक बुक ऑफ रिकॉर्ड द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण अओर राजनितिक क्षेत्रमे उलेखनीय कार्यक लेल नेशनल पुरस्कार देल गेल जैत अछि। वर्ष 2021 लेल ई पुरस्कार सामाजिक कार्यक लेल नोनदरही, मधुबनी निवासी 20 वर्षीय प्रणय कुमार मल्लिककेँ देल गेल। ओ स्वच्छ भारत अभियानक प्रति लोक सबकेँ जागरूक करैत गली-मोहल्ला जा कऽ नालीक सफाई करैत छैथ आ घरक छत वा कोनो आन जगह पर जमा पानिक प्रति लोकेँ जागरूक करैत छथि, संगहिं सहयोगीक संगे प्रत्येक रविदिन कऽ एकटा पेड़ लगाबैत छथि। एहि क्रममे ओ सैकड़ो पेड़ लगा आ लगवा चुकल छथि। ओ दिल्ली सरकारक मेंटरशिप प्रोग्रामक तहत सेहो अपना भूमिका निभाबैत छथि।

मिथिलांगन हिनक सफल आ सुखद भविष्यक कामना करैत अछि।



ज्ञानवर्द्धक मुदा मुद्रित अंकक प्रतिक्षा

संपादकजी

मिथिलांगनक लाल दास अंकक PDF प्राप्त भेल, अति ज्ञानवर्द्धक आ जन उपयोगी लागल। पण्डित लाल दास जीक बारेमे विशेष जानकारी मिलल। पिछला किछु अंकक गुणवत्ता आ संकलन अति विशेष अओर संग्रहणीय अछि, मुदा ओ e-magazine रूपेँ प्राप्त भेलासँ संग्रहणीय नञि भऽ पाबी रहल अछि। आग्रह जे मिथिलांगन ओहि अंक सभहक प्रकाशन अंक शीघ्रे करय। पत्रिकामे सभ वर्गक विशेष ध्यान राखल गेल अछि, खास कऽ बच्चा सभ लेल ई नीक लागल। पत्रिकामे समाहित रचना आ ओकर प्रस्तुति उत्कृष्ट लागल। आशा अछि भविष्योमे मिथिलांगन संग्रहणीय विशेषांक केर प्रकाशन करैत रहत।

शुभकामनाक संग शुभाशीष

बिजेन्द्र नारायण दत्त
झरिया, धनबाद

श्रद्धेय पाठकगण,

अपनेक पत्र, मेल अओर व्हाट्स अप द्वारा मिलल सुझाव आ विचार पत्रिकाकेँ उत्कृष्ठ बनेबामे सदति सहायक होएत रहल अछि। जकर परिणामस्वरूप अहाँ सभहक सुझाव पर कतेको नव स्तम्भक शुरूआत कएल गेल अछि, आशा अछि अहाँ सबकेँ नीक लागत। ओहि स्तम्भ सभ पर अपन विचार आ टिप्पणीसँ पत्रिकाक सम्पादक मण्डलकेँ अवश्य अवगत कराबी, जाहिसँ एहिमे छुटि गेल त्रुटिकेँ अगिला अंकमे सुधारल जा सकय।

कोनो विषय पर अपनेक कि सोचब वा कहब अछि, एहि प्रसंग पर अपन मंतव्य, अपन विचारसँ अन्य पाठक लोकनिक ज्ञान अओर जानकारीकेँ बढ़यबाक लेल शीघ्र कागत-कलम उठाऊ आ अपन विचार लिखि मिथिलांगनकेँ **संपादक, मिथिलांगन, ए-40, कैलाश अपार्टमेन्ट, प्लाट नं-2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078** भेजु। अपने लोकनि अपन मंतव्य केँ मिथिलांगनक **ई-मेलः mithilangan@gmail.com** पर सेहो प्रेषित कऽ सकैत छी।

नव स्तम्भमे अपन भागिदारी बनाबय लेल ओहि स्तम्भसँ जुड़ल प्रश्न, जिज्ञासा मंतव्यकेँ लिखि भेजु, बीछल मंतव्यकेँ मिथिलांगनक आगामी अंकमे अपनेक नामक संग प्रकाशित कएल जाएत।

- संपादक

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक पत्रिका

नई दिल्ली सँ प्रकाशित तथा सम्पूर्ण भारत आ नेपाल मे वितरित

दाम - एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्र

मिथिलांगनक पोथी प्रकाशन

मैथिली शुभ संस्कार-विधि विधान व गीत (तृतीय संस्करण)	(ब्रह्मदेव लाल दास एवं विन्देश्वरी दास)	200/- टाका मात्र
वट सावित्रि व्रत कथा	(ब्रह्मदेव लाल दास)	20/- टाका मात्र
मैथिली गीता	(डॉ. जनक किशोर लाल दास)	205/- टाका मात्र
गिरिजा गीत	(गिरिजा देवी)	75/- टाका मात्र
अहिं जकाँ	(बिनीता मल्लिक)	75/- टाका मात्र
मोहपाश	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	150/- टाका मात्र
आउ बढ़ि चलू	(विनिता मल्लिक)	200/- टाका मात्र
कोईली	(डॉ. उमा शंकर चौधरी)	150/- टाका मात्र
नागफांस (अंग्रेजी)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)(अनुवाद : राजीव वर्मा एवं जया वर्मा)	200/- टाका मात्र
नागफांस (मैथिली)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	200/- टाका मात्र

अपन प्रति प्राप्त करबाक लेल सम्पर्क करू :



मिथिलांगन (पंजी.)
ए–40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं0 2,
सेक्टर 4, द्वारका, नई दिल्ली–110078
फोन : 9312301160, 9810450229
ई–मेल : mithilangan@gmail.com



मिथिलांगनक पोथी प्रकाशन



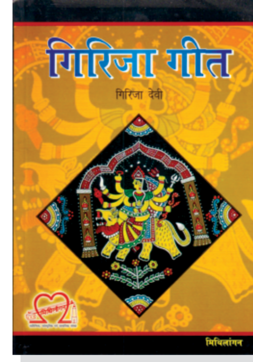
200/- टाका मात्र



20/- टाका मात्र



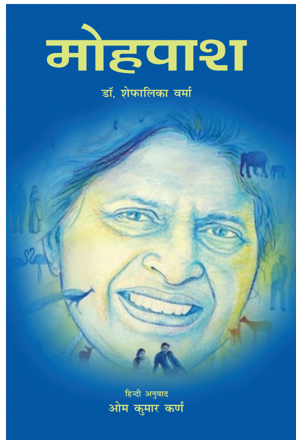
205/- टाका मात्र



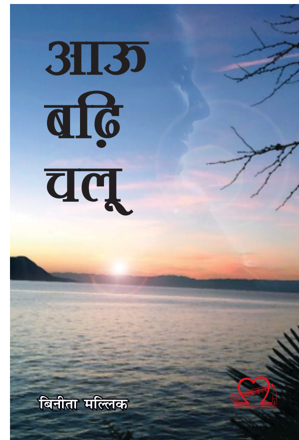
75/- टाका मात्र



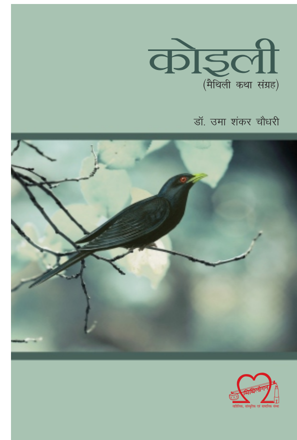
75/- टाका मात्र



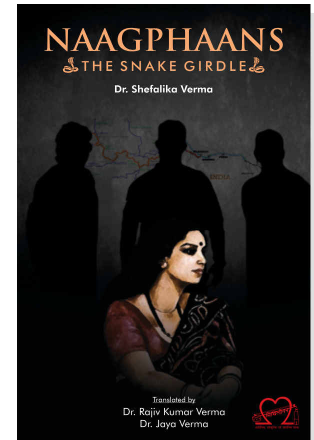
150/- टाका मात्र



200/- टाका मात्र



150/- टाका मात्र



200/- टाका मात्र

नई दिल्ली सँ प्रकाशित अओर सम्पूर्ण भारत आ नेपाल मे वितरित

अपन प्रति प्राप्त करबाक लेल सम्पर्क करू

मिथिलांगन (पंजी.)

ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4,
द्वारका, नई दिल्ली-110078
सम्पर्कः 9312301160, 9810450229
ईमेल : mithilangan@gmail.com, वेबसाइट : www.mithilangan.org

नोटः 'मैथिल शुभ संस्कार - विधि विधान व गीत' www.amazon.com पर उपलब्ध अछि

Published and Printed by Abhay Kumar Lal Das for and on behalf of Mithilangan, A-40, Kailash Apartment, Plot No.-2, Sector-4, Dwarka, New Delhi-110078, at Anand Sons (India), C-87, Ganesh Nagar (Pandav Nagar Complex), Delhi-92